रेज़गारी का रोज़गार

सम्पादक :
शिवरतन थानवी
पुरुषोत्तमलाल तिवारी

राजस्थान प्रकाशन
त्रिपोलिया बाजार, जयपुर-२ (राज.)

प्रकाशक
जे. एल. गुप्ता
राजस्थान प्रकाशन
त्रिपोलिया बाजार
जयपुर-२

शिक्षा विभाग, राजस्थान के लिए
शिक्षक दिवस (५ सितम्बर १९७३)
के अवसर पर प्रकाशित

आवरण
करुणा निधान

मुद्रक :
मॉडर्न प्रिन्टर्स
गोधों का रास्ता,
जयपुर-3

वर्ष : १९७३

मूल्य : छह रुपये

आमुख

राष्ट्र-निर्माण के कार्यों में शिक्षक की भूमिका निर्विवाद है। समाज शिक्षक के प्रति अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करने की दृष्टि से प्रति वर्ष शिक्षक-दिवस का आयोजन करता है।

शिक्षा विभाग, राजस्थान इस अवसर पर शिक्षकों का सम्मान कर उन्हें राज्य स्तर पर पुरस्कृत करता है और उनके कार्यकारी जीवन के सृजनशील क्षणों को संकलनों के रूप में प्रकाशित करता है।

इन संकलनों में शिक्षकों की क्रियाशील अनुभूतियाँ, साहित्य-सर्जना के अखिल भारतीय प्रवाह में उनकी संवेदनशीलता तथा उनकी सामाजिक-सांस्कृतिक समकालीनता के स्वर मुखरित होते हैं, और उन्हें यहाँ एकत्र रूप में देखा और पढ़ा जा सकता है।

सन् १९६७ से विभागीय प्रबंध द्वारा सृजनशील शिक्षकों की रचनाओं के प्रकाशन का जो उपक्रम एक संग्रह के प्रकाशन से आरम्भ किया गया था वह अब प्रति वर्ष पांच प्रकाशनों की सीमा तक पहुँचा है। प्रसन्नता की बात है कि भारत भर में इस अनूठी प्रकाशन योजना का स्वागत हुआ है और उससे सृजनशील शिक्षकों की अभिरुचियों को प्रखरतर होने की प्रेरणा मिली है।

सन् १९७२ तक इस प्रकाशन-क्रम में २१ पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं और इस माला में इस वर्ष ये पांच प्रकाशन और सम्मिलित किए जा रहे हैं:

१ झिलमिलाता गुलमोहर (कहानी-संग्रह)
२ धूप के पखेरू (कविता-संग्रह)
३ रेजगारी का रोजगार (रंगमंचीय एकांकी-संग्रह)
४ अस्तित्व की खोज (विविध रचना-संग्रह)
५ जूनी बेली . नुवी बेली (राजस्थानी रचना-संग्रह)

राजस्थान के उत्साही प्रकाशकों ने इस योजना में आरम्भ से ही पूरा-पूरा सहयोग प्रदान किया है। इसी प्रकार शिक्षकों ने भी अपनी रचनाएँ भेजकर विभाग को सहयोग प्रदान किया है। इसके लिए लेखक तथा प्रकाशक दोनों ही धन्यवाद के पात्र हैं।

आशा है ये प्रकाशन लोकप्रिय होंगे और सृजनशील शिक्षक अधिकाधिक संख्या में अपने प्रकाशनों के सहयोगी बनेंगे।

र० नि० कूमट
निदेशक

शिक्षक दिवस, १९७३

शिक्षक-दिवस प्रकाशन-योजना के अन्तर्गत शिक्षा विभाग, राजस्थान के लिए राजस्थान के सृजनशील शिक्षकों का यह पहला एकाकी-संकलन है।

काफी समय से अनुभव किया जा रहा था कि विद्यालयों में विभिन्न अवसरों के लिए समुपयुक्त तथा अभिनेय एकाकी मिल नही पाते, मिलते हैं तो केवल कलात्मक या पठनीय कोटि के या फिर उच्चस्तरीय मंच तकनीकी की मांग करने वाले। यह भी ध्यान में लाया गया कि अनेक सृजनशील शिक्षक उत्तम कोटि के सामयिक एकाकी रचते हैं और उन्हें विद्यालयीय मंच पर सफलतापूर्वक अभिनीत भी कराते हैं।

अत. यह संकल्प किया गया कि ऐसे प्रयासों को प्रकाशित रूप दिया जाए।

तदनुसार शिक्षक दिवस प्रकाशन-क्रम में रगमचीय एकांकियों के संकलन का प्रकाशन इस वर्ष में जोड़ा गया है और "रेजगारी का रोजगार" नाम से यह इस क्रम की पहली भेंट विद्यालयों को प्रस्तुत की जा रही है।

इस संकलन में सन्निवेश की दृष्टि यह रही है कि एकाकी आवश्यकता की पूर्ति भी कर सकें और सृजनशील शिक्षकों को इस दिशा में अपनी प्रतिभा को निखारने की उत्प्रेरणा भी दे सकें। अवसरों, प्रश्नों, समस्याओं और परिप्रेक्ष्यों को परिभाषित नहीं किया जा सकता, न ही सृजनशीलता को सूत्रबद्ध किया जा सकता है। तथापि अनुकूलता और समीचीनता की बाध्यताओं से इन्कार भी नही किया जा सकता।

शेष, क्या कुछ और कैसा बन पड़ा है, इसका निर्णय तो समीक्षकों पर ही छोड़ दें।

बीकानेर :
शिक्षक-दिवस, १९७३

सम्पादक

वीणा गुप्ता (श्रीमती)	गांव से दूर	9
नरेन्द्र चतुर्वेदी	और तूफान थम गया	17
कुन्दनसिंह सजल	दहेज	28
चन्द्रमोहन 'हिमकर'	विकास के पथ पर	39
मोहन पुरोहित 'त्यागी'	जैसा करोगे, वैसा पाओगे	55
अमोलकचन्द जांगिड	जलता चिराग	61
राधामोहन जोशी	जय-यात्रा	72
नाथूलाल चोरडिया	चुनौती	89
मण्डलदत्त व्यास	देश का मोह	102
रमेश भारद्वाज	हड़ताल	105
सुरेन्द्र 'अचल'	सेना और साहस	115
देवप्रकाश कौशिक	अन्तिम बलिदान	122
श्रीमती कमला भार्गव	सुबह का भूला	129
गणपतलाल शर्मा	हम सब एक हैं	137
	जनता-पुलिस एकता : जिन्दाबाद	146
	बड़ा कौन ?	153
दीनदयाल गोयल	तार	161

प्रहसन

त्रिलोक गोयल	रेजगारी का रोजगार	169
कुन्दनसिंह सजल	महंगी गजल	175
सत्यप्रभा गोस्वामी	पड़ोसी या मुसीबत ?	180
कुमारी रमा जैन	आज की कक्षा	186
हेमप्रभा जोशी	समझौता	193

गाँव से दूर

वीणा गुप्त

पात्र :

बनवारी लाल : किसी गाँव का एक किसान।
हीरा : बनवारी लाल का लड़का।
सोमू : हीरा का बचपन का साथी।
रामी : हीरा की छोटी बहन।
पण्डित जी : गाँव का ढोंगी पण्डित।

(बनवारी लाल बड़ा खुश है और घर की दहलीज में चारपाई पर बैं हुक्का गुड़गुड़ा रहा है।)

बनवारी : रामी... ... ओ बेटी रामी।

रामी : (अन्दर से ही) हाँ बापू........

बनवारी : अरी अन्दर से ही हाँ हाँ करती रहेगी या बाहर आकर मेरी ब भी सुनेगी !

रामी : आती हूँ ....

बनवारी : क्या आती हूँ। इतनी देर तो लगा दी। अभी तक नहीं आई अरी सुन तो .. जाने क्या कर रही है ? इस छोकरी को भी प नही आज क्या हो गया ? कुछ सुनती ही नहीं।

रामी : (हाथ पोंछते हुए आती है) बोल क्या है ?

बनवारी : क्या बोलूँ, कुछ समझ में नही आता ?

रामी : तो मुझे बुलाया क्यो था ? (जाने लगती है)

बनवारी : भो हो .. मेरी बात तो सुन ले।

गाँव से दूर

वीणा गुप्ता

* * *

पात्र :

बनवारी लाल	: किसी गाँव का एक किसान।
हीरा	: बनवारी लाल का लड़का।
सोनू	: हीरा का बचपन का साथी।
रामी	: हीरा की छोटी बहन।
पण्डित जी	: गाँव का ढोंगी पण्डित।

(बनवारी लाल बड़ा खुश है और घर की दहलीज में चारपाई पर बैठा हुक्का गुड़गुड़ा रहा है।)

बनवारी : रामी...... ओ बेटी रामी।

रामी : (अन्दर से ही) हाँ बापू.......

बनवारी : अरी अन्दर से ही हाँ हाँ करती रहेगी या बाहर आकर मेरी बात भी सुनेगी !

रामी : आती हूँ ......

बनवारी : क्या आती हूँ। इतनी देर तो लगा दी। अभी तक नहीं आई। अरी सुन तो .. जाने क्या कर रही है ? इस छोकरी को भी पता नही आज क्या हो गया ? कुछ सुनती ही नहीं।

रामी : (हाथ पोंछते हुए आती है) बोल क्या है ?

बनवारी : क्या बोलूँ, कुछ समझ में नहीं आता ?

रामी : तो मुझे बुलाया क्यों था ? (जाने लगती है)

बनवारी : ओ हो .. मेरी बात तो सुन ले।

रामी : बोल ना फिर। कहता तो कुछ है नहीं। बस घड़ी-घड़ी आवाज देता रहता है।

बनवारी : अरी कुछ ध्यान भी है तुझे कि आज तेरा भाई अपनी पढ़ाई पूरी करके शहर से आने वाला है।

रामी : हाँ हाँ बापू पूरा ध्यान है। इसी वास्ते तो आज तड़के ही उठी थी। सारे घर में बुहारी-झाड़ी देकर साफ-सुथरा किया है। हीरा के वास्ते दलिया भी बना कर रख दिया है।

बनवारी : पर तूने आने में इतनी देरी क्यों कर दी?

रामी : तुझ को बिना बात की जल्दी पड़ी रहती है बापू! पिछवाड़े की सफाई कर रही थी, और फिर तेरे आवाज देते ही तो आ गई। अब यहाँ आई तो तू कुछ कहता ही नहीं।

बनवारी : अरी हाँ.... मैंने तुझे इस वास्ते बुलाया था कि हीरा के वास्ते मक्खन भी निकाला या नहीं। तुझे मालूम है ना, उसे मक्खन बड़ा अच्छा लगता है।

रामी : हाँ हाँ पता है। इसी वास्ते आज सवेरे ही दही बिलोकर मक्खन निकाल दिया था।
(रामी जाती है)

बनवारी : अरी रामी.... सुन तो।

रामी : (आते हुए) बोल अब क्या हुआ?

बनवारी : मैं कह रहा था.......

रामी : (बीच में ही टोकते हुए) कुछ कहना तो है नहीं... बस मैं कह रहा था करता रहेगा।

बनवारी : तू कुछ कहने दे तो कहूँ ना। बीच में तो खुद बोल पड़ती है।

रामी : अच्छा अब बीच में नहीं बोलूँगी। पर जो कहना है एक ही बार में कह दे। फिर घड़ी-घड़ी आवाज मत देना।

बनवारी : हाँ हाँ... तेरी चिड़चिड़ में तो मैं भूल ही गया किस वास्ते आवाज दी थी।

रामी : अच्छा तो मैं जाती हूँ तू याद करता रह। जब याद आ जाए तो बुला लेना।

बनवारी : अरे ठहर तो ......हाँ याद आया कि हीरा के वास्ते छाछ तो रख दी है ना?

बनवारी : ठीक है, पर इतना लम्बा-चौड़ा लेक्चर देने की कौनसी जरूरत पड़ गई थी ?

रामो : लो अब बात भी बताओ तो तुम्हें लेक्चर लगता है। अच्छा अब मैं जाऊँ ?

बनवारी : हाँ जा।··· पर देख थोड़ा तम्बाकू देती जा।

रामो : देख बापू ···अब जो कुछ भी माँगना है, माँग ले फिर घड़ी-घड़ी आवाज देगा तो नहीं आऊँगी।

बनवारी : और कुछ नहीं माँगना। हाँ एक लोटा पानी जरूर रख जा। नहीं तो कहेगी फिर आवाज देता है (हँसने लगता है।)

रामो : ओ ··· बापू·······

बनवारी : (हँसते हुए) इस छोकरी को तो आज कितनी खुशी है ? पागल हुई जा रही है। क्यों न हो ? आखिर इसका भाई जो पढ़ाई पूरी करके शहर से आ रहा है।

सोमू : (प्रवेश करके) कह बनवारी काका आज तो बड़ा खुश होगा तू ?

बनवारी : अरे वाह, यह भी कोई कहने की बात है ? आज मेरा बेटा आ रहा है तो खुश नहीं हूँगा ?

सोमू : हाँ काका वो तो आ ही रहा है। पर काका वो आयेगा कितने बजे ? मुझे तो गाड़ी का वक्त भी नहीं पता, नहीं तो स्टेशन पर ही उसे जा पकड़ता।

बनवारी : अरे गाड़ी के वक्त का क्या है ? वो तो किसी से भी पूछ लेना। हर कोई बता देगा। अपने गाँव में कौनसी सौ पचास गाड़ी आती हैं। एक शहर से आती है और वही शहर चली जाती है।

सोमू : काका मुझे सब मालूम है। मैं तो वैसे ही तेरे से मजाक कर रहा था। मेरा दोस्त शहर से आने वाला हो और मुझे गाड़ी के वक्त ।, भला ऐसा हो सकता है क्या ? गाड़ी आने का

वाली है। मैं तो स्टेशन पर ही जा रहा था। सोचा तुझे बताता जाऊँ।

बनवारी . हाँ हाँ वो तो पता ही होना चाहिये। अरे तुझे नहीं पता होगा तो किसे पता होगा? बचपन के दोस्त जो हो तुम। याद है, दोनों मेरे कन्धों पर बैठकर स्कूल जाया करते थे तुम?

सोमू हाँ काका सब याद है। तेरे कन्धों पर बैठकर भैंसें चराने भी जाया करते थे। यह तो किस्मत की बात है कि चार साल से मैं और हीरा साथ नहीं रहे वरना कोई दिन गुजरता था बिना मिले? चलो खैर अब तो साथ ही रहेगा।

बनवारी : हाँ हाँ अब तो तुम फिर से साथ ही रहोगे बेटा। फिर वही दिन होंगे। फिर भैंसें चराने जाना और खूब मन लगाकर खेती करना और अब तो हीरा खेती की पढ़ाई भी करके आ रहा है। पटवारी जी कहते थे–खेती की पढ़ाई करने से फसल दुगुनी होगी।

सोमू : हाँ काका जरूर होगी। अच्छा अब मैं स्टेशन पर जाऊँ?

बनवारी . जा बेटा जा। जल्दी से उसे लेकर आ और हाँ आते वक्त उस कालिया के तांगे में ही आना। सरपट दौड़ा आयेगा।

सोमू : अच्छा अच्छा, उसी के तांगे में आयेंगे। (सोमू जाता है और बनवारीलाल हुक्का गुड़गुड़ाने लगता है।)

बनवारी : यह सोमू भी एक ही लड़का है सारे गाँव में। हर किसी का दोस्त है। दुश्मनी तो इसने सीखी ही नहीं।

पण्डित : (प्रवेश करके) हरे राम हरे राम····किसकी दुश्मनी, कैसी दुश्मनी, कौनसी दुश्मनी, यह क्या दुश्मनी की बात कर रहा है बनवारी? तेरा बेटा शहर से आने वाला है। आज तो तुझे खुश होना चाहिये।

बनवारी : आओ पण्डित जी आओ····बैठो। कहो कैसे आना हुआ आज गरीब के घर?

पण्डित : हरे राम····हरे राम····तू और गरीब। मैं कहता हूँ बनवारी अगर तू भी गरीब है तो दुनिया में साहूकार है ही नहीं कोई।

बनवारी : क्यों मजाक करते हो पण्डित जी। मैं भला कहाँ का साहूकार था

गुजर हो जाती है आपके प्रताप से। नहीं तो कौन किसको पूछता है आजकल ! मेरे जैसे तो कीड़े मकौड़ों की गिनती में आते हैं।

पण्डित : हरे राम ...... हरे राम ...... कैसी बात करता है बनवारी। अरे तू अपनी जमीन को एक जमीन का टुकड़ा कह रहा है। मैं कहता हूँ बनवारी तेरी जमीन तो चाँदी उगलती है चाँदी। और अब तो तेरा बेटा खेती की पढ़ाई भी करके आ रहा है। जब पढ़ाई किया हुआ बेटा खेती करेगा तो तेरी जमीन चाँदी की जगह सोना उगला करेगी सोना !

बनवारी : हाँ पण्डित जी। इसी आस पर तो जी रहा था कि एक दिन हीरा पढ़-लिखकर आयेगा और यहाँ मेरे खेतों को सम्भाल लेगा। फिर वो जाने और उसका काम। मैं तो बस फिर राम का नाम लूँगा।

पण्डित : हाँ बनवारी अब तो तू आराम ही करना। बहुत कर दिया बेटे के वास्ते तो तूने। गाँव भर में धूम मची हुई है तेरे नाम की। जितना तूने अपने हीरा को पढ़ाया है उतना ... अपने बेटे को सारे गाँव में किसी ने नहीं पढ़ाया है।

(तभी सोमू एक बिस्तर सिर पर उठाये आता है।)

सोमू : ले काका। अब मुँह मीठा करवा दे तेरे बेटे को ले आया हूँ।

बनवारी : (खुशी से) क्या ... क्या कहा हीरा आ गया ? मेरा बेटा आ गया। कहाँ है ? कहाँ है रे वो ?

हीरा : (ट्रंक हाथ में उठाये प्रवेश करता है) हाँ बापू मैं आ गया हूँ। (पण्डित जी से) पण्डित जी राम राम।

पण्डित : जीते रहो बेटा। कहो पढ़ाई-लिखाई हो गई पूरी या अब भी कुछ बाकी है।

हीरा : नहीं पण्डित जी अब कुछ बाकी नहीं है। पढ़ाई तो पूरी हो गई। अब तो बस काम-धन्धा ही करना बाकी है।

सोमू : अच्छा हीरा मैं जरा घर पर होकर अभी आता हूँ। इतनी देर तू काका से बातचीत कर।

हीरा : पर जरा जल्दी आना।

सोमू : हाँ हाँ जल्दी आ जाऊँगा।

बनवारी : रामो अरे रामो। देख तो हीरा आ गया है। जल्दी से इसके

बाहर भागती आ । और हीरा के ढेर सारा सामान भी सम्भाल कर लाता जाता ।

रामी (भागते हुए खुशी से) क्या भैया…… भैया आ गया तू । कितने दिन लगा दिये तूने !

हीरा (रामी के सिर पर हाथ फेरते हुए) अरे पगली, मैं कोई सैर करने को गया नहीं था । पढ़ाई कर रहा था । पता है शहर की पढ़ाई कितनी मुश्किल है ?

बनवारी अरी तू यहीं खड़ी गप्प ही मारती रहेगी या इसको कुछ खाने-पीने को भी लाकर देगी ।

रामी : (चिढ़कर) मां तो गयी है बापू ! तू तो बेकार में शोर मचाता रहता है ।

बनवारी : हाँ हाँ मेरा तो दिमाग खराब हो गया है जो शोर मचाता रहता हूँ ।

हीरा . अरे-अरे तुम लोग क्यों झगड़ा करते हो ? बापू मैं सब कुछ खा-पी लूँगा । तू बिल्कुल भी फिक्र मत कर ।

(रामी अन्दर चली जाती है ।)

बनवारी : अब मुझे काहे की फिक्र करना है । अब तो आ गया है ना । बस सम्भाल अपने खेत-खलिहान । फिर तू जाने और तेरा काम ।

हीरा : क्या कहा ? खेत-खलिहान ?

बनवारी : क्यों ? उछल कर क्यों बोल रहा है ? मैंने कोई बुरी बात कह दी क्या ? अब तू खेत नहीं सम्भालेगा तो क्या मैं बूढ़ा ही सारी उम्र यहाँ पड़ा रहूँगा ?

हीरा : नहीं बापू यह बात नहीं है ।

बनवारी : फिर क्या बात है ?

हीरा : बापू मैंने इतनी पढ़ाई की है तो यहाँ खेतों में क्या करूँगा ? आखिर पढ़ने का फायदा ही क्या होगा, वहाँ मैं शहर में कोई अच्छी सी नौकरी कर लूँगा ।

बनवारी : क्या कहा……यहाँ क्या करेगा ? यहाँ क्या फायदा ? अरे मैं पूछता हूँ, तुझे यहाँ फायदा ही नजर नहीं आता क्या ? मैंने तो

हीरा : वो बात तो ठीक है बापू। पर यहाँ मेरा दिल नहीं लगेगा।

सोमू : (प्रवेश करके) अरे कौन कहता है यहाँ तेरा दिल नहीं लगेगा? भूल गया पहले कभी शहर जाना पड़ता था तो घण्टों रोता था। अब कहता है यहाँ तेरा दिल नहीं लगेगा।

हीरा : तब की बात और थी सोमू अब की बात और है।

सोमू : अरे हाँ जानता हूँ तब क्या बात थी और अब क्या बात है। यह क्यों नहीं कहता अब गाँव में रहकर काम-धाम नहीं होता। मेहनत से डर लगने लगा है।

बनवारी : हम यहाँ तेरे ऊपर क्या-क्या आस लगाये बैठे थे बेटा। पर तूने तो सब पर पानी फेर दिया।

हीरा : तुम लोग मेरी बात समझने की कोशिश तो करो। आखिर यहाँ रहकर मैं करूँगा भी क्या?

सोमू : देख हीरा तेरे जितना पढ़ा-लिखा तो नहीं हूँ। पर इतनी बात जरूर जानता हूँ कि तेरे जाने से काका और रामी के दिल जरूर टूट जायेंगे। भले ही तुझे खुशी होती हो। अगर तू अपनी खुशी की खातिर अपने बापू और छोटी बहन के दिल तोड़ सकता है तो अभी चला जा। चल मैं खुद तेरा सामान गाड़ी पर लेकर चलता हूँ।

बनवारी : नहीं बेटा नहीं। ऐसा गजब मत करना। मैं बूढ़ा तो बिन मौत ही मर जाऊँगा। इसी सहारे तो अब तक जिन्दा रहा कि आकर अपना काम संभालेगा और कुछ दिन आराम कर सकूँगा।

हीरा : पर बापू मेरा अब रहना मुश्किल है। मैं यहाँ गाँव में नहीं रह सकता।

सोमू : वाह रे जमाना। और पढ़ाओ काका इसको। तू तो बेटे को खेती की पढ़ाई करवा कर फसल अच्छी करना चाहता था ना। देख कैसी अच्छी फसल हो गई।

बनवारी : हाँ बेटा! अब अपनी किस्मत ही खोटी हो तो किससे कहूँ?

सोमू : अच्छा हीरा जा तू शहर में ही जाकर रह। पर जाने से पहले मुझे एक बात का जवाब देता जाना कि गाँव का हर लड़का तेरी तरह पढ़-लिखकर अपने खेतों को छोड़कर शहर में जा बसे

तो क्या होगा। कौन खेतो में हल चलायेगा, कौन पानी देगा और कौन अनाज पैदा करेगा ? फिर इस दुनिया का क्या होगा ?

हीरा : सोमू ·······

सोमू : पहले मेरी बात पूरी होने दे फिर बोलना जो भी बोलना चाहे। हाँ जब अनाज ही नही होगा तो दुनिया वाले खायेंगे क्या ? बस इतनी बात का जवाब दे दे और फिर जो करना चाहे बड़ी खुशी से कर।

हीरा : (आश्चर्य से) अरे सोमू ! तू इतना समझदार हो गया। मैं तो पढ़-लिख कर भी आज तक इतनी बड़ी बात नही कर पाया।

सोमू : तेरे जैसे जाने कितने ही गाँव वाले इसी तरह भटक जाते हैं, हीरा ! अब भी कुछ नही बिगड़ा। तूने इतनी पढ़ाई की तो उसका फायदा क्यों नही उठाता। तू अपने खेतों मे अपनी पढ़ाई को लगादे। जो कुछ सीखा है उसको काम में ला और फिर देखना तेरी फसल कितनी अच्छी होती है।

हीरा : सच सोमू आज तो मैं भटक गया था। तूने मेरी आँखें खोल दीं। मुझे माफ करदे बापू। शहर की चमक-दमक को देखकर मैं तो भूल ही गया था कि मैं एक किसान का बेटा हूँ और मेरा काम तो धरती माँ की सेवा करके उससे अनाज लेना है।

बनवारी : (खुशी से) सच····सच बेटा अब तू हमारे पास ही रहेगा ?

हीरा : हाँ बापू सच। मै यहीं रहूँगा और अपने खेतों की रखवाली करूँगा।

बनवारी : अरी रामी कहाँ····चली गई। ला····जल्दी से कुछ खाने को ला।

सोमू : अभी वक्त रहते तेरा दिमाग तो ठिकाने आ गया। अब जो कुछ तूने सीखा है, वह मुझे भी सिखा देना।

हीरा : अरे मेरा सीखा सिखाया तो सब बेकार है। आज से तो तू मेरा गुरु है।

रामी : (आकर) फिर गुरु-दक्षिणा भी देनी पड़ेगी भैया।

(सभी हँसते हैं)

और तूफान थम गया

नरेन्द्र चतुर्वेदी

* * *

पात्र परिचय

श्री शुक्ला	:		प्रौढ़ दम्पत्ति
श्रीमती शुक्ला	:		
संजय	:	आयु लगभग 16 वर्ष	श्री शुक्ला के पुत्र एवं पुत्री
आशा	:	आयु लगभग 15 वर्ष	
सोहन	:	आयु लगभग 14 वर्ष	घर का काम करने वाला नौकर

(राजू, राकेश, गौरव संजय के मित्र)

स्थान :

श्री शुक्ला की बैठक—बीच में सोफा रखा हुआ है। सामने दीवार पर महात्मा गांधी की तस्वीर लटक रही है। उधर ही दरवाजा है, जो अन्दर खुलता है, उस पर परदा टंगा हुआ है। दायीं ओर बायीं तरफ भी दरवाजे हैं, इन पर भी परदे टंगे हुए हैं। कोने में गोल मेज रखी है, जिस पर टेलीफोन रखा हुआ है, सोफे के साथ में छोटी टेबिल है, उस पर चाय के गन्दे प्याले रखे हुए हैं। ....टेलीफोन की घन्टी बजती है।

(पर्दा खुलता है)

(अन्दर का पर्दा हटाते हुए संजय का प्रवेश)

संजय : हलो ! हलो !! कौन, वर्मा अंकल........क्या पापा, यहाँ
हैं । बाहर गये हैं,....आउट....ऑफ सिटी,....नहीं अंकल....नहीं
शायद बाजार गये हैं, ...अंकल कार से गये हैं, ...
कह दूंगा ।

(फोन रखता

संजय : हूं, वर्मा अंकल,........पूछ रहे थे पापा हैं, पता नहीं पापा
कैसे-कैसे मित्र हैं ? उस दिन कैसे घूर रहे थे हम सबको,...
लाल गोल गोल आँखें, उफ इतनी... शराब,....और पापा हैं
घर पर आने से मना नहीं करते....कहते हैं....जाओ संजय
सोडे की दो बोतलें ले आओ,... नहीं नहीं, अब संजय नहीं
सोहन, सोहन........

(सोहन का प्रवे

संजय : देख, यह कमरा कितना गन्दा हो रहा है, साफ नहीं किया
तक, ये प्याले भी रात के रखे हुए हैं, पापा देखेंगे तो
जा उठा ले जा....।

(सोहन जाता

(काल बेल बजती है)

(बाहर से आवाजें आ रही हैं...संजय,....संजय,

(संजय दायें तरफ वाले दरवाजे पर जाता है)

संजय हलो, गौरव, अरे........राहू भी है । और मुदित भी,
आओ, बाहर क्यों खड़े हो ?

(सब का प्रवे

गौरव : तुम व्यस्त तो नहीं हो ?

संजय : कहो क्या बात है ?

गौरव . यही आज पिकनिक पर चलने के लिये सोच रहे हैं, राहू
फार्म पर चलने के लिए कह रहा है, सोचा तुमसे भी पू
तुम चाहो तो........।

संजय : अरे, इसमें पूछने की क्या बात है, तुम यह क्यों नहीं कहते
मैं भी चलूं, क्या मुझसे नाराज हो ? इतनी औपचारिकता
वह भी मुझसे, शायद तुम मुझ पर दोस्ती का हक नहीं रखते

राजू : नहीं भाई (कन्धे पर हाथ रखता है) तुम भी क्या सोच बैठे, ... भाई, हमने सोचा आज तुम्हारा कहीं खास प्रोग्राम हो,....... कहीं जाना हो। हमारा क्या हम तो मनमौजी हैं, इसलिए तो आये हैं, बताओ चल रहे हो न ठीक ग्यारह बजे मुदित के यहाँ आ जाना, साइकिलों पर चलेंगे।

मुदित : याद रहेगा न, ठीक ग्यारह बजे, ...मेरे यहाँ, ...सब वहीं पर ही इकट्ठे हो रहे हैं। . अच्छा चलें, औरों से भी कहना है,.... अच्छा, बॉय।

(सब जाते हैं)

संजय : (स्वगत) हूँ, अच्छी बात है।....दोस्त भी आते हैं, मुझसे दूर रह कर बात करना पसन्द करते हैं,....क्यों नहीं वे मुझ पर अधिकार रखकर कुछ कहते हैं,....ऐसा क्यों है सब मुझसे दूर ही दूर रहते हैं......क्यों नहीं कोई आकर कन्धे पर धौल लगाकर गले मिलता है, ...चिकोटी काटता है, . ओह, – संजय से सब दूर क्यों रहते हैं? (सिर पकड़ता है)

(आशा का प्रवेश बस्ता लिये)

आशा : अरे, संजय भइया, ...यह क्या हो रहा है (बस्ता रखती है)... आप इतने परेशान हैं, क्या मम्मी ने कुछ कह दिया है, या पापा ने........

संजय : (बीच में टोकते हुए)....आज तुम जल्दी आ गई?

आशा : आज डिबेट थी, जल्दी ही खतम हो गई, ...हाँ, तुम्हारी तबियत तो ठीक है?

संजय : तबियत तो ठीक है,....न किसी ने कुछ किया है, और न कहा ही है, पर बहुत कुछ हो गया है.. वर्मा अंकल का फोन आया था,.... पूछ रहे थे, पापा हैं, आज शायद फिर पार्टी हो?

आशा : (चौंकते हुए) क्या पार्टी,....हर पार्टी में हमारी आफत आ जाती है .. मम्मी आयी या नहीं?

संजय : अभी तो नहीं आयीं, आने ही वाली होंगी? अभी राजू, मुदित, गौरव आये थे। आज राजू के फार्म पर पिकनिक है मुझे बुलाने आये थे।

आशा : तो आप जा रहे हैं ?

संजय : (चौंककर) क्या कहा आप ? आशा, क्या तुम्हारी निगाह में पराया हूँ ?

आशा : सॉरी, तो तुम जा रहे हो ?

संजय : अभी सोचा नहीं, जाने की इच्छा है, पापा-मम्मी आ जाएँ उनसे पूछ कर जाऊँगा। अभी तो कोई यहां है नहीं, तुम गये तभी....मम्मी कालेज चली गयीं थीं और पापा भी कार निकल गये हैं।....(कुछ सोचता है)

आशा : फिर कुछ सोच रहे हो भइया, तुम्हारी यह आदत कब जाएगी क्या बात है ?

संजय : बात क्या होगी, क्या तुम्हें लगता है हम सचमुच घर में रह रहे

आशा : घर नहीं है तो क्या है यह भइया।

सजय : (तेज स्वर मे) घर,...चिड़ियाघर,....जहाँ हम पिंजड़े के पंछी हैं, इससे बढ़कर हमारा अस्तित्व नहीं है.. न हमे कोई चाहता है...न हम किसी को चाहते हैं,....पापा-ममी सब अपनी-अपनी दुनियां में खोये हुए हैं, हमसे किसी को कोई मतलब नहीं है... ममी को यही चिन्ता है सजय पढ़ा है या नही,...है आशा स्कूल....गयी या नही, ...और इससे भी अधिक है वह हमें मिला या नहीं....किसी को कोई चिन्ता नही है ?

आशा : (विस्मय से) क्या नही मिला हमें, सब तो हमारे पास है, बंगला है, फ्रिज है, कूलर है, कार है, भैया हमें देखकर लोग जलते हैं, मेरी सहेलियाँ कुढ़ती हैं मेरे कुरतो को देखकर, उनकी कढ़ाई देख कर, क्या नहीं है हमारे पास ?

संजय : यही तो मैं कह रहा हूं, बाहर सब हमे देखकर कुढ़ते हैं। भीतर हम कुढते हैं। न हम प्यार कर पाते हैं, न हमे कोई अपनापन दे पाता है, क्या आशा यह सच नही है, हमें कोई भी अपना नहीं समझता है।

आशा : भैया, क्या तुम यह ठीक कह रहे हो ? पापा हैं, ममी हैं, क्या वे अपने नही हैं, ममी जिसके लिए इतनी सुबह नौकरी करने जाती हैं, पापा किस लिये रात-दिन मारे-मारे फिरते हैं ?........

संजय : (बीच में टोकते हुए) अपने लिए आशा, अपने लिए, कोई किसी के लिए नहीं जीता. कभी वे दो घड़ी हमारे पास नहीं बैठते हैं ? उन्हें फ़ुरसत नहीं है। ममी की तनखा कितनी है, उनकी साड़ियाँ, मेकअप, पार्टियाँ ....कितना उनका है....और कितना हमारे लिये है....सारे दिन कितना वो अपने लिए जीती हैं, कितना हमारे लिये..........

आशा : भैया चुप करो,......प्लीज भैया, आज तुम्हें क्या हो गया है ? पापा सुन लेंगे तो,......... ...

संजय तो क्या, जितनी पापा की कमाई है वह तो पेट्रोल के खर्च और सिगरेट, शराब, पार्टियों में ही निकल जाती है। तुम्हें यह सब अच्छा लगता है ?

आशा . भैया, बस चुप करो,........

संजय : (बीच में टोकते हुए) नहीं आशा, मुझे बोल लेने दो। मेरे दोस्त मुझसे ईर्ष्या नहीं रखते, वरन् नफ़रत करते हैं। बाहर जाता हूँ, लोग अजीब से इशारे करते हैं। मेरी नस-नस में आग लग जाती है। मैं बर्दाश्त नहीं कर पाता हूँ। आशा, सच हम चिड़ियाघर में नहीं रह रहे हैं। हमारा यह जिस्म, यह खून,.... ये कपड़े, ये हमारी किताबें, आशा पापा-ममी की कमाई की नहीं हैं, लोग कहते हैं, हमारे पापा कफ़न तक नहीं छोड़ सकते.... इन इशारों में इन गन्दी गालियों में कब तक हम आज़ाद घूम सकते हैं, अपने-आपको भीतर से खतम कर दें तब जरूर,.... पर संजय के लिये यह मुश्किल है।

आशा . उफ़ ! (सर पकड़ कर बैठ जाती है)........ भैया चुप करो, (उसके ओठों पर अपना हाथ रख देती है)। यह क्या हो गया है तुमको ? आख़िर तुम चाहते क्या हो ? क्या हम कंगालों की तरह सड़कों पर भीख माँगते फिरें, क्या तुम खुश नहीं हो इन सबसे.... आख़िर यह सब हमारे लिये ही तो हो रहा है। .... पापा जब सुनेंगे तब उन्हें क्या अच्छा लगेगा ?

संजय . (तेज़ी से) क्या कभी उन्होंने सोचा है कि हमें क्या अच्छा लगता है ? मुझे इन सबसे चिढ़ हो गई है। मैं अब नहीं रह सकता इस

घर में। .... ये दीवारें ...लगता है एक दिन मुझे जला कर राख कर देंगी ? .... मैं अब मुक्त होना चाहता हूँ, पंख फैला कर हवा मे उड़ना चाहता हूँ.... ।

किन....किन ...किन....किन (टैलीफोन की घन्टी बजती है)

संजय — कौन ममी, क्या आप देर से आयेंगी, पार्टी है, ममी आज राजू के फार्म पर पिकनिक है, सब जा रहे हैं, मैं भी जाना चाहता हूँ, नहीं क्यों ....वे लोग अच्छे नहीं हैं ? ..आपको उनके साथ मेरा रहना पसन्द नहीं है ....ममी प्लीज .... हूँ, फोन रख दिया ....।

(फोन रख देता है)

आशा — क्या हुआ ममी ने मना कर दिया ?

संजय — हूँ, अब संजय जरूर जाएगा, मैं अब तैयार होता हूँ।

(अन्दर वाले दरवाजे की तरफ जाता है)

आशा : भइया, खाना ।

संजय — (जाते हुए) तुम खा लेना।

आशा — ममी नाराज होंगी।

संजय — (तेज स्वर मे) होने दो।

(अन्दर जाता है)

(दायीं तरफ वाले दरवाजे से श्री शुक्ला का आगमन)

शुक्ला — संजय, संजय, कहाँ गया ? .... (सिगरेट सुलगाता है, सोफे पर बैठता है)

(आशा का अन्दर से आना)

शुक्ला : अरे संजय कहाँ है ?

आशा — अन्दर है, तैयार हो रहे हैं, आज राजू के फार्म पर पिकनिक है, वहीं जा रहे हैं।

शुक्ला — उन सबों के साथ, कितनी बार कहा है, गंवारों की सोहबत अच्छी नहीं होती। .... अब इसको हॉस्टल में भेजना ही होगा। बुलाना इसको, ... हूँ, वर्मा का फोन तो नहीं आया था ?

आशा : सजय ने रिसीव किया था। ....आते मिलने के लिये कहा है।

(शुक्ला उठता है, टेलीफोन के पास तक आता है)

शुक्ला हलो, सेवन-थ्री-टू, वर्मा क्या हाल है, ...हाँ तुम्हारा फोन आया था, क्या सौदा पट गया है, ... मुबारक हो .... कितना रहा.... दस परसन्ट .... यह कम है यार .... थोड़ा और बढ़वाओ वरना सिह कौनसा बुरा है जो बारह तो वह भी दे रहा है....। हूँ, तो फिर आ रहे हो, शाम को .... हाँ, स्कॉच है, इम्पोर्टेड है, ... फिर आ रहे हो, शाम को.... जरूर इन्तजार रहेगा।

(फोन रखता है)

शुक्ला तुम्हारी ममी नही आई।

आशा ममी का फोन आया था, वहीं रुक गई हैं, आज वहाँ कोई पार्टी है, देर से आएँगी।

(सजय का प्रवेश)

शुक्ला (उसे देखता है) (सजय सफेद पाजामा व कुरता पाँव में चप्पल डाले खड़ा है) यह क्या फकीरो का बाना बना रखा है, एँ ! तुम कहाँ जा रहे हो ? ड्राइवर से कह दो वह तुम्हे वर्मा के यहाँ छोड़ आवेगा। सुनो सुनील, मीनाक्षी से मिल आओ। आशा को भी ले जाओ। वो लोग कब से बुला रहे हैं।

आशा नही पापा नही, मैं नहीं जाऊँगी

शुक्ला क्यो ?

(आशा चुप रह जाती है)

शुक्ला तुम जानते हो, ... यह सब मुझे पसन्द नही है, ... जैसा कह दिया है, वैसा करो। सोहन,.... सोहन।

(सोहन का प्रवेश)

शुक्ला ड्राइवर से कहो वो कहीं जाए नही, सजय, आशा को वर्मा साहब के यहाँ जाना है।

संजय . पर पापा मुझे राजू के काम पर जाना है, मैंने उससे कह दिया है,

शुक्ला . और जो मैने कहा है ?

संजय : उनके यहां फिर हो आयेंगे ।

शुक्ला : अभी क्यों नहीं ? तुम गवारों के साथ रहना पसन्द करते हो, उ हमें पसन्द नहीं है ।

संजय : लेकिन पापा ।......

शुक्ला : (बीच में टोकते हुए) चुप रहो, ...बदतमीज,....गेट आउट—
(संजय दायीं तरफ वाले दरवाजे की ओर बढ़ता है)

शुक्ला : कहाँ जा रहे हो ?
(संजय फिर आगे बढ़ता है)

शुक्ला : उन गँवारों के साथ घूमने जा रहे हो...चलो अन्दर बैठकर पढ़ो।
(सजय फिर भी आगे बढ़ता है)

शुक्ला : मैं,....मैं कह रहा हूँ, संजय, मत जाओ, (क्रोध में काँपता है) अच्छा नही होगा ।
(आशा आगे बढ़कर उसका हाथ पकड़ती है)
(सजय हाथ छिटका कर बाहर जाना चाहता है)

शुक्ला : संजय (तेजी से बढ़ता है, दायें हाथ का थप्पड़ संजय के लगता है)

संजय : मार लीजिए.......और मार लीजिए, मैं फिर भी जाऊँगा ।
(रोता है)
(बायी तरफ वाले दरवाजे से श्रीमती शुक्ला का प्रवेश)

श्रीमती शुक्ला : अरे, यह क्या हो रहा है, (शुक्ला की तरफ देखते हुए) क्योंजी क्या फिर बदतमीजी की है ?

शुक्ला : मना करते हुए भी जा रहा है उन कमीनों के साथ, कहता है जाऊँगा, इसकी यह हिम्मत. टाँग तोड़ दूँगा, समझता क्या है, चल अन्दर ?

श्रीमती शुक्ला : (चीखते हुए) जब मैंने मना कर दिया था, तुम फिर चल दिये संजय,.......यह तो ठीक नहीं है,...... पापा से भी बदतमीजी के रहे हो ....।

संजय : (रोते हुए तेज स्वर में) जाऊँगा,....जाऊँगा....सौ बार जाऊँगा... देखता हूँ कौन रोकता है ? (वह तेजी से चलता है)

आशा : भैया, मान जाओ ।

शुक्ला : छोड़ दे इसको, जाने दे, देखें कहाँ जाता है, आज इसकी टाँग तोड़ दूँगा।

श्रीमती शुक्ला : संजय बेटा, मान जाओ, जिद नहीं करते ?....यू आर ए गुड बॉय..।

संजय : कौन कहता है मैं अच्छा हूँ, अच्छे हैं ...आप, ...मैं तो बुरा हूँ,.... नहीं रहूँगा अब यहाँ,...आप अच्छे हैं,....वर्मा अंकल अच्छे हैं, ... सिंह... साहब भी अच्छे हैं, सब अच्छे हैं। अब नहीं लाऊँगा सोडा आपके लिए....यहाँ कौन है मेरा ? ममी-पापा रात दिन घर से बाहर रहते हैं, दोस्तों से मिल नहीं सकते, वे गँवार हैं। जिनसे आप चाहें उन्हीं से मिलें। वर्मा अंकल कितने अच्छे हैं, .. क्यों ममी, जब उन्होंने उस रात आपके कन्धे मे हाथ रखा था तब आप ही ने कहा था, कि इस नीच को घर मे कभी नहीं आने देंगी। याद है ? बाहर जाता हूँ सब मुझसे नफरत करते हैं, घर में आपके लिए बोझ हूँ। आपके घूमने-फिरने मे हम तकलीफ देते है। कभी आपने सोचा भी है कि हम....भी कुछ चाहते हैं।....मैं जा रहा हूँ, ममी, कभी नहीं आऊँगा, मैं नीच हूँ....गंवार हूँ....मैं कभी आपको अपना मुँह भी नहीं दिखाऊँगा।

(दरवाजे की तरफ बढ़ता है)

आशा : भैया ठहरो, ...मैं भी तुम्हारे साथ चलती हूँ। मेरा भी यहाँ दम घुट रहा है। जहाँ तुम रहोगे, वहीं पर हो मैं भी रहूँगी।

(ममी पापा की तरफ देखती है)

श्रीमती शुक्ला आशा, संजय यह सब क्या हो रहा है ? तुम देख रहे हो ? (शुक्ला की तरफ देखकर) यह सब क्या हो रहा है ? क्या इसी दिन के लिए हमने सोचा था ? हम अपनी खातिर जिन्दा हैं, यह तुम अपनी ममी से कह रहे हो ?....और आशा तुम भी इसकी बोली बोल रही हो ?

आशा : ममी कोई किसी की बोली नहीं बोलता, जो सच है वही कह रही हूँ, ममी यहाँ दम घुटता है। हमें अपनापन नहीं मिलता, हम ममी पापा चाहते हैं, अजनबी मालिक नहीं। कई दिन से आपसे कहने की इच्छा थी, पर डर था ...आप नाराज हो जाएँगी।....पर आज आपने सब सुन ही लिया है,....हम चलते हैं....चलो भैया।

शुक्ला : ऐं, (चीखकर) ...अच्छा तुम जा रहे हो ? जाओ, दुनियाँ देखी है, देखता हूँ, कहाँ जाते हो ? लौटकर आओगे तो घर के दरवाजे बन्द मिलेंगे, समझे !

श्रीमती शुक्ला : यह आप क्या कह रहे हैं ? संजय, आशा रुको, मेरी बात सुनो (वह बढ़कर दरवाजे की तरफ बढ़ती है) मेरी बात तो सुनो......

[नेपथ्य में–

समवेत स्वर : *नहीं ममी, नहीं जब पापा ने घर से निकाल दिया है तब हम घर में कैसे आ सकते हैं ?*

श्रीमती शुक्ला : बेटे बात सुनो,...ऐसा नहीं करते....पापा अभी नाराज हैं, तो चलो मैं भी तुम्हारे साथ चलती हूँ।

समवेत स्वर : ममी आप ?

श्रीमती शुक्ला : हाँ जब तुम नहीं मानते, तो मैं भी तुम्हारे साथ चलती हूँ, जहाँ तुम ले चलोगे, वहाँ मैं भी तुम्हारे साथ चलूँगी ।...चलो।]

शुक्ला : ओह, यह सब क्या हो रहा है, नहीं ऐसा नहीं होगा। यह मेरी ज्यादती है। मैंने कभी अपने बच्चों को निगाह से नहीं सोचा।... वर्मा का उस दिन का बिहेवियर,....बच्चे नाराज हैं....इतने कि अब मुझसे भी नाराज हो गये हैं, तो मैं क्या करूँ ? (सर पकड़ता है) तो मैं बच्चों के सामने झुक जाऊँ,....नहीं कभी नहीं,... (घूमता है), नहीं शुक्ला नहीं, तुम्हारा अहंकार तुम्हारे परिवार को तहस-नहस कर देगा,....रोको....अभी समय है (सर पकड़कर बैठ जाता है) सोहन,...सोहन....

(सोहन का प्रवेश)

सोहन : *साहब !*

शुक्ला : मालकिन हैं, देख किधर गईं ?

(सोहन बाजार जाता है और क्षण भर बाद अन्दर आता है)

सोहन : जी, वो बाहर के लॉन में हैं।

शुक्ला : उन्हें बुला, कहना मैं बुला रहा हूँ।

(सोहन बाहर जाता है)

शुक्ला मुझसे तो इनकी मम्मी समझदार हैं, ...अभी तक समझा रही हैं,... और मैं,....ई मुझे भी बदलना होगा....।

(श्रीमती शुक्ला का प्रवेश-संजय और आशा भी आते है)

शुक्ला सुनो मैं भी चल रहा हूँ।

श्रीमती शुक्ला (किंचित विस्मय से) कहाँ ?

शुक्ला : (हँसते हुए) राजू के फार्म पर चलो हम सब पिकनिक कर आते है। क्यों संजय ठीक है न ? (कन्धे पर हाथ रखता है) नाराज हो ?

संजय . पापा, (रोता है, और शुक्ला के पांव मे गिर जाता है)

शुक्ला रो मत बेटे, जो कुछ हुआ है, अच्छा ही हुआ है। तूफान आया और चला गया, हम हिलकर फिर मजबूती से सम्हल गये। आओ, चलें....सोहन जरा ड्राइवर को तो बुलाना।

(पर्दा गिर जाता है)

●●●

दहेज

कुन्दनसिंह सज

* *

पात्र परिचय

शशि भूषण :
प्रभाकर :
दिवाकर :
रमाशंकर . [कालेज के विद्यार्थी]
उमा शंकर :
दिनेश :

सेठ करोड़ी मल—नगर का प्रधान मक्खीचूस, उमाशंकर का पिता।

लाला भगवानदास—नगर का धनाढ्य व्यक्ति।

नौकर—लाला भगवानदास का नौकर।

(कालेज की कैन्टीन में पाँच विद्यार्थी बैठे चाय-पान कर रहे हैं। आपस में बातें चल रही हैं। समय कार्तिक मध्याह्न का है)।

शशि : यार हमने प्रोफेसरों के पीरियड में मिस्टर शर्मा को ऐसा छकाया कि सारी सिट्टी-पिट्टी भूल गये।

प्रभाकर : यार, इसमें बेचारे को बेकार गुस्सा चढ़ाया है। शर्मा है भी बड़ा कायर, लेकिन यार दिमाग का सीधा भी है।

दिवाकर : कुछ भी कहो यार, प्रिंसिपल साहब अपने विषय के मास्टर ही हैं, यह तो मानना पड़ेगा।

रमा शंकर : भाई अग्रवाल, तुम भी तो कुछ बोलो। आज उदास क्यों हो, क्या बात है ? इस तरह चेहरे पर हवाइयाँ क्यों उड़ रही हैं।

शशि : हाँ, यार, अग्रवाल, लगता है मिस कान्ता से आज तुम्हारी मुलाकात नहीं हुई है।

प्रभाकर : या आपस में कुछ कहा सुनी हो गई है ? तुम तो यार, हम सबसे अधिक वाचाल हो और जब बोलते हो तो किसी की सुनते ही नहीं। आज क्या तुम्हारा मौन व्रत है ?

रमा शंकर : अरे भैया, कान्ता जैसी सुशील और सुन्दर जीवन साथी पाने के लिए मिस्टर अग्रवाल मौन व्रत क्या एकादशी, अमावस, पूनम, मंगलवार सबके व्रत रख सकता है और आज का यह मौन व्रत शायद इसकी शुरुआत है।

उमा शंकर : भाई लोगों, क्यों जले पर नमक छिड़कते हो। मैं तो कल से वैसे ही बुझा-बुझा हूँ। लगता है, चारों ओर अँधेरा छाया है और मुझे उसमें से पथ नहीं सूझ रहा है।

दिवाकर : आखिर बात क्या है ? पहेली बुझाना छोड़कर कुछ कहो भी। क्या कान्ता के पिता ने इन्कार कर दिया।

उमा शंकर : आप जानते हैं, हम पाँचों साथी कालिज के वे विद्यार्थी हैं जो कालिज के वार्षिकोत्सव पर पूरे कालिज स्टाफ व सहपाठियों के समक्ष यह संकल्प ले चुके हैं कि बिना एक पैसा दहेज लिए हम अपनी शादियाँ करेंगे और अपने से गरीब घरों की लड़कियों को जीवन साथी बनाकर, उनका उद्धार करेंगे।

शशि : हम उस बात को भूले थोड़े ही हैं। हम तो हर प्रकार का त्याग करके इस संकल्प को निभाएँगे और तुम तो हमारे इस अभियान के नेता हो। क्या हममें से किसी पर शक है, तुमको ?

सब : (एक साथ) बोलो, बोलो।

उमा शंकर : आप लोगों पर शक का तो कोई कारण ही नहीं है। नाव मेरी भँवर में फँस गई है। कल नगर के प्रतिष्ठित सेठ लाला भगवानदास

मेरे पिताजी के पास आये थे और मेरी मंगनी की बातचीत तय हो गई है। मेरी छोटी बहिन ने बताया था कि पचास हजार दहेज के ठहराये गये हैं और इसी दीपावली पर पिताजी शगुन लेने वाले हैं।

प्रभाकर : लाला भगवानदास की लड़की ! आ हा हा क्या कहने हैं। रंग तो कौवे के पंखों जैसा चमकता हुआ, श्याम। शरीर में तो वह दुर्गा को भी मात करती है। चलती है, तो धरती काँपती है। मैंने क[हा] मुबारक हो मिस्टर अग्रवाल।

उमा शंकर : प्रभाकर, यह हँसी का समय नहीं है। मेरे तो सिर पर बला है और तुम्हें दिल्लगी सूझ रही है। आप लोगों की क्या राय मैं आपसे मशविरा करना चाहता हूँ।

रमा शंकर . मिस्टर अग्रवाल, मेरी राय तो यह है कि हमें अपने संकल्प अटल रहना चाहिए।

उमा शंकर : संकल्प पर अटल तो मैं इतना हूँ कि चाहे मुझे उमर कुँवारा रहना पड़े, चाहे घर छोड़ना पड़े, मैं किसी धनवान की से विवाह सूत्र में नहीं बँध सकता।

शशि : पहले तुम अपने माता-पिता से इस सम्बन्ध में मशविरा करो। तुम्हारे संकल्प का उन्हें पता न हो। तुम यदि उन्हें ठंडे मस्ति से सोचने पर बाध्य करो तब शायद उनके दिमाग में बात बैठ जा

उमा शंकर : यार, मैं माताजी को तो किसी भी कीमत पर मना लूँगा, ले मेरे पिताजी को जानते हो ? नगर के नामी मक्खीचूस हैं, मन पचास हजार कैसे छोड़ेंगे ?

दिवाकर : क्या वे बेटे से अधिक धन को महत्व देंगे और तुम तो अकेले हो उनके, तुम्हारा संकल्प तो वे निभा देंगे।

उमा शंकर : पुत्र मैं उनका एक हूँ, यह तो ठीक है लेकिन वे तो कहा कर कि जिसके अधिक बेटे होते हैं, उसको तो स्वयं लक्ष्मी खोजती आती है। मुझे भरोसा नहीं कि पचास हजार या मुझे छोड़ प्रश्न पर वे मुझे रखेंगे।

प्रभाकर . मेरी राय है मिस्टर अग्रवाल, आज पहले तुम अपने पिताजी से करो। उन्हें वास्तविकता करने की कोशिश करो और कल हम

लाला भगवानदास के पास चलें और उन्हे भी समझाएँ। तुम्हारे पिताजी नहीं मानेंगे तो अपन लालाजी को अवश्य मना लेंगे।

रमा शंकर : हाँ मैं भी प्रभाकर की बात का समर्थन करता हूँ।

शशि . इन दोनों उपायों से भी यह बात न बनी तो हम कुछ और उपाय करेंगे, अभी दीपावली के काफी दिन पड़े हैं।

उमा शंकर आप सभी की यह राय है तो आज सन्ध्या में अपने पिताजी से अपना सकल्प बयान करूँगा और स्पष्ट इन्कार हो जाऊँगा।

रमा शंकर चलो पीरियड लग चुका है, कक्षा में चलें (सभी जाते हैं)

स्थान—सेठ करोड़ीमल का मकान।

समय—रात के नौ बजे।

(सेठ जी खाना खाकर अपने शयन-कक्ष मे पलग पर लेटे है। सेठ जी कमरे की छत की ओर, कुछ सोचने से देख रहे है। उमा शंकर आकर दरवाजे पर खड़ा होता है)

सेठ : (दरवाजे की ओर देखकर) कौन है ? जो है सो (अन्दाज से) उमा ···

उमा . हाँ पिताजी !

सेठ . आओ, जो है सो, अन्दर आ जाओ। क्या बात है ?

(उमा शकर अदर आ जाता है)

सेठ (पलग की ओर इशारा करके) बैठो जो है मो (उमा पैताने बैठता। है) कहो तुम्हारी पढ़ाई तो ठीक चल रही है। जो है सो, कल तुम्हारे विज्ञान के प्रोफेसर दूकान पर आये थे, वे कह रहे थे कि आपका लडका तो जो है सो ऐसा मेधावी है कि उसके इन्जिनियर बनने में तो कोई शक ही नहीं है। जो है सो आप उसे खूब पढ़ाना आप उसे पढाने मे जितने पैसे लगाओगे, जो है सो उसके दुगने तो वह इन्जिनियर बनकर एक वर्ष मे कमा लेगा।

उमा : आपको तो गर्व होना चाहिए पिताजी कि आपका पुत्र ऐसा होनहार है।

सेठ : जो है सो गर्व, गर्व की क्या बात पूछते हो बेटा। तुम्हारे गुणों की चर्चा सुनकर तो जो है सो मेरी छाती फूल जाती है। तुम्हारे गुणो

की चर्चा तो नगर में जो है सो राजा भोज की कहानियों की तरह फैली है। कल लाला भगवानदास अपनी लड़की का रिश्ता, जो है सो तुम्हारे साथ लेकर आए थे। मैंने जो है सो उन्हें बहुत इन्कार किया कि अभी लड़का पढ़ रहा है। पूरा पढ़-लिख लेने दो जो है सो आपका ही है किन्तु मेरे बिना कहे ही जो है सो उन्होंने कहा 'पचास हज़ार दहेज में नकद दूंगा।' तुम्हारी मां से पूछा तो जो है सो उसने भी हामी भरदी और मैंने भी लाला को स्वीकृति दे दी जो है सो।

उमा : पिताजी मैं इसी प्रसंग में आपसे बात करने आया हूं।

सेठ : निःसंकोच बात करो जो है सो। बेटा, मैं पुराने विचारों का जरूर हूं जो है सो लेकिन इतना अधिक दकियानूस नहीं हूं। तुम शायद भगवानदास की लड़की के विषय में कुछ कहना चाहोगे, जो है सो। देखो बेटा, जो है सो मनुष्यों में तो केवल दो ही रंग मिलेंगे, जो है सो गोरा या काला।

उमा : नहीं पिताजी, न मुझे लड़की के सम्बन्ध में कुछ कहना है और न उसके रंग के विषय में।

सेठ : तुम जानते हो जो है सो भगवानदास नगर का सबसे धनी व्यक्ति है। अरे यदि वह अपने चंगुल में जो है सो फँसता है तो बेटा, हम मालामाल हो जाएँगे और उसके तो एक ही लड़की है, जो है सो।

उमा : पिताजी, मैं अपने पुरुषार्थ पर भरोसा रखने वाला हूं। मैं यह पसन्द नहीं करता कि आप किसी से भीख माँगें।

सेठ : अरे जो है सो मैंने थोड़े ही कहा था कि दहेज में हम पचास हज़ार नकद लेंगे। उसने खुद ही, जो है सो देने को कहा है।

उमा : नहीं पिताजी, लाला मुझे आपसे, पचास हजार का टुकड़ा फेंककर नहीं खरीद सकता।

सेठ : बेटा, जो है सो तुम कैसी बात कर रहे हो ? मैंने भी तो जो है सो तुम्हारी बहिनों की शादी में कुछ ना कुछ दहेज दिया है।

उमा : पिताजी, मैं इस दहेज प्रथा को ही बंद करना चाहता हूं। आपने मुझे पैदा किया है, आपको पूरा हक है, आप मुझे बाजार में खड़ा करके बेच दीजिये शायद एक लाख में मैं बिक जाऊँगा और आप सहज ही लखपति बनने का अवसर पा जाएँगे।

सेठ : तू कैसी मूर्खतापूर्ण बातें कर रहा है, जो है सो। क्या मैंने तुझे इतना इसीलिए पढ़ाया है कि तेरे रिश्ते पर, जो है सो एक पैसा भी न लूँगा, इसका निर्णय तुझ पर छोड़ दूँ।

उमा : देखिए पिताजी, मैं सारी कॉलिज के सामने संकल्प कर चुका हूँ कि अपनी शादी मे एक पाई भी दहेज को न लेने दूँगा।

सेठ . अच्छा, जो है सो मैं तेरी बात मान लेता हूँ। लाला से हम दहेज में कुछ भी तय नही करेंगे। लेकिन शादी पर, जो हं सो, वह कुछ भी देगा, उसे लेने से इन्कार नही करेंगे।

उमा . लेकिन पिताजी, दूसरा सकल्प यह है कि शादी करूँगा तो किसी गरीब की लड़की से।

सेठ · अरे नालायक, जो है सो क्यों मेरी नाक उड़ाने पर उतारू हो रहा है। क्यों मेरे सपनों को जो है सो उजाड़ने चला है। देख बेटा, हमारे कुल की जो है सो यह परम्परा है कि जो कुछ बड़े बूढ़े तय कर दें, उसे छोटों को मानना पड़ता है।

उमा : पिताजी, अब वह जमाना लद चुका है। यह बीसवी सदी है, इसमें सारे सामाजिक मूल्य व मापदण्ड बदले जाएँगे।

सेठ : और यह शुरुआत, जो है सो मेरे ही घर से होगी, क्यों न बेटा?

उमा · ऐसा ही समझ लीजिए पिताजी।

सेठ : यदि यही बात है, तो जो है सो मेरी बात भी कान खोलकर सुनले। तूने इस रिश्ते से इन्कार किया तो जो है सो न मैं तेरा बाप हूँ और न तू मेरा बेटा और इस घर में जो है सो तेरे लिए कोई जगह नहीं है। तेरा पढ़ना-लिखना भी बन्द।

उमा : यह सब मैंने पहले ही सोच लिया है पिताजी और कान्ता को बता भी दिया है कि हम दोनों को शादी करके जीवन क्षेत्र में अकेले जूझना है।

सेठ : कौन कान्ता, जो है सो। जरा मुझे भी तो बता, तूने अगर कोई लड़की पसन्द करली है जो है सो, तो मैं इन्कार थोड़े ही करता हूँ।

उमा : वही लाला भगवानदास के चौकीदार की लड़की कान्ता, जो मेरे साथ पढ़ती है।

सेठ : हे भगवान, जो है सो यह मैं क्या सुन रहा हूँ ? अबे गधे जो है सो मुझे क्यों मिट्टी में मिलाने पर उतारू हो रहा है। क्यों मेरी इज्जत की नीलामी बोल रहा है। जा निकल जा मेरे घर से जो है सो, अभी, इसी समय (उठकर हाथ पकड़कर बाहर निकालने लगता है।

उमा जो आज्ञा पिताजी, प्रणाम (चला जाता है)

स्थान—लाला भगवानदास की फैक्टरी का आफिस

समय—सुबह के ग्यारह बजे

(लाला भगवानदास आफिस में बैठे फैक्टरी के कुछ कागजात देख रहे हैं। उमा शंकर अपने चारों साथियों के साथ आता है)

उमा (दरवाजे पर से) क्या मैं अन्दर आ सकता हूँ।

लाला . कौन है ? राम भरोसे।

उमा श्री, मैं सेठ करोड़ीमल का पुत्र उमाशंकर.........

लाला (बीच में) अरे उमा, राम भरोसे आओ बेटा, अन्दर आ जाओ राम भरोसे।

उमा : (साथियों से) चलो, आओ (सभी मुसकुराते हैं)

लाला · (एक से अधिक आवाजें सुनकर) आ जाइये, आप सभी लोग राम भरोसे अन्दर आ जाइये।

पाँचों : (अन्दर प्रवेश कर एक साथ) नमस्कार लाला जी।

लाला : जीते रहो, रामभरोसे जीते रहो (कुर्सियों की ओर इशारा करते हुए), आप लोग बैठिये, रामभरोसे, खड़े क्यों हैं ? (सबके बैठ जाने पर लालाजी 'कॉल बैल' बजाते हैं। चपरासी अन्दर आकर सलाम करता है)

लाला . देखो, मोहन, रामभरोसे, चाय और कुछ खाने को भेज दो।

उमा रहने दीजिए, हम तो अभी नाश्ता करके आये हैं।

लाला बेटा, रामभरोसे, यह भी तुम्हारा ही घर है। इसे दूसरा क्यों समझते हो ?

उमा : देखिये लालाजी, आप तो मुझे शर्मिन्दा कर रहे हैं।

(वार्तालाप के बीच में लाला भगवानदास का पुत्र दिनेश आता है और उमाशंकर को कहता है)

दिनेश : (आकर) नमस्ते साथियो।

सब : नमस्ते दिनेश बाबू।

(दिनेश एक कुर्सी पर बैठ जाता है। चपरासी चाय तथा प्लेटों में कुछ खाने की सामग्री लेकर आता है। दिनेश उठकर सभी के लिए चाय बनाने लगता है एवं प्लेटों में नाश्ता लगाता है। सभी चाय नाश्ता करते हैं।)

उमा : (चाय का कप व प्लेट लालाजी की ओर बढ़ाकर) आप लीजिए चाचाजी।

लाला : अरे नहीं बेटा, रामभरोसे, मैं तो कुछ भी न लूँगा।

शशि : नहीं चाचाजी, हमारा साथ तो देना ही पड़ेगा।

रमाशंकर : नहीं तो, हम भी कुछ भी नहीं खाएंगे।

लाला : (हँसकर) अच्छा, रामभरोसे तुम्हारी जिद ही है तो मैं चाय लेता हूँ।

(सब नाश्ता करते हैं। बीच-बीच में चाय नाश्ते की तारीफ भी करते जाते हैं। दिनेश बीच में सबको पुनः चाय के लिए पूछता है। सभी के नाश्ता कर चुकने के बाद बातों का सिलसिला फिर शुरू होता है।)

लाला : अब बताओ बेटा उमा, रामभरोसे, कैसे साथियों की फौज लेकर मुझ पर चढ़ाई बोली है (सुनकर सभी हसते हैं)।

उमा : चाचाजी, बात ऐसी है कि आपने पिताजी से मेरे सम्बन्ध की बात-चीत की है तथा पिताजी दीपावली पर शगुन लेने जा रहे हैं। इसी सन्दर्भ मे आपसे कुछ प्रार्थना करने आया हूँ।

लाला : देखो, रामभरोसे मैंने तुम्हारे पिताजी की इच्छा जानते हुए पचास हजार की बात कही थी, किंतु रामभरोसे वह भी शायद उनको कम लगा होगा। इसलिए उन्होंने रामभरोसे तुम्हें मेरे पास भेजा है। बोलो रामभरोसे और कितना दहेज वे माँगते हैं।

उमा : देखिये, कल रात से मैं घर से निर्वासित हो गया हूँ। अब उस घर मे मेरे लिए कोई जगह नही है। आप जानते हैं कि मेरे पिताजी तो नगर के सबसे बड़े मक्खीचूस हैं।

लाला : (बीच मे) मैं वही तो कह रहा हूँ, रामभरोसे और कितना दहेज वे माँगते हैं?

उमा . आप मेरी बात तो सुन लीजिए, आप बीच-बीच में माँगने की बात कहते हैं। हमें क्या आपने भिखारी समझा है (उत्तेजित होकर) मैं आपसे यह कहने आया हूँ कि मुझे आपकी लड़की से रिश्ता मंजूर नहीं है।

लाला अरे, तुम तो रामभरोसे, बिना काम गुस्सा करते हो। माँगना कहने से मेरा मतलब रामभरोसे तुम्हें भिखारी समझने से नहीं है। आखिर तुम यह रिश्ता, रामभरोसे क्यों नहीं मंजूर करते हो?

उमा देखिये, हमारे कॉलिज मे हमने एक कमेटी का गठन किया है 'दहेज विरोधी अभियान कमेटी'। मैं उस कमेटी का चेयरमैन हूं। ये चारों (शशि, रमा, प्रभाकर व दिवाकर की ओर इशारा करके) आप जानते हैं, नगर के प्रतिष्ठित व्यक्तियो के पुत्र हैं। हम पाँचों ने कॉलिज के वार्षिक उत्सव पर संकल्प लिया था कि हम अपने विवाह मे एक पैसा दहेज नही लेंगे।

प्रभाकर . दिनेश बाबू, उमा का रिश्ता तय करने से पूर्व क्या आपने चाचाजी को यह बात नहीं बताई थी?

दिनेश पिताजी, मैंने आपको कहा तो था कि उमाशंकर इस रिश्ते को स्वीकार नहीं करेगा।

लाला मैं समझा था, रामभरोसे की बात इतनी नहीं बढ़ेगी। उमाशंकर रामभरोसे अपने पिताजी का कहना मान लेगा। तो उमाशंकर रामभरोसे अपने पिताजी का कहना मान लेगा। तो उमाशंकर हम दहेज तय नहीं करेंगे, वैसे ही विवाह देंगे रामभरोसे।

उमा लेकिन चाचाजी, हमारी दूसरी प्रतिज्ञा यह है कि हम किसी गरीब की लड़की का उद्धार करेंगे।

दिनेश भाई उमाशंकर, मैं क्षमा चाहूंगा। उस दिन तो मेरी आँखों पर पर्दा पड़ा हुआ था। मैं समझता था, आप सभी भावुक हैं और आपका यह संकल्प शायद निभेगा नहीं किन्तु आज मेरी आँखें खुल गईं। मैं भी आज से आपके अभियान में शामिल हूं तथा अपने पिताजी के सामने संकल्प लेता हूं कि अपने विवाह में एक पैसा दहेज न लेते हुए तथा किसी गरीब की लड़की से शादी करूंगा।

पाँचों : हम तुम्हारा स्वागत करते हैं दिनेश।

लाला : (बिगड़कर) दिनेश, रामभरोसे तूने भी भावुकता मे यह क्या कर डाला। अरे तुम्हारा रिश्ता तो रामभरोसे मैं जिले के एम. पी. की लड़की से तय कर चुका हूँ जो दिल्ली विश्वविद्यालय में पढ रही है, रामभरोसे।

दिनेश नही पिताजी, मैं भी किसी गरीब माँ बाप की लड़की से विवाह करूँगा ताकि गरीबों का भी उद्धार हो।

लाला . उमाशंकर, बेटा तुमने यहाँ आकर रामभरोसे, मुझे दो तरफ से नुकसान पहुँचाया है। एक तो रामभरोसे मेरी लड़की का रिश्ता अस्वीकार करके। दूसरा रामभरोसे मेरे लड़के को संकल्प कराके।

उमा . चाचाजी, हम तो आपको भी संकल्प करवाना चाहेंगे।

लाला . वह क्या रामभरोसे ?

उमा यही कि आप अपनी लड़की का विवाह किसी गरीब लड़के से करेंगे ताकि उसका घर भी आपके बराबर का हो जावे।

दिनेश मैं भी इसका समर्थन करता हूँ।

सभी हम इनका समर्थन करते हैं।

लाला : यदि मैं रामभरोसे संकल्प नहीं लूँ तो ?

शशि . तो हम यहीं भूख हड़ताल पर बैठ जायेंगे।

उमा . देखिए आप पढ़े-लिखे हैं, प्रभावशाली व्यक्ति हैं नगर के। यदि आप संकल्प ले लेते हैं तो अपने बराबर वालों को समझाकर, उनके जीवन को मोड़ दे सकते हैं। हमें थोड़ी दिक्कत आएगी। आप नहीं मानेंगे तो शशि ने हथियार बता ही दिया।

लाला : मुझे कुछ सोचने का समय दोगे या नहीं रामभरोसे।

प्रभाकर हम खूब सोच समझकर आए हैं। आपको समय देकर हम प्रस्ताव को नीरस नहीं होने देंगे।

दिनेश · पिताजी, कर डालिए ना संकल्प, क्योंकि हमें अभियान में बुजुर्गों का भी साथ चाहिए।

उमा : आप मेरी बात तो सुन लीजिए, आप बीच-बीच में माँगने की ब
कहते हैं। हमें क्या आपने भिखारी समझा है (उत्तेजित होक
मैं आपसे यह कहने आया हूँ कि मुझे आपकी लड़की से रिश्ता म
नहीं है।

लाला : अरे, तुम तो रामभरोसे, बिना काम गुस्सा करते हो। माँगना कह
से मेरा मतलब रामभरोसे तुम्हे भिखारी समझने से नहीं है
आखिर तुम यह रिश्ता, रामभरोसे क्यों नहीं मंजूर करते हो ?

उमा देखिये, हमारे कॉलिज मे हमने एक कमेटी का गठन किया है 'दहे
विरोधी अभियान कमेटी'। मैं उस कमेटी का चेयरमैन हूं।
चारो (शशि, रमा, प्रभाकर व दिवाकर की ओर इशारा करके
आप जानते हैं, नगर के प्रतिष्ठित व्यक्तियों के पुत्र हैं। हम पाँचों
कॉलिज के वार्षिक उत्सव पर संकल्प लिया था कि हम अपने विवा
में एक पैसा दहेज नहीं लेंगे।

प्रभाकर : दिनेश बाबू, उमा का रिश्ता तय करने से पूर्व क्या आपने चाचाज
को यह बात नहीं बताई थी ?

दिनेश : पिताजी, मैंने आपको कहा तो था कि उमाशंकर इस रिश्ते क
स्वीकार नहीं करेगा।

लाला मैं समझा था, रामभरोसे की बात इतनी नहीं बढ़ेगी। उमाशंक
रामभरोसे अपने पिताजी का कहना मान लेगा। तो उमाशंकर हम
रामभरोसे अपने पिताजी का कहना मान लेगा। तो उमाशंकर हम
दहेज तय नहीं करेंगे, वैसे ही विवाह देंगे रामभरोसे।

उमा लेकिन चाचाजी, हमारी दूसरी प्रतिज्ञा यह है कि हम किसी गरीब
की लड़की का उद्धार करेंगे।

दिनेश : भाई उमाशंकर, मैं क्षमा चाहता। उस दिन तो मेरी आँखों पर पर्द
पड़ा हुआ था। मैं समझता था, आप सभी भावुक हैं और आपके
यह संकल्प स्पष्ट निभेगा नहीं किन्तु आज मेरी आँखें खुल गई हैं।
मैं भी आज से आपके अभियान में शामिल हूं तथा अपने पिताजी
के सामने मैं यह संकल्प लेता हूँ कि अपने विवाह में एक पैसा भी
दहेज न लेते हुए तथा किसी गरीब की लड़की से शादी करूँगा।

पाँचों : हम तुम्हारा स्वागत करते है दिनेश।

लाला : (बिगड़कर) दिनेश, रामभरोसे तूने भी भावुकता में यह क्या कर डाला। अरे तुम्हारा रिश्ता तो रामभरोसे मैं जिले के एम. पी. की लड़की से तय कर चुका हूँ जो दिल्ली विश्वविद्यालय में पढ़ रही है, रामभरोसे।

दिनेश : नहीं पिताजी, मैं भी किसी गरीब माँ बाप की लड़की से विवाह करूँगा ताकि गरीबो का भी उद्धार हो।

लाला : उमाशंकर, बेटा तुमने यहाँ आकर रामभरोसे, मुझे दो तरफ से नुकसान पहुँचाया है। एक तो रामभरोसे मेरी लड़की का रिश्ता अस्वीकार करके। दूसरा रामभरोसे मेरे लड़के को संकल्प कराके।

उमा : चाचाजी, हम तो आपको भी संकल्प करवाना चाहेंगे।

लाला : वह क्या रामभरोसे ?

उमा : यही कि आप अपनी लड़की का विवाह किसी गरीब लड़के से करेंगे ताकि उसका घर भी आपके बराबर का हो जावे।

दिनेश : मैं भी इसका समर्थन करता हूँ।

सभी : हम इनका समर्थन करते है।

लाला : यदि मैं रामभरोसे संकल्प नहीं लूँ तो ?

शशि : तो हम यहीं भूख हड़ताल पर बैठ जायेंगे।

उमा : देखिए आप पढ़े-लिखे हैं, प्रभावशाली व्यक्ति हैं नगर के। यदि आप संकल्प ले लेते हैं तो अपने बराबर वालों को समझाकर, उनके जीवन को मोड़ दे सकते हैं। हमें थोड़ी दिक्कत आएगी। आप नहीं मानेंगे तो शशि ने हथियार बना ही दिया।

लाला : मुझे कुछ सोचने का समय दोगे या नहीं रामभरोसे।

प्रभाकर : हम खूब सोच समझकर आए हैं। आपको समय देकर हम प्रस्ताव को नीरस नहीं होने देंगे।

दिनेश : पिताजी, कर डालिए ना संकल्प, क्योंकि हमें अभियान में बुजुर्गों का भी साथ चाहिए।

लाला : अच्छा, यदि तुम लोगों की रामभरोसे, यही राय है तो मैं तुम लोगों के समक्ष रामभरोसे सकल्प लेता हूँ कि अपनी लड़की का रिश्ता किसी गरीब से करूँगा।

उमा : बहुत-बहुत धन्यवाद चाचाजी।

रमाशंकर : आपने हमारी बात रखी, इसके लिए हम हृदय से आपके आभारी हैं।

उमा : (उठकर) अच्छा चाचाजी अब आज्ञा दीजिए।

लाला : अरे बैठो भी, रामभरोसे चाय का एक दौर और चले।

उमा : नहीं चाचाजी, अब तो हम इजाजत ही चाहेंगे।

सब : अब तो आप आज्ञा ही दीजिए।

लाला : तुम्हारी मर्जी रामभरोसे (सभी प्रणाम करके जाते हैं)।

(पटाक्षेप)

विकास के पथ पर

चन्द्रमोहन 'हिमकर'

* * *

पात्र-परिचय

सुरेश कुमार		कांग्रेसी
राजेन्द्र कुमार	:	समाजवादी
कमलेश	.	साम्यवादी
बलवीरसिंह	:	जागीरदार
करोड़ीमल	:	सेठ
शिवकुमार		प्रोजेक्ट ऑफिसर
लिंकन		एक अमरीकन
अरविन्द कुमार	·	पत्रकार
विमला कुमारी	.	ग्रामसेविका
डाकिया	:	सरकारी नौकर

(छात्र एवं छात्राओं द्वारा रंगमंच पर मंगलगान)

स्वतन्त्रता में खिल जायेगा, जीवन पुष्प हमारा,
विकसित और प्रफुल्लित होगा, सारा राष्ट्र हमारा ॥
प्रजातन्त्र के नवीन युग में सुख-सम्पत्ति सब पावें,
दलित पतित शोषित लोगों को, हिल-मिल गले लगावें।
मानवता का सच्चा प्रतीक फिर चमके ज्यों ध्रुव तारा,
स्वतन्त्रता में खिल जायेगा, जीवन पुष्प हमारा ॥

नई रोशनी नया जमाना, नव जीवन का नया तराना
नई भावना नई कल्पना, नव युग में नव चरण बढ़ाना।
दिग्दिगन्त में गूंज उठे जय विश्व हमारा नारा,
विकसित और प्रफुल्लित होगा, सारा राष्ट्र हमारा॥

(दूसरा पर्दा खुलता है ... उसमें चौपाल का दृश्य है। मुख्य स्थान पर मेज के पास कुर्सी पर प्रोजेक्ट आफिसर बैठे हैं। उनके सामने एक बलबीरसिंह, करोड़ीमल, कामरेड कमलेश तथा अन्य व्यक्ति बैठे हैं। पास ही एक ओर रेडियो रखा हुआ है।)

शिवकुमार — आज सामुदायिक विकास योजना का दिन है यह बड़ा ही शुभ दिन है। आज ही सामुदायिक विकास योजना का श्रीगणेश हुआ था।

हमारे राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने स्वतन्त्रता प्राप्त करके भारत वसुन्धरा को कृतार्थ किया है। सचमुच महापुरुषों का जीवन और मृत्यु दोनों ही देश, समाज और मानवता के लिए हितकर सिद्ध होते हैं। हमारे देश ने एक लम्बे संघर्ष के बाद स्वतन्त्रता प्राप्त की। अब हमारे देश में सर्वत्र नव-निर्माण का कार्य चल रहा है। राजस्थान में भी पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत सामुदायिक विकास योजना का कार्य कई स्थानों पर गतिशील है। आप लोगों के लिए यह प्रसन्नता की बात है कि इस क्षेत्र को भी सामुदायिक विकास योजना में सम्मिलित कर लिया है।

बलबीरसिंह — ऐसा मालूम होता है कि सरकार का रुपया [illegible] योजना बनाने में ही बह रहा है। जनता को इससे कोई लाभ नहीं होता। [illegible] में यह योजना शुरू हुई है। आप जैसे बड़े [illegible] और कुछ [illegible] लोगों की बन पड़ी है। [illegible] हम जागीरदारों को इससे क्या लाभ हुआ है

करोड़ीमल — (जल्दी से [illegible]) क्यों साहब, नहीं है। सरकार हम [illegible] का [illegible] नहीं कर सकती है। कई गाँवों के आपसी-[illegible] है। [illegible] कोई [illegible] है तो [illegible] आजकल कोई [illegible] नहीं। सब वैसा का वैसा ही है।

बलवीरसिंह : बाल-बच्चे तो हर साल पैदा होते ही रहते हैं। अभी श्रीमान्, हम तो चन्दा देते-देते थक गए। अगर चन्दे-वन्दे की बात हो प्रोजेक्ट में तब तो हमें पसन्द नहीं है।

शिवकुमार : ठाकुर साहब ! आप तो अब तक भी लकीर के फकीर बने हुए हो। आप नये जमाने के उन्नति पथ पर चलने मे असमर्थ हैं। अब तीर और तलवार के दिन लद गये। सुरा और सुन्दरी के दिन अब सपने बन गए हैं। अब ऊँचे वेतन योग्यता के आधार पर ही तो हमे मिलते हैं। योजनाओं के द्वारा ही आज विदेशों में उन्नति हुई है। हमारे देश में भी सैंकडो स्कूलें खुली हैं। खेती-बाड़ी के कामों में, सिंचाई के साधनो मे उन्नति हो रही है। लोगो में दासता और संकुचित दृष्टिकोण के भाव मिट रहे हैं, क्या ये हमारे विकास के प्रतीक नही हैं, जागृति के चिन्ह नही हैं ?

करोड़ीमल : (चाटुकारी वृत्ति से) अजी प्रोजेक्ट आफिसर साहब, हमे इसमे चन्दा तो नही देना पडेगा। अगर कुछ हमारी कमाई का धन्धा हो तो हम धनी-वर्ग के लोग इस योजना का हार्दिक स्वागत करेंगे। सहयोग भी देंगे। आप चिन्ता न करें।

बलवीरसिंह : अजी साहब ताली दोनो हाथो से बजती है।

शिवकुमार : सेठ साहब ! इसमे चन्दा देने का कोई भारी कार्य नही है। जनता के जिन गरीब लोगो से जो आपने छल-बल से रुपया कमाया है, उसका कुछ अंश-मात्र देने की नौबत आयेगी। वैसे चिन्ताजनक कोई बात नही है, सेठजी रुपया-पैसा तो हाथ का मैल है। जीते जो कोई ऐसा कार्य कर जाओ जिससे आपका नाम अमर हो जाये।

(एक कांग्रेसी नेता सुरेश कुमार का आते हुए प्रवेश)

सुरेश कुमार : (रुककर) नमस्ते साहब ···नमस्ते सेठजी ···।

(उपस्थित महानुभाव खड़े होकर नेताजी का स्वागत करते हैं।

(कमलेश का प्रवेश)

शिवकुमार : ओ हो आइये श्रीमानजी, बस आपकी ही प्रतीक्षा थी।

सुरेश : हाँ भाई कमलेश···कहिये, क्या कहना चाहते हो ?

कमलेश — लेकिन जनाब आप हमारे देश की गरीबी को मिटाने के लिए क्या कर रहे हैं ? आज स्वतन्त्र भारत के सैकड़ों नागरिक ऐसे हैं जिनको एक समय ही खाने को मिलता है । सैकड़ों शिक्षित और हजारों अशिक्षित भाई ऐसे हैं जो आज बेकार हैं । उनके जीवन-निर्वाह का कोई साधन नहीं है । क्या आजादी का यही मतलब है कि मुट्ठी भर लोग मौज उड़ाते रहें और सौ में से अस्सी व्यक्ति दरिद्रता में तड़पते रहें । जब तक सारे देश में से गरीबी और बेकारी नहीं मिटती, सरकार को चाहिये कि भारत के प्रत्येक नागरिक को रोटी-रोजी, कपड़ा देने की गारन्टी करे ।

सुरेश कुमार — मुझे यह सब सुनकर आश्चर्य होता है कि हमारी सरकार जनता की भलाई के लिए देश एवं समाज के उत्थान के लिए जब भी कोई भी नया कार्य प्रारम्भ करती है, तो लोग उन्हें समझें या न समझें, विरोध पहिले करते हैं । कुछ लोग ऐसे आलसी हैं कि घर में आई हुई लक्ष्मी का स्वागत करना भी नहीं जानते । आज देश में चारों ओर ग्रामोत्थान का सूर्य उग रहा है । उसका प्रकाश तेजी से फैल रहा है । किन्तु कुछ लोग अब भी ऐसे हैं जो अपनी बुद्धि की खिड़कियों और मस्तिष्क के दरवाजे बन्द करलें और फिर कहें कि देश में अंधेरा है । तो इसमें सूर्य का कोई अपराध नहीं । देश की गरीबी बेकारी और अज्ञानता को मिटाने की रात दिन बज रही है । आप लोग जयघोष सुनते हुए भी स्वार्थवश कान पर पट्टी बाँधकर काठ के उल्लू की तरह बैठे रहें तो उसमें सरकार का दोष नहीं है । देश की उन्नति करने में, विकास सम्बन्धी रचनात्मक कार्यों में हाथ बंटाना प्रत्येक नागरिक का कर्त्तव्य है ।

शिवकुमार — मैं एक महीने से इस क्षेत्र के ग्रामों का भ्रमण कर रहा हूँ । इस तरह यही समझता हूँ कि भारत ग्रामों का देश है । अस्सी प्रतिशत जनता गाँवों में निवास करती है । ग्रामों की उन्नति ही भारत की उन्नति है । हमारे देश के कई ग्रामों में कई प्रकार की समस्याएं [illegible] हैं । लोग पढ़े लिखे नहीं हैं, गरीब हैं, [illegible] हैं, कमजोर हैं । और [illegible] सम्बन्धी बातों पर ध्यान नहीं देते हैं । इस दशा में शिक्षा की उन्नति होनी ही चाहिए । भारी मात्रा में [illegible] के प्रचार-प्रसार के द्वारा [illegible] स्थिति में

सुधार करें। देश-विदेश की प्रगति की जानकारी अखबारों व रेडियो द्वारा प्राप्त करें यही तो इस प्रोजेक्ट में सिखाते हैं।

सुरेश कुमार : अरे भई रेडियो खोलो ना, इस समय तो विकास कार्यक्रम प्रसारित होने वाला है।

(शिवकुमार स्वयं रेडियो का बटन खोलते हैं। थोड़ी देर में एक गायन सुनाई देता है।)

ग्राम-ग्राम अब स्वर्ग बनेंगे

यह सम्पन्न तपस्वी निर्भय विजय वीर वह मनुज महान्
मणि माणिक से महंगा मानव जनहित जो देवे बलिदान।
हरे-भरे खेतों में हंसते गाते हैं मजदूर किसान
सुखद अवस्था नई व्यवस्था नया गीत नव हिन्दुस्तान
नौजवान परिवर्तन करने विकास पथ पर आते हैं
लगन लगी है तिमिर त्याग कर प्रकाश पथ पर जाते हैं।
युग-युग से हम बढ़े निरन्तर अब भी बढ़ते जाते हैं।
प्रणय सुमन अगणित मुस्काये अब भी खिलते जाते है।
बहे देश में प्रेम विनय की निर्मल धारा चचल
ग्राम-ग्राम सब स्वर्ग बने लहरें धरती के अचल।
सुधा कलश से तिरा मनुज पर सरल सुधा बरसाती हैं।
निर्माणों की दीप शिखायें जीवन ज्योति जलाती हैं॥

शिवकुमार : देखा कैसा सुन्दर कार्यक्रम है। ग्रामीण भाइयों को विकास सम्बन्धी जानकारी के साथ-साथ मनोरंजन भी तो होना चाहिये।

एक ग्रामीण : सही फरमाते हैं आप। मनोरंजन....।

शिवकुमार : अजी मनोरंजन हमारे तो हम सबके जीवन का एक अंग है। जब हम दिन भर मेहनत करते हैं, काम करते हैं, तो थोड़ा बहुत मनोरंजन भी होना चाहिये।

एक साथ कई स्वर : हां, हां, यह तो बड़ा अच्छा है।

सुरेशकुमार : हमारी सरकार को केवल शहरी लोगों का ही ध्यान नहीं है, ग्रामवासियों की तरक्की का भी उसे पूरा-पूरा ध्यान है तभी तो लाखों रुपये ग्राम विकास योजनाओं पर पूरा कर रही है, सरकार।

कुछ स्वर : सच कहते हैं, नेताजी।

सुरेशकुमार : हाँ, शिवकुमारजी, अब आगे क्या कार्यक्रम है?

शिवकुमार : सुरेशजी, आज लिकन साहब आने वाले हैं।

सुरेशकुमार : अरे, वे अमरीकन महोदय।

शिवकुमार : और अरविन्दजी भी तो उनके साथ ही आ रहे हैं।

करोड़ीमल : अरे वे पत्रकार महाशय।

बलबीरसिंह : अमरीका तो धनी देश है। लिकन साहब की बातें हमें जरूर सुननी चाहिये।

शिवकुमार : लो वे आ ही गये।

(अरविन्द के साथ लिकन का प्रवेश)

सब उठ कर उनका स्वागत करते हैं।

सुरेशकुमार : आओ भई, हमें तुम लोगों की प्रतीक्षा थी।

अरविन्दकुमार : प्रतीक्षा थी तो हम आ भी गये।

शिवकुमार : आइये, आइये लिकन साहब। आप हमें अमरीका के बारे में कुछ बताने वाले थे।

लिकन : जरूर-जरूर! हम अपने देश के बारे में जरूर बतायेगा। हाँ तो हम कहना है कि हमारी अमेरिका में लोग सरकारी अफसरों की बात को ध्यान से सुनता है। खूब सोचता है अमीर गरीब सब मिलकर देश की उन्नति के कामों में सहयोग देता है और सरकारी योजनायें सफल होती हैं।

कमलेश : लिकन साहब क्या भारत का आदमी नहीं सोचता?

लिकन : ऐसा मालूम होता है, इधर का आदमी जिद्दी है। देशहित के कामों में मेहनत से जी चुराता है। कर्तव्य-पालन करना वह साधारण बात समझता है। कर्तव्य पालन में उदासीनता के कारण देश की उन्नति नहीं हो सकती है।

अरविन्द — अजी लिंकन साहब हमारे देश के लोग ऐसे हैं कि ठोस काम कुछ नहीं करते हैं और चाहते हैं कि उनका नाम अखबारों में छप जावे। लोग उनका जय-जयकार करें और कुछ लोग ऐसे पुराने रूढ़िवादी विचारों के हैं जो नई रोशनी से उल्लू की तरह चमकते हैं। कुछ अन्धविश्वासी हैं जो नासमझ जनता को इधर-उधर बहकाते हैं। सेठ साहूकारों का हाल यह है कि वे अनाप-शनाप तो कमाते हैं किन्तु जब दान या चन्दा देने का अवसर आता है तो मन छोटा करने लगते हैं। किसी ने सच कहा है—

> ऐरन की चोरी करे, करे सुई को दान,
>
> ऊंचा चढ़कर देख तो, केतिक दूर विमान ?

सुरेशकुमार — क्या खूब अरविन्दजी।
(सामान्य हंसी उभरती है)

अरविन्द — अजी चमड़ी चली जाय पर दमड़ी नहीं जाय। पर यह सब अब चलने वाला नहीं है। ऐसी बातें कम्यूनिज्म को मौन निमन्त्रण हैं।

कमलेश — लिंकन साहब, कम्युनिस्ट देश भी तो अपना विकास करने में लगे हैं, वे भी बहुत आगे बढ़ गये हैं।

बलवीरसिंह — अगर हम जागीरदारों को कुछ हक वापिस मिल जाय और भविष्य में आमदनी के साधनों की सुरक्षा की गारन्टी मिल जाय तो हम आपकी इस योजना में सहयोग देने के लिए तैयार हैं।

कमलेश — अब यह कठिन है, ठाकुर साहब ! आप लोगों ने सैकड़ों वर्षों से जनता का शोषण करके ही तो आज उनको गरीब और जर्जर बना दिया है। उनकी आत्मा का हनन किया है।

(करोड़ीमल की ओर संकेत करके)

इन पचरंगी पगड़ी वाले सेठों ने इन लाचार, गरीब और अस्तव्यस्त लोगों पर ऊंचा ब्याज चढ़ा-चढ़ा कर, किसानों के हल-बैल नीलाम करवाकर उनको बेघर बना दिया है।

सुरेशकुमार — इतना ही क्यों बड़ी-बड़ी मशीनों के प्रचार ने ग्रामों में बेकारी बढ़ा दी है। कॉलेज और स्कूल, टकसाल में बनाये हुए अनगढ़ सिक्कों की तरह छात्रों को ब

वैतरणी पार करने के प्रमाण पत्र दे रही है। अंग्रेजों से जब हमने स्वराज्य लिया था तब वे लोग हमें सैकड़ों प्रकार की समस्याओं में उलझा कर चले गये थे।

राजेन्द्र : मेरा विचार यह है कि जब तक हमारे देश के बड़े-बड़े कल कारखाने सरकार के नहीं हो जाते तब तक देश की गरीबी मिटाना मुश्किल है। हमारे देश के नागरिकों की आमदनी में जमीन आसमान का अन्तर है। हमारे देश के एक व्यक्ति को १५-२० रुपये मासिक मिलते हैं, तो किसी को ८-८, १०-१० हजार रुपये मासिक मिलते हैं, इस महान अन्तर को कब तक सहन करेंगे? भारत के प्रत्येक नागरिक के जीवन की बुनियादी आवश्यकतायें तो पूरी होनी ही चाहियें। समाज के प्रत्येक सदस्य को सम्मानपूर्ण जीवन बिताने के साधन तो मिलने ही चाहिएँ।

सुरेशकुमार : बुनियादी आवश्यकताओं से आपका क्या मतलब है? राजेन्द्र जी! अर्थशास्त्र के सिद्धान्त के अनुसार तो आप जानते हैं कि प्रत्येक मनुष्य की आवश्यकतायें असीम होती हैं।

राजेन्द्र : बुनियादी आवश्यकताओं से मेरा अभिप्राय यह है कि प्रजातन्त्र में भारत के प्रत्येक नागरिक को रहने के लिए सुविधाजनक मकान मिले। उनको जीवन-यापन के लिए रोजगार मिले। उनके बच्चों की शिक्षा का प्रबन्ध हो। मतलब यह है कि हर मनुष्य को रोटी, रोजी, कपड़ा, घर, काम-धन्धा मिलना चाहिये। साधारण नागरिक और उच्चाधिकारियों के वेतन में हजारों गुना अन्तर नहीं हो। जो सरकार यह कार्य नहीं कर सकती, उसे सत्तारूढ़ बने रहने का कोई अधिकार नहीं है।

लिकन : ठीक है, बिल्कुल ठीक है।

कमलेश : अजी सुरेश बाबू! देखिये दूसरे देश वहां के नेताओं के पथ प्रदर्शन से फल-फूल रहे हैं। हमारा देश स्वतन्त्र होकर भी दुखी है। हमारे यहाँ सरकार का खर्चा कितना बड़ा है। मैं तो समझता हूँ कि गरीबी का मुख्य कारण यह है कि इतने मिनिस्टरों को रखना सफेद हाथियों का पालन-पोषण करने जैसा है। मुझे यह भी कहते

दीजिए कि राज्य नम्रता व सज्जनता से नहीं चलता है। कुछ सख्ती भी होनी चाहिए। राज्य का राजदण्ड समर्थ होना चाहिये।

सुरेश : कामरेड कमलेश व साथी राजेन्द्र ! मैं कहता हूँ कि व्यर्थ ही वाद-विवाद करने से क्या लाभ होने वाला है? यह तो तुम भली-भाँति जानते ही हो कि चीन के साम्यवाद की पतलून भारत के लिये उपयोगी नहीं है। पूँजीवाद के खतम करने का अभी यह उपयुक्त समय नहीं है। अभी लोहा ठण्डा है। यदि बड़े-बड़े कारखानों को सरकार अभी एकदम अपने अधिकार में कर ले तो राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में हानि होने का डर है। पूँजीपतियों को सरकार यदि सख्ती से दबा ले तो वे लोग कल-कारखाने बन्द करके बैठ जायेंगे और हमारे देश के लोग जो कल-कारखानों में काम करते हैं, उन लाखों लोगों के बेकार होने की सम्भावना है। आप लोग जो सुधार करना चाहते हैं उसके लिए हम भी तैयार हैं। हम भी प्रगतिशील विचारधारा के हैं किन्तु इस विकास योजना में आप सब लोग अपना सहयोग देकर इसे सफल बनाइये। कंधे से कंधा लगा कर काम कीजिये तो यह सब समस्यायें आज नहीं तो कल अवश्य सुलझ जायेंगी।

श्रम के शिव शंकर से बहती, अब विकास की गंगा
पंचशील संदेश सुनाये, शोभित विश्व तिरंगा।
मानव के कल्याण के हित गूँजे नित गान हमारा
बड़े प्रेम से प्रसन्न जन-मन स्वागत करें तुम्हारा॥
अन्न वस्त्र का ढेर लगाकर, भरें खेत खलिहानों को
जन-जीवन में नित उन्नति हो, याद रखें बलिदानों को॥
तूफानों के बीच मनुज के केवल एक सहारा
हम प्रसन्न मानव हिलमिल सब स्वागत करें तुम्हारा॥
अखिल विश्व परिवार हमारा, मानव-मानव सब भाई,
जीवन पथ पर कदम बढ़ावें, रहे न कोई कठिनाई॥
तन उपवन सब महक उठेंगे पाकर स्पर्श तुम्हारा
हम प्रसन्न इस युग में जीवित यह सौभाग्य हमारा।

बेकारी दूर करने के [illegible] है। अंग्रेजों ने हम इन्हें [illegible] किया था तब से आज तक हमें कैसी प्रकार की समस्याओं से [illegible] कर रहे हैं।

राजेन्द्र — मेरा विचार यह है कि अब तक हमारे देश के जो भी सत्ता-रूढ़ सरकार रही है [illegible] देश की [illegible] मुश्किल है। हमारे देश के नागरिकों की आमदनी में जमीन आसमान का अन्तर है। हमारे देश के एक व्यक्ति को १२-१५ रुपये मासिक मिलते हैं, तो किसी को ८-८, १०-१० हजार रुपये मासिक मिलते हैं इस महान अन्तर को कब तक सहन करें? भारत के प्रत्येक नागरिक के जीवन की बुनियादी आवश्यकताएं तो पूरी होनी ही चाहिएं। समाज के प्रत्येक सदस्य को सम्मानपूर्ण जीवन बिताने के साधन तो मिलने ही चाहिएं।

सुरेशकुमार — बुनियादी आवश्यकताओं से आपका क्या मतलब है? राजेन्द्र जी! अर्थशास्त्र के सिद्धान्त के अनुसार तो आप जानते हैं कि प्रत्येक मनुष्य की आवश्यकतायें असीम होती हैं।

राजेन्द्र : बुनियादी आवश्यकताओं से मेरा अभिप्राय यह है कि प्रजातन्त्र में भारत के प्रत्येक नागरिक को रहने के लिए सुविधाजनक मकान मिले। उनको जीवन-यापन के लिए रोजगार मिले। उनके बच्चों की शिक्षा का प्रबन्ध हो। मतलब यह है कि हर मनुष्य को रोटी, रोजी, कपड़ा, घर, काम-धन्धा मिलना चाहिये। साधारण नागरिक और उच्चाधिकारियों के वेतन में हजारों गुना अन्तर नहीं हो। जो सरकार यह कार्य नहीं कर सकती, उसे सत्तारूढ़ बने रहने का कोई अधिकार नहीं है।

लिकन : ठीक है, बिल्कुल ठीक है।

कमलेश : अजी सुरेश बाबू! देखिये दूसरे देश वहां के नेताओं के पथ प्रदर्शन में फल-फूल रहे हैं। हमारा देश स्वतन्त्र होकर भी दुखी है। हमारे यहाँ सरकार का खर्चा कितना बड़ा है। मैं तो समझता हूँ कि गरीबी का मुख्य कारण यह है कि इतने मिनिस्टरों को रखना सफेद हाथियों का पालन-पोषण करने जैसा है। मुझे यह भी कहते

दीजिए कि राज्य नम्रता व सज्जनता से नहीं चलता है। कुछ सख्ती भी होनी चाहिए। राज्य का राजदण्ड समर्थ होना चाहिये।

सुरेश : कामरेड कमलेश व साथी राजेन्द्र ! मैं कहता हूँ कि व्यर्थ ही वाद-विवाद करने से क्या लाभ होने वाला है ? यह तो तुम भली-भाँति जानते ही हो कि चीन के साम्यवाद की पतलून भारत के लिये उपयोगी नहीं है। पूँजीवाद के खतम करने का अभी यह उपयुक्त समय नहीं है। अभी लोहा ठण्डा है। यदि बड़े-बड़े कारखानों को सरकार अभी एकदम अपने अधिकार में कर ले तो राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में हानि होने का डर है। पूँजीपतियों को सरकार यदि सख्ती से दबा ले तो वे लोग कल-कारखाने बन्द करके बैठ जायेंगे और हमारे देश के लोग जो कल-कारखानों में काम करते हैं, उन लाखों लोगों के बेकार होने की सम्भावना है। आप लोग जो सुधार करना चाहते हैं उसके लिए हम भी तैयार हैं। हम भी प्रगतिशील विचारधारा के हैं किन्तु इस विकास योजना में आप सब लोग अपना सहयोग देकर इसे सफल बनाइये। कंधे से कंधा लगा कर काम कीजिये तो यह सब समस्यायें आज नहीं तो कल अवश्य सुलझ जायेंगी।

श्रम के शिव शंकर से बहती, अब विकास की गंगा
पंचशील संदेश सुनावे, शोभित विश्व तिरंगा।
मानव के कल्याण के हित गूँजे नित गान हमारा
बड़े प्रेम से प्रसन्न जन-मन स्वागत करें तुम्हारा॥

अन्न वस्त्र का ढेर लगाकर, भरें सेठ खलिहानों को
जन-जीवन में नित उन्नति हो, याद रखें बलिदानों को॥

तूफानों के बीच मनुज के केवल एक सहारा
हम प्रसन्न मानव हिलमिल सब स्वागत करें तुम्हारा॥

अखिल विश्व परिवार हमारा, मानव-मानव सब भाई,
जीवन पथ पर कदम बढ़ायें, रहे न कोई कठिनाई॥

तन उपवन सब महकें उठेंगे पाकर रूप तुम्हारा
हम प्रसन्न इस युग में जीवित यह सौभाग्य हमारा।

लिकन : यह गीत हमको बहुत अच्छा लगा।

कमलेश : अजी सुरेश बाबू ! हम आपकी मीठी-मीठी बातों में आने वाले नही हैं। हम भी चीन की तरह अपने देश में सुधार क्यों न करें?

सुरेशकुमार : चीन मे तो बल प्रयोग, हिंसा मे और डिक्टेटरशिप से काम लिया गया था और आप जानते ही होंगे कि हिंसा व जबरदस्ती से ली हुई चीज ज्यादा समय तक नही ठहरती। हमको महात्मा गांधी द्वारा प्रदर्शित अहिंसा के मार्ग पर ही चल कर उन्नति करनी है। सत्य, अहिंसा, प्रेम वशीकरण का मन्त्र है। गांधीजी कहते थे उत्तम साध्य के लिए उत्तम साधनों का अवलम्बन करना चाहिये। हिंसा और बर्बरता के द्वारा जनता पर राज्य करना कहाँ तक उचित है ? हमे तो उनका हृदय परिवर्तन करके सद्मार्ग पर उन्हें लाना है। जब हमे आजादी नही मिली थी, तब लोग गांधीजी के कार्यों पर विश्वास नही करते थे। उनके अजीब कामों पर लोग हँसते थे, किन्तु १५ अगस्त सन् १९४७ मे जब स्वराज्य प्राप्त हुआ, तो लोगों को बड़ा आश्चर्य हुआ। जनता कर्मवीर को पूजती है इसी प्रकार यह पंचवर्षीय योजना व सामुदायिक विकास योजना की भी बात है। आशा है अब आप समझ गये होंगे और राष्ट्रोत्थान के शुभ कार्य मे अपना सक्रिय सहयोग प्रदान करेंगे।

लिकन : आप लोगों को तो इस बात पर गर्व करना चाहिये कि आप लोगों को पंडित जवाहरलाल नेहरू, लाल बहादुर शास्त्री, इन्दिरा गांधी जैसे प्रतिभा-सम्पन्न कुशाग्र बुद्धि नेता मिले हैं। ये विश्व के शीर्ष-मुकुट हैं, ज्योतित मणि हैं। भारत का परम सौभाग्य है कि ये सब इसी देश के हैं।

सुरेश कुमार : और सुनिये यह भी आपको मालूम होगा कि स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के रंगमंच पर भारत का कितना सम्मान बढ़ा है। संयुक्त राष्ट्र संघ के अध्यक्ष पद को भारतीय वीरांगना विजय लक्ष्मी पंडित ने सुशोभित किया था। आजकल श्रीमती इन्दिरा गांधी भारत की प्रधान मन्त्री हैं। संसार की नारी जाति के सम्मान की उत्कर्ष की यह चरम सीमा है। डा० सर राधाकृष्णन् जैसे महान दार्शनिक और महान शिक्षा शास्त्री डा०

जाकिर हुसैन हमारे राष्ट्रपति रह चुके हैं यह कोई कम गौरव की बात नही है। आज भूमण्डल का प्रत्येक राष्ट्र भारत की मैत्री का अभिलाषी है। इसलिये अब भारत के आन्तरिक नवनिर्माण, सुरक्षा के लिये सगठित होकर हमें भारत के तीन प्रबल शत्रुओं का सामना करना चाहिये, वे शत्रु हैं गरीबी, अज्ञानता, बेकारी, ये तो सबके भयकर शत्रु हैं। इन समस्याओं को सुलझाने के लिये वर्तमान सरकार को सहयोग देना चाहिये।

शिवकुमार : आज भारत के विभिन्न राज्यों में इन योजनाओं के द्वारा ही शिक्षा का प्रचार हो रहा है। लोग गौ-पालन, पशुपालन आदि सुचारु रूप से चला रहे हैं। स्वास्थ्य के नियमों का पालन, खेतीबाड़ी में उन्नति, सिंचाई के साधनों के विकास से, ज्ञान के प्रकाश से, जनता में नव-जीवन का संचार हो रहा है। हमें पूर्ण विश्वास है कि निकट भविष्य मे भारत शक्तिशाली, समृद्धिशाली और संसार का प्रथम श्रेणी का राष्ट्र होकर रहेगा।

करोड़ीमल : अजी साहब ! मुझे भी दिखता तो ऐसा ही है।

राजेन्द्रकुमार : यह तो सभी जानते हैं कि भारत एक सम्पन्न एवं शक्तिशाली राष्ट्र है वह भविष्य में और अधिक उन्नति करेगा।

कमलेश : यदि ऐसा ढीलापन और भ्रष्टाचार और पक्षपात बना रहा तो भारत में क्रांति हो जायगी।

(डाकिये का प्रवेश)

डाकिया : साब, आपका पत्र।

(शिवकुमार पत्र लेकर पढ़ता है, उसके पश्चात्)

शिवकुमार : अजी सुनिये, सुरेश बाबू... अभी इस पत्र के द्वारा हमारे देश के कई राज्यों में चल रही राष्ट्रीय विकास क्षेत्रों की उन्नति के समाचार मालूम हुए हैं। उत्तर प्रदेश में श्रमदान के द्वारा जनता ने ८ दिन मे ३५ मील लम्बी सड़क बनाई। सैकड़ों कुएँ खुदवाये गये, कई राज्यों में हजारों बाल मन्दिर और प्रौढ़ पाठशालायें खुलवाई गई हैं। बिहार में स्वास्थ्य, पशुपालन, रेडियो प्रोग्राम आदि के द्वारा जनता की शक्ति और ज्ञान बढ़ा रहे हैं। आज हमारे हजारों ग्रामों मे विकास का कार्य दिन दूनी, रात चौगुनी सरलता के साथ आगे

बढ़ रहा है। इन सफलताओं का मुख्य कारण है कि इन राज्यों के लोग आपसी (पारस्परिक) भेद-भाव, ईर्ष्या, द्वेष की भावना, त्याग तन-मन धन से सरकार को सहयोग देकर भारत को समृद्ध सम्पन्न बनाने के पक्ष में सक्रिय सहयोग दे रहे हैं यह बात राज-स्थान में बड़ा स्थान रखती है।

सुरेशकुमार : वास्तव में यह समाचार भी बड़ा आनन्ददायक है। इस वर्ष कई वर्षों बाद पानी भी अच्छा बरसा है, फसल भी बड़ी अच्छी है, चारों ओर आनन्द ही आनन्द के लक्षण दीख रहे हैं। ऐसी दशा में मुझे विश्वास है कि राजस्थान के प्रत्येक विकास क्षेत्र में प्रत्येक जिले में और खासकर इस प्रदेश में जनता के सक्रिय सहयोग से यह योजनायें अवश्य सफल होंगी। जिस प्रकार विगत वर्षों में राजस्थान के लोगों ने यह सिद्ध कर दिया था कि लोग वीर सैनिक हैं, चतुर व्यापारी हैं, कुशल अधिकारी हैं, ईमानदार कर्मचारी हैं वैसे ही देश के नव-निर्माण में भी ये किसी से पीछे नहीं हटेंगे। देश की गरीबी मिटाना ही आज का धर्म है। बेकारी मिटाना पुण्य कर्म है और अज्ञानता दूर करना ही मानवता की सबसे बड़ी सेवा है। वास्तव में ऐसी सेवा से हमारा और देश का मुख उज्ज्वल व उन्नत होगा ऐसा हमारा विश्वास है।

सुरेशकुमार : लो, मैं एक गीत सुनाता हूँ।

सब : जरूर, जरूर !

नव-युग की नई फसल

हरे-भरे खेतों में अब लहराती फसलें धान की।
राम किसानों में रमता खेतों में हँसती जानकी ॥
जितनी भी बजर मरुभूमि, भारत में बेकार है,
अब अगणित नहरों के द्वारा, सिंचने को तैयार है।
पड़त पहाड़ी विधवा भूमि पर सुहाग फिर लहरायेगा
युग-युग से प्यासी भूमि का यौवन अब हँसकर गायेगा ॥
भारत माता स्वर्ग बनेगी, बात नहीं अभिमान की।
हरे भरे खेतों में अब लहराती फसलें धान की।
राम किसानों में रमता खेतों में हँसती जानकी ॥

हरे-हरे पौधों के सिर पर पीले-पीले फूल हैं,
फल फूलों से लदे बगीचे, मौसम भी अनुकूल है।
कदम-कदम पर रिद्धि-सिद्धि धन दौलत के अम्बार लगे
घर-घर देखो द्वार द्वार सुख मंगल वन्दनवार सजे॥

भौतिक उन्नति संग जग रही जीवन ज्योति ज्ञान की,
हरे-भरे खेतों मे अब लहराती फसलें धान की।
राम किसानो में रमता खेतों मे रमती जानकी॥

दूर-दूर विस्तृत खेतों में पकी फसल लहराती है,
देख फली फूली खेती को, जनता हँसती गाती है।
इठलाता ये धान, चना, हँसता गेहूँ बल खाता है
हरियाली संग ज्वार बाजरा गाता है मुस्काता है॥

अलमस्त किसानों की टोली खेले गज घोड़ा पालकी,
हरे भरे खेतो मे अब लहराती फसलें धान की।
राम किसानो मे रमता खेतों मे हँसती जानकी॥

सेठ करोड़ीमल : बस बस सुरेश बाबू ! अब सब बात मेरी समझ में आ गई। मैं आज से ही ब्याज की दर कम कर दूंगा, गरीबो पर दया करूंगा, स्वार्थसिद्धि त्याग दूंगा, शोषण करना बन्द कर दूंगा। सरकार की प्रत्येक योजना में प्रत्येक राष्ट्रोत्थान के कार्य में तन, मन, धन से सहायता दूंगा।

सुरेशकुमार : धन्य है सेठजी ! आप जैसे समझदार और दानवीर लोगों की देश को बड़ी आवश्यकता है। भामाशाह की वृत्ति वाले सेठ साहूकार अमर हो जायेंगे। विनोबा भावे के सम्पत्तिदान मे आप जैसे धन्य सेठ साहूकार भी सक्रिय सहयोग दें तो जानते हो सेठजी सारा काम अहिंसा से ही चल जायगा।

करोड़ीमल : गर्दन हिलाकर···हाँ, हाँ पूरी तरह समझ गया।

बलवीरसिंह : सुरेश बाबू आज आप सब लोगों की ये बातें सुनकर मेरी भी आँखें खुल गई हैं। मुझे मेरे कर्त्तव्य का अब भान हुआ है। मैं सबके सामने प्रतिज्ञा करता हूँ कि मैं आज से मदिरा पीना छोड़कर देश की सेवा करूंगा। हमारी राष्ट्रीय सरकार को हर काम में सहयोग

दूँगा। अब लकीर का फकीर बनने से वास्तव में काम नहीं चलेगा। मैं 200 बीघा जमीन भूमि यज्ञ में दान करता हूँ अन्य ऐसे कार्यों में भी मैं पूरा सहयोग दूँगा। मेरा नाम भी सहायकों की सूची में लिख लीजिये, सुरेश बाबू।

सुरेशकुमार : ओ हो ठाकुर साहब ···आपका त्याग वास्तव में सराहनीय है। हम भी तो यही चाहते हैं कि राजा, जागीरदार, जमींदार आदि अपनी पुरानी बातों को छोड़कर जनता-जनार्दन की सेवा करें और सम्पत्ति दान में, भूदान में सहयोग देकर विनोबा भावे की तपस्या को सफल बनावें जो हमारे ऋषि हैं।

अरविन्द : सुरेश बाबू····आपके सम्पर्क में रहने से भी मनुष्य देवता बन सकता है। मुझे भी आज कुछ नया-नया सा लग रहा है। मैं भी आज से अपने पत्र का नाम विकास सन्देश रखता हूँ। भारतवर्ष के उत्कर्ष तथा निर्माण सम्बन्धी लेख, कवितायें, एकांकी ही प्रकाशित करूँगा। गन्दे विज्ञापन व व्यर्थ के समाचारों को स्थान न दूँगा। झूठे संवाददाताओं की बातों पर निर्भर नहीं रहूँगा।

सुरेशकुमार : अच्छा भाई आपको भी धन्यवाद ! इस विकास और सुरक्षा में हमारे देश के सम्पादकों का भी बड़ा महत्व है।

राजेन्द्रकुमार : मैं भी समझ गया कि समाज को सुखी-सम्पन्न और उन्नत किस प्रकार बनाया जा सकता है। कुछ बातों में सैद्धान्तिक मतभेद होते हुए भी मैं और मेरी पार्टी के लोग समाज के नवनिर्माण सम्बन्धी कार्यों में आगामी चुनाव तक आपको सहयोग देंगे। यह आपसी पारस्परिक समझौता है। आशा है भाई सुरेश आप इसमें सहमत होंगे।

सुरेशकुमार : भाई राजेन्द्र शतायु हों। मैंने इस समझौते से इन्कार ही कब किया है। मुझे तो पूरा आशा है कि हमारे नेता जयप्रकाश मिलकर देश का बहुत बड़ा कल्याण करेंगे, इसे समृद्धिशाली बनाने के भरसक प्रयत्न करेंगे।

राजेन्द्रकुमार : हाँ, ठीक है सुरेश।

मिश्रन : कामरेड अब तुम क्या मुँह देखते हो। तुम भी इस विकास कार्य में सहयोग दो, तुम्हारी भी इसी में भलाई है। तुम्हारे हित व

विध्वंसात्मक कम्युनिज्म की नींव भारत में नहीं जम सकता, यह धर्म निरपेक्ष राज्य है समझे !

कमलेश : सचमुच मेरे भी बात कुछ समझ में आ गई है। भारत की जनता की उन्नति सरकार के द्वारा हो, इस बात से मैं कब इन्कार करता हूँ ? मेरा और मेरे दल का आपसे सिद्धान्त रूप में कुछ विरोध है, हमारा मत भी आपसे भिन्न है किन्तु फिर भी मैं भारतीय कम्युनिस्ट हूँ इसलिए मैं विकास सम्बन्धी कार्यों के लिए अगले चुनाव तक पूर्ण सहयोग दूँगा। पर मेरा रास्ता अलग है, समझे नेताजी !

सुरेशकुमार : भाई कमलेश कहाँ चले ? सुबह का भूला भटका यदि शाम को घर आ जाय तो हमारा व देश का सौभाग्य है।

लिकन : (प्रसन्न मुद्रा में, खड़े हो)
अब आप सबको इस प्रकार देखकर हमारे दिल को सचमुच बड़ी खुशी होती है। अब आप इस प्रोजेक्ट की बातें समझने लगे हैं। इसमें अब यह सामुदायिक विकास योजना जरूर सफल होगी। इसमें अब कोई शक नहीं है।

सुरेश कुमार : वास्तव में यह बड़ी प्रसन्नता का अवसर है। अब मुझे पूर्ण विश्वास है कि प्रत्येक क्षेत्र में सामुदायिक विकास योजना, पंचवर्षीय योजना, नदी बाँध योजना आदि विकास कार्यों में जनता का, सरकार का, अफसरों का, कर्मचारियों का, शिक्षकों व शिक्षार्थियों का संपूर्ण सक्रिय सहयोग मिलेगा। हमारे देश में बड़ी-बड़ी नदियों पर बाँध बन रहे हैं, जिससे देश में सिंचाई होगी, बिजली बनेगी और जिससे छोटे-छोटे कारखाने चलेंगे, कई औद्योगिक प्रतिष्ठान खोले जायेंगे। भूदान व सम्पतिदान यज्ञ की उन्नति के समाचार भी आनन्दवर्धक हैं। काला बाजार व घूंसखोरी में भी कमी हो रही है। शिक्षा का प्रकाश झोंपड़ियों में भी स्वर्गीय सुखद संदेश दे रहा है। देश-विदेश में आज हमारी कीर्ति ध्वजा लहरा रही है।

विमलाकुमारी : भारत माता के अब उत्कर्ष काल का उदय हुआ है। सर्व-सत्ता सम्पन्न स्वतंत्र प्रजातंत्र भारत अपने प्राचीन गौरव को प्राप्त करने की ओर सतत् प्रयत्नशील है। आज का मिलन अमर हो। विश्वशांति

स्थापित करके संसार की मानवता को हम सुखी बनावें ।
आओ हम सब मिलकर इस मंगलवेला में एक गीत गावें—
जग में जीवन ज्योति फैले फूले फले स्वदेश ।
विकास पथ पर बढ़ते जावें, यह निश्चित उद्देश ॥

जय जय भारत देश !

कोटि कोटि जनता के मुख से गूंज उठे यह नारा,
सर्वोदय का पुण्य पोत, अपना भूदान सहारा ।
उन्नति पथ पर बढ़े निरन्तर श्रम-जीवन सदेश ॥१॥

जय जय भारत देश !

इस विकास के पुण्य कार्य में हम भी हाथ बटावें,
भव्य भावना कलित कामना से सत् पथ अपनावें ।
तन मन धन से त्याग करें हम सुखी बने यह देश ॥२॥

जय जय भारत देश !

करने नव-निर्माण देश का कोटि-कोटि अब चरण बढ़े,
हरने को अज्ञान देश का ज्ञान दीप ले मनुज बढ़े
लगे काम सब मिटे गरीबी मिटे हमारे क्लेश ॥३॥

जय जय भारत देश !

आज हमारा कर्म धर्म है, करें देश का नवनिर्माण
वर्गहीन शोषण विहीन जन करें विश्व भर का कल्याण
सुख संपत्ति यश गौरव पावें हरा भरा हो देश ॥४॥

जय जय भारत देश !

भूमण्डल में तरल तिरंगा विजय केतु अब लहर रहा है
उच्च गगन के मुक्त पवन में चक्र सुदर्शन छहर रहा है ॥
कोटि कोटि जन की लख आशा मुस्काये अखिलेश ॥५॥

जय जय भारत देश !

जग मे जीवन ज्योति फैले फूले फले स्वदेश ।
विकास पथ पर बढ़ते जावें यह निश्चित उद्देश्य ॥
जय जय भारत देश !

जैसा करोगे वैसा पाओगे

मोहन पुरोहित "रसाली"

* * *

स्थान	·	भगवती का घर
पात्र	·	भगवती (घर की मालकिन)
किशनू	:	नौकर
भारती	:	भगवती का लड़का
गुसाईं	·	साधू
गोपाल	:	भारती का मित्र

पहला दृश्य

भगवती : (व्यग्रता से) अरे किसनू उसके आने का समय हो गया कुछ उपाय सोचा।

किशनू : किसके आने का समय ? कैसा उपाय मालकिन ?

भारती : वही गुसाईं बाबा का जो रोजाना अपने द्वार पर "भला करोगे भला पाओगे, बुरा करोगे बुरा पाओगे" आकर बक जाता है।

किशनू : अच्छा आया ध्यान में ! वही न जिसका आप कल शाम को जिक्र कर रही थी।

भगवती : हाँ वही, अब मैं उस मनहूस का चेहरा देखना भी पसन्द नहीं करती। अगर उसे यह वाक्य इतना प्रिय है तो जंगल में जाकर ही क्यों नहीं कहता, अब तो इसका शीघ्र उपाय किया जाय, फिर न रहे बाँस न बजे बाँसुरी।

किशनू : तो मुझे क्या हुक्म है मालकिन ?

भगवती : हुक्म यही कि छुटकारे का उपाय सोचा जाय।

किशनू : उपाय तो बहुत सरल है। साबू बाबा है। उसका भोनी डंडा है और मैं हूँ। मैं भी कोई कच्ची गोलियाँ नहीं खेला हूँ।

भगवती : यह उपाय नाकामयाब होगा। मैं कई बार झिड़क भी तो चुकी हूँ और तो और मैंने आज तक एक रोटी का टुकड़ा तक नहीं दिया। [थोड़ा सोचकर] हाँ एक उपाय है तुम बाजार जाकर चुपचाप एक तोला अफीम ले आओ।

किशनू : क्यों मालकिन इससे ?

भगवती : बस ज्यादा मत बक, किसी से एक शब्द भी उगला तो..........

किशनू : बस समझ गया, ऐसे मौको पर बड़ा सतर्क रहा जाता है। मैं किसी से कहूँ, कोई पागल थोड़े ही हूँ।

[भगवती रुपये देती है, वह बाजार की ओर जाता है]

भगवती : (स्वगत) आज तो मैं इसका पाप काट हीं दूँगी, दुनियाँ से एक बेकार आदमी कूच कर जायगा। उस दिन की बात है भारती का मनीआर्डर आने वाला था मैं पोस्ट मैन का इन्तजार कर रही थी खुश हो रही थी कि अभी डाकिये के पुकारने की आवाज आती है, आवाज आई परन्तु डाकिये की नहीं, इस गुड़दाड़ की मनहूस आवाज 'भाई जैसा करोगे वैसा भरोगे'। मेरी सब आशाओं पर तुषारापात हो गया, खुशी नाखुशी में परिवर्तित हो गई। दिल गीली लकड़ी की तरह धुक-धुक कर धुँआ निकालने लगा। दूसरे दिन ही भारती का पत्र आया, लिखा था वह आ रहा है। उस दिन से रोजाना आने की राह देख रही हूँ अभी आया अभी आया। पर होनी है वही आवाज 'भाई जैसा करोगे वैसा भरोगे'! देखूँ किशनू अभी तक आया क्यों नहीं है

[भगवती का जाना पर्दा गिरना]

दूसरा दृश्य

[भगवती के घर का दरवाजा खटखटाने की आवाज आ रही है, भगवती दरवाजा खोलती है, तो पाती है वही गुरन और वही आवाज]

'अलख निरञ्जन ! माई जैसा करोगे वैसा पाओगे।'

भगवती : पधारिये महाराज ! आपकी ही राह देख रही थी आज मेरे व्रत है आपको भोजन कराकर ही भोजन करूँगी।

साधू . "अच्छा माई हरि इच्छा प्रबलसी" जो जैसा करेगा वैसा ही पायेगा [भगवती का साधू बाबा के लिये भोजन लेने जाना] [स्वगत] आज अचानक भक्तिन के मन मे यह श्रद्धा कैसे जाग गई, शायद यह पूर्व-जन्म के संस्कार के फलस्वरूप है, खैर अब से ही अच्छे कर्मों का उदय हो, देर हुआ दुरस्त हुआ। बाकी माई ने कभी रोटी का एक टुकड़ा तक नहीं दिया, 'हरि इच्छा प्रबलसी'।

भगवती भगवती आती है साथ में तीन लड्डू लाती है तथा अन्य खाने-पीने का सामान भी लाती है ! लो आरोगो महाराज।

साधू : जय हो माई, जो जैसा करता है वह वैसा ही पाता है [साधू का जाना]

[पर्दा गिरता है]

तीसरा दृश्य

[दो राहगीर परदेश से आये हैं, गाँव स्टेशन से काफी दूर है, बातें करते हुए आगे घरों की ओर बढ़ रहे हैं]

गोपाल : भारती मुझे तो तेज प्यास लगी है।

भारती : तूने तो मेरे मन की बात कह दी वास्तव में मैं भी यही कहना चाहता था, पर यहाँ कहीं पानी नजर नहीं आता।

गोपाल . देखो वो अँगुली की सीध में एक कुटिया, क्यों, नजर आ रही है न ?

भारती : हाँ हाँ जरूर कोई वहाँ रहता होगा।

गोपाल : पर इस जगल मे ?

भारती : हाँ कोई साधू सन्त फकीर वगैरह होगा। चलो जल्दी पहुँचें [जल्दी-जल्दी पैर बढ़ाते हुए वहाँ पहुँचते हैं]

गोपाल : यार यह कुटिया यहाँ नहीं होती तो बिना पानी के प्राण निकल ही गये होते [कुटिया में एक साधू बाबा को ध्यान मग्न देखते हैं दोनों उनके पास जाते हैं]

दोनों : नमस्कार महाराज [महाराज जी आँखें खोलते हुए]-कौन? आओ बच्चों, कहाँ से आना हुआ ?

दोनों : हम चन्दनपुर से आरहे हैं, प्यास लगी है जरा पानी मिल जाय तो""

महाराज : पहले थोड़ा भोग लगालो फिर पानी भी पीना और भूख लगी होगी नाश्ता भी करना।

गोपाल : महाराज जी मैंने तो रास्ते में अपनी पेट पूजा कर ली थी पर भारती अभी भूखा होगा क्योंकि इसने तो बुक स्टाल से पुस्तक खरीद ली थी और उसी में मग्न हो गया था ! [भारती से] क्यों भारती ?

भारती : हाँ बात तो सही है लेकिन खाना तो घर जाकर ही""""

महाराज : नहीं बेटा संकोच नहीं करना चाहिए। यह लो खा लो।
[भारती खाना खाता है और पानी पीता है, गोपाल केवल पानी ही पीता है, फिर रवाना होते हैं]

दोनों : [जाते हुए] आपकी बड़ी मेहरबानी रही महाराज नहीं तो प्राण तो गले को आ रहे थे ?

साधू : कौन किसकी खातिरदारी करता है बच्चा सब अपने-अपने भाग्य का खातेहै एक घर की भिक्षा पर तुम्हारा ही हक लिखा था। भला दूसरा उसे कैसे खा सकता था, बच्चा यह संसार तो माया जाल है कौन किसको देता लेता है केवल निमित्त बनते हैं, इन्सान खाली हाथ ही आता है और खाली हाथ ही जाता है, जो जैसा करता है वो वैसा ही पाता है। 'अलख निरञ्जन' (वापिस ध्यान लगा लेते हैं)

[पर्दा गिरता है]

चौथा दृश्य

[भगवती का घर, भारती और भगवती दोनो बातें कर रहे हैं]

भगवती : बेटा, पत्र में आने का लिखने के बहुत दिन बाद आया मैं तो उसी दिन से राह देख रही थी।

भारती : हाँ माँ मैं जल्दी ही आ''''ग्रा''' ने वा''''आ''''ग्रा ल''''अ''''आ य''''था''''म''''''''''''

भगवती : अरे तुम बोलते-बोलते घबराने क्यों लग गये। अरे कोई है, अरे मेरे लाल को तो देखो।

बेटा-यह तुम्हारे मुँह से क्या निकल रहा है अ र र झाग !

भारती क''''ण्''''ठ स सू ख र''''''' '''''''

भगवती : अभी पानी लाती हूँ पर तुम्हारा कण्ठ कैसे सूखने लग गया अरे किशनू''''''' ''''

किशनू : हाँ मलकिन

भगवती : देखो तो तुम्हारे छोटे बाबू को क्या हो गया ?

किशनू . हे ए-[पुकारता है] छोटे बाबू, छोटे बाबू।

भारती : हू ''''अ '' हाँ''''आ

भगवती : अरे कोई गोपाल को बुलाओ रे पूछें तो सही [किशनू का जाना गोपाल को साथ लेकर आना भगवती का उससे पूछताछ करना]

भगवती क्यों गोपाल रास्ते में कोई विशेष घटना तो नहीं हुई थी देखो। न भारती की तबियत एकदम खराब हो गई है।

गोपाल : रास्ते मे तो कोई खास घटना नहीं घटी थी। हाँ एक कुटिया में पानी जरूर पिया था और''''''

भगवती : और क्या गोपाल रुक क्यों गये ?

गोपाल : भारती ने खाना भी खाया था।

भगवती : खाना भी खाया था ?

गोपाल ' हाँ अम्माजी पर वह तो साधू महाराज की कुटिया थी ?

भगवती : साधू महाराज की कुटिया थी ?

गोपाल . हाँ अम्माजी।

भगवती : तो खाने में कहीं लड्डू तो नहीं थे ?

गोपाल : हाँ अम्माजी पर उसमे तो''''''' आपको कैसे पता चला ?

भगवती : अरे लुट गई मैं तो हाय रे ''''''

शिवानू : क्यों मालकिन सड़ू वही तो नहीं थे जो……

भगवती : अरे जुम्मा धन्य रन मैं तो मर गई ! बेटा एक बार तो मुँह से बोल । हाय मेरा तो घर उजड़ गया ।

गोपाल : घबरायें नहीं माताजी मैं अभी डाक्टर को बुलाकर लाता हूँ…

भगवती : हायरे बेटा तू यहां गया ही क्यों ! [कहते हुए भगवती गिर पड़ती है गोपाल डाक्टर को बुलाने जाता है ।]

[पर्दा गिरता है]

जलता चिराग

अमोलक चन्द जांगिड़

* * *

काल सन् 1019 ई०

पात्र परिचय

महमूद गजनवी	:	गजनी का सुलतान
बैहाकी	:	सिपहसलार
उत्बी	:	सलाहकार
अलबेरुनी	.	वजीर
फिरदौसी	:	सलाहकार
शेखर	:	भारतीय कलाकार
हबीबा	:	महमूद सुलतान की शहजादी
जन्नत	:	सहेली
शहर श्राजाद	:	सहेली

प्रथम दृश्य

स्थान—गजनी के सुलतान का राजमहल

समय—दिन का द्वितीय प्रहर

[ऑक्सस नदी के दक्षिण किनारे पर सामानी शासकों के समय में ही बना हुआ एक पुराना किला जिसके भीतरी भाग की शानोशौकत बड़ी आकर्षक है। इसे

यामिनी वंश के प्रसिद्ध शासक महमूद ने अनेक परिवर्तन करके सजाया है, जो राजमहल की सुन्दरता को चार चाँद लगाता है। राजमहल के मध्य बने हुए विशाल भवन में आम दरबार लगा हुआ है।]

महमूद : (विजय की खुशी में) हमारे जांबाज बहादुरों को मैं तहेदिल से दाद देता हूँ जिन्होंने हिन्दोस्तां को इस बार वो शानदार शिकस्त दी है जिसकी कोई मिसाल नहीं। मथुरा तक के इलाकों को रौंद डाला गया। काफिरों के मन्दिरों को तहस-नहस कर दिया गया। (अट्टहास करते हुए) हा.....हा.....हा.....! हमने अपार धन-दौलत लूट कर गजनी के खजाने को भर दिया है। हमने हीरे-जवाहरातों की नुमाइश लगाने का हुक्म दे दिया है। क्यों बैहाकी! कितना काम और करने को रह गया है?

बैहाकी : (झुककर खड़ा होता है) हुजूर! आपके हुक्म के मुताबिक राजमहल के दाहिने बाजू वाले कमरे मे नुमाइश का इन्तजाम कर दिया गया है। कल से आम रिआया के लिए कमरा खोल दिया जाएगा।

महमूद : शाबास! हमें तुमसे ऐसी ही आशा थी।

उत्बी : (अपने स्थान पर खड़ा होकर सिर झुकाता है) खता मुआफ हो। हुजूर के कदमों मे रिआया एक अर्ज पेश करना चाहती है।

महमूद : (उत्बी की ओर गरदन घुमाकर) कहो, क्या कहना चाहती है रिआया?

उत्बी : (दरख्वास्त पढ़ते हुए) हुजूर! गजनी की रिआया दरख्वास्त पेश कर अर्ज करती है कि राजधानी में एक विशाल मस्जिद बनवाई जाय ताकि खास मौकों पर एक साथ नमाज अदा की जा सके। दूसरा—एक बड़ा मदरसा बनवाया जावे और मुदर्रिसों की तादाद बढ़ाई जावे ताकि मजहबी तालीम व कौमी तामियत को आसान मे ठीक अन्जाम दिया जा सके।

महमूद : बेशक! अवाम की माँगें काबिले गौर हैं। मगर मेरी मंशा एक नया राजमहल बनवाने की है। उसकी इमारत इतनी बुलन्द और हुनर मे इतनी शानदार हो कि दुनिया में उसका कोई मुकाबला न हो। तीनों इमारतों पर कितनी दौलत खर्च हो सकती है? अल-बैरूनी इसका तखमीना बनाकर पेश करें।

अलबेरुनी : जो हुक्म !

(एक सिपाही का प्रवेश)

सिपाही : (कोर्निस करते हुए) हुजूर ! खलीफा की ओर से एक दूत आया है। वह आपसे मिलना चाहता है।

महमूद : उसे बाइज्जत दरबार में लाया जावे।

सिपाही : जो हुक्म !

(सिपाही चला जाता है और दूत के साथ उसी समय लौट आता है)

दूत : (कोर्निस करता है) खलीफा साहब ने आपकी सेवा में यह संदेश भेजा है। (परवाना पेश करता है। सुलतान पढ़ता हुआ बहुत खुश नजर आता है)

महमूद : बैहाकी ! इस परवाने को दरबार में पढ़ा जावे।

बैहाकी : (झुककर परवाना हाथ में लेता है और परवाना पढ़ता है) (पढ़ते हुए) इस बार की हिन्दोस्तांफतह पर आपको मुबारकबाद ! आपने जो दूर-दूर तक इसलाम का निशान फहराया है, इससे हम बहुत खुश हैं। हम आपको केवल खुरासान, बल्ख और हिरात का शासक ही नहीं बल्कि सारे गजनी का सुलतान मानते हैं। आगे आपके वंश को गद्दी का हकदार कबूल करते हैं।

-अब्बासिद खलीफा

(दरबार में खुशी की लहर दौड़ जाती है। सब एक स्वर में शहंशाह सुलतान की जय बोलते हैं)

महमूद : सिपाही, इन्हें बाग्रदब महल में ठहराया जावे।

सिपाही : जो हुक्म ! (दूत को लेकर चला जाता है)

महमूद : आज हम बहुत खुश हैं। इस खुशी में हरेक सिपाही को पाँच-पाँच दिरहम बाँटी जावे (हर्ष ध्वनि होती है) (अलबेरुनी की ओर मुखातिब होकर)—क्यों अलबेरुनी ! तीनों इमारतों पर कितना खर्च होने का अनुमान है ?

अलबेरुनी : हुजूर ! करीब ५ लाख दिरहम का।

महमूद : हम मंजूर करते हैं। (हर्ष ध्वनि)

फिरदौसी : हुजूर ! इस ताल्लुक मेरी अर्ज है कि हम हिन्दोस्तां से जो

१२००० कैदी मारे हैं उनसे काम लिया जावे। उनमें से कई कैदी अव्वल दर्जे के कारीगर हैं। राजमहल की इमारत बनाने में तो एक कैदी बड़ा उस्ताद है।

महमूद : क्या खूब! तुम्हारी यह सलाह बेशक काबिलेगौर है। उस दस्तकार को दरबार में हाजिर किया जावे।
(सिपहसलार एक सिपाही को साथ लेकर जाता है तथा शीघ्र ही शेखर को लेकर दरबार में हाजिर होता है)

महमूद : क्या नाम है तुम्हारा दस्तकार!

शेखर : मुझे शेखर कहते हैं! (शेखर शांत एवं गंभीर खड़ा है)

महमूद : आज तुम्हारी तकदीर का इम्तहान है। अगर इसमें खरे उतरे तो इस मुल्क के अव्वल दर्जे के हुनरमंद दस्तकारों में तुम्हारा नाम रोशन होगा। गजनी का सुलतान तुम्हारी इज्जत करेगा। मेरी एक शर्त मान लोगे तो दौलत तुम्हारी कदम बोशी करेगी। सोचलो दस्तकार! क्या तुम्हें मंजूर है?

शेखर : (गंभीरता से) वह कौन सी शर्त है?

महमूद : एक शानदार महल बनाना है जो हुनर की नजर में सारे जहाँ का कमाल हो।

शेखर : (आवेश में) गजनी के सुलतान! महल तो दूर रहा यदि एक मिट्टी का घरोंदा भी बनवाना चाहो तो वह भी नहीं बनाता।

महमूद : (क्रोधावेश में) जानते हो इसका क्या परिणाम होगा?

शेखर : (शांत भाव से) अच्छी तरह से। भारतीय वीर कभी मृत्यु से नहीं डरता। उसे अपनी आन और धर्म,प्यारा है, गुलामी नहीं।

महमूद : (आवेश पर नियंत्रण करते हुए) दस्तकार का क्या यह उसूल नहीं होता कि वह अपने हुनर को सारे जहाँ में फैलावे। दुनियाँ के कोने-कोने मे पहुँचावे! फिर तुम क्यों इनकार कर रहे हो दस्तकार?

शेखर : गुलामी की नजर को पहचानता है हुनर। गजनी के सुलतान! भारत का बच्चा-बच्चा कलाकार है। उसको गुलाम बना सकते हो, लेकिन भारतीय कला को गुलाम नही बना सकते।

कैदियों में एक नौजवां कलाकार की सिफारिश की जो अपने हुनर का बादशाह बताया गया है ।

हबीबा : तब तो अब्बाजान ने उसे एक इमारत बनाने का हुक्म जरूर दिया होगा ।

जन्नत : अब्बाजान ने तो तहेदिल से उसको चाहा मगर काफिर ने इनकार किया ।

हबीबा : क्यों ?

जन्नत : काफिर का जवाब था—'मेरा जिस्म गुलाम है, मगर हुनर नहीं ।

हबीबा : तब तो अब्बाजान ने अवश्य ही उसके जिस्म के टुकड़े-टुकड़े कुत्तों को डलवाने का हुक्म दिया होगा ।

जन्नत : यही तो अचम्भा है कि शहंशाह ने उसे कड़ी कैद की सजा दी है, मौत की नहीं ।

हबीबा : सबब ?

जन्नत : सबब मालूम नहीं । मगर काफिर है बहुत खूबसूरत । उसके काले-काले बाल, लम्बी गरदन और चौड़े कंधे उसकी खूबसूरती में चार चाँद लगाते हैं । क्या बला की जवानी है । उसको देखकर कलेजा मुंह को आ जाता है ।

हबीबा : इतना हसीन ! जन्नत ! क्या हिन्दोस्तां के उस कलाकार का दीदार करा सकती हो ?

जन्नत : क्यों नहीं शहजादी साहिबा ! अभी चन्द लमहों में उसे इसी रास्ते से तहखाने वाली जेल में ले जाया जाएगा ।

हबीबा : चलो ! तब तक हम उस पेड़ की ओट में छिप जावें ।

(शहजादी व सहेलियां एक पेड़ की ओट में हो जाती हैं । थोड़ी देर में चार सिपाही शेखर की मुश्कें बांधे ले जाते हैं)

जन्नत : (इशारा करते हुए) वो देखो शहजादी साहिबा ! चेहरे से क्या नूर टपक रहा है । गजब का हुस्न दिया है खुदा ने ।

(शहजादी थोड़ा आगे आकर ज्योंही उसकी तरफ देखती है शेखर का भी उधर ही देखना हो जाता है । चार आँखें होती हैं । शेखर वहीं ठिठक जाता है किन्तु सिपाही उसे तहखाने के फाटक की ओर खदेड़ता हुआ आगे बढ़ जाता है)

जन्नत : यह क्या ? शहजादी साहिबा ! (मुखड़े को निहारते हुए) आप इतनी उदास क्यों हो गई ? यह खिलता हुआ गुल व गर्द में क्यों पड़ गया ? (दिल पर हाथ रखते हुए) ओह ! आपके दिल की धड़कन''' ''''''''''''

हबीबा : कुछ नहीं हुआ जन्नत ! अचानक मेरी तबियत खराब हो गई है। मुझे यहाँ से जल्द ले चलो।

(जन्नत और शहर आजाद शहजादी को सहारा देकर महल के भीतर ले जाती हैं)

[पर्दा गिरता है]

तृतीय-दृश्य

(पर्दा उठता है)

समय : रात्रि का द्वितीय प्रहर

स्थान : महमूद गजनवी का शयनगृह

(सुलतान अपने शयनगृह मे उद्विग्न टहल रहा है। माथे मे बल। मुट्ठियां बन्द। पास में एक लौंडी सेवा में खडी है)

महमूद : खड़ी क्या देखती हो ! शराब और लाओ।

(लौंडी हीरे जड़ी सुराही से शराब चाँदी के प्याले में उडेलती है और सुलतान को पेश करती है। महमूद एक सांस मे पी जाता है)

महमूद : (डगमगाता हुआ) जिस महमूद ने हिन्दोस्तां को कई बार फतह किया है, उसी के सामने एक अदना कलाकार सर नही झुका रहा है। उस काफिर की इतनी हिमाकत ? भरे दरबार मे मुझे बेइज्जत किया। देख लूंगा उस दस्तकार के बच्चे को। ऊँह • '''' मेरे खौफ से सारे जहाँ के कलेजे दहल उठते हैं मगर एक काफिर को इतना घमण्ड ! आज या तो वह मेरा हुक्म मान लेगा अन्यथा उसके जिस्म को एक चुटकी में मसल दूँगा। उसके हुनर की आजादी देख लूँगा, कब तक मेरे सामने टिक पायेगी ?
(एक लौंडी का प्रवेश)

लौंडी : (कोर्निश करके) शहंशाह ! सिपहसलार बेंहाकी एक जरूरी काम से मिलने आये हैं।

सुलतान : ग्राने दो।

(वैहाकी का प्रवेश)

वैहाकी : (कोर्निस करते हुए) शहंशाह सलामत ! एक जरूरी सलाह-मशविरा के लिए इस बेवक्त आपकी खिदमत में हाजिर हुआ हूँ।

सुलतान कहो क्या बात है जो तुम्हें इस बेवक्त आना पड़ा है। उस काफिर के कारण मेरी नींद हराम हो रही है। कुछ समझ में नहीं आ रहा, क्या किया जाय ?

वैहाकी हुजूर ! अफसोस है ! शहजादी हबीबा ने तहखाने में दाखिल होकर उस काफिर की मुश्कें खोल दी हैं।

सुलतान : (तेवर बदल कर) ओह ! ऐसा क्यों हुआ ? क्या पहरेदार सो रहे थे ?

वैहाकी . नही हुजूर ! गजनी के सुलतान की शहजादी को रोकना एक अदने सिपाही की हिमाकत नही हो सकती। किन्तु मुझे फौरन इत्तिला कर दी गई। अब जैसा आप हुक्म फरमाएँ, बन्दा उसे फौरन बजा लाने को तैयार है।

सुलतान · (सोचते हुए) हूँ……… तुम चार सिपाहियों को साथ लेकर, जाओ। मैं अभी आता हूँ। पहरा और कड़ा बैठा दो। काफिर निकल न जावे।

वैहाकी . जो हुक्म ! (वैहाकी सर झुका कर चला जाता है) .

सुलतान : तो बेवकूफ लड़की वहाँ पहुँच गई ! इसकी यह जुर्रत ! (सोचता हुआ) इसके पीछे क्या राज हो सकता है ? (गहरी सांस लेते हुए मेरी बच्ची-हबीबा !…… नहीं, नही ! वह ऐसी नहीं हो सकती। (आवेश मे) अगर उसने गजनी वंश को बेइज्जत किया है तो यह खंजर उसके खून को पीने मे नहीं हिचकेगा।

(तहखाने की जेल की ओर प्रस्थान)

(पर्दा गिरता है)

चतुर्थ दृश्य

(पर्दा उठता है)

समय—रात्रि का द्वितीय प्रहर

स्थान—तहखाने का भीतरी भाग

[चिराग की रोशनी मे तहखाने का भीतरी भाग दीख रहा है। शेखर एक फौलादी से बन्धा हुआ बेहोश दिखाई देता है। हबीबा का आहिस्ते से प्रवेश]

हबीबा : (आसमान की ओर दोनों हाथ किए हुए) ऐ मेरे परवरदिगार! कितना खूबसूरत इन्सान बनाया है। मगर तुम्हारे हुनर की यह बेइज्जती क्यों? क्या कसूर है इसका? मेरे मालिक! अब मुझसे रहा नहीं जाता। एक इन्सान का दर्द देखा नहीं जाता। बेशक अब्बाजान मेरा सर कलम करेंगे मगर मुहब्बत के बढते तूफाँ को कौन रोक सका है? इन्सानी जोश का तकाजा है कि मैं इस नौजवा शख्स का बन्धन तोड़ूँ (कह कर आगे बढ कर शेखर के बन्धन खोल देती है। उसे फर्श पर आहिस्ते से लिटा देती है। थोड़ी देर मे शेखर को होश आता है और हबीबा की ओर देखता है)

शेखर : हैं, मैं यह क्या देख रहा हूँ! (धीरे-धीरे बैठता है) क्या स्वर्ग की अप्सरा इस धरती पर उतर आई है? क्या मैं आजाद हूँ?

हबीबा : हाँ कलाकार! तुम आजाद हो। तुम्हारी कला आजाद है।

शेखर : तुम कौन हो? राक्षसों के राज्य मे एक दैविक शक्ति का अवतार?

हबीबा : मुहब्बत की डोर यहाँ तक खींच लाई है मुझे कलाकार! मैं सुल-तान महमूद की शहजादी हूँ। मगर तुम्हारे हुनर की गुलाम हूँ।

शेखर : शहजादी? यह आप क्या कहती हैं?

हबीबा : ठीक कहती हूँ कलाकार! मुझे तुमसे, तुम्हारे हुनर से बेहद प्यार है। मेरे पाक दिल मे मुहब्बत का दरिया ठाठें मार रहा है। मेरा रोम-रोम तुम्हारे पाक कदमों मे समा जाना चाहता है। जिसे अपने वतन से प्यार नहीं, अपने हुनर पर गुमा नहीं, वह असल इन्सान नहीं।

शेखर	शहजादी साहिबा ! मैं आपकी इस कद्रदानी का हृदय से स्वागत करता हूँ। आप जैसी देवी पाकर यह देश धन्य हो गया है। सच है प्रेम को देश की छोटी सी सीमा में नहीं बाँधा जा सकता।
(हबीबा शेखर के कदमों में गिर पड़ती है। शेखर उसे उठाने को झुकता है कि इतने मे महमूद सिपाहियों के साथ प्रवेश करता है। उसका खून खौल उठता है)

महमूद	· (क्रोधावेश में चिल्लाता है) हबीबा ! कुल कलंक ! अच्छा होता तेरी पैदाइश के साथ ही मौत हो जाती। सिपाहियो ! इस काफिर को फिर से फौलादों से बाँध दो और इसके जिस्म में आग लगा दो।

(हबीबा हड़बड़ाकर खड़ी होती है)

हबीबा	: अब्बाजान ! यह क्या करते हो ? मैं आपके कदमों में दामन फैला कर भीख माँगती हूँ। कलाकार की जान बख्श दो।

महमूद	: दूर हट ! नापाक लड़की ! मैं तेरा मुख देखना नहीं चाहता। सिपाहियो देखते क्या हो ? जला डालो इस काफिर को।

(एक सिपाही मशाल लेकर आगे बढ़ता है) हबीबा घबराई हुई शेखर के पास आती है)

हबीबा	: कलाकार ! मेरे अब्बाजान की शर्त मंजूर करलो।

शेखर	: कलाकार अपना सर्वस्व बलिदान कर सकता है किन्तु गुलामी नहीं कर सकता।

. महमूद	: (झल्ला कर) इसकी जुबां मे आग लगा दो ताकि इसका जहर उगलना बन्द हो जावे।

(एक सिपाही जलती मशाल को शेखर के मुख की ओर ले जाता है। शेखर 'जय भारत' बोलता है। इतने में हबीबा खंजर निकालकर सिपाही के सीने में भौंक देती है। सिपाही 'आह' के साथ गिर जाता है)

हबीबा	: (क्रोध मे) जब तक मैं जिन्दा हूं, कलाकार के जिस्म को कोई छू नही सकता।

महमूद	: (चिल्लाकर) हबीबा ! होश में आ ! सामने से हट जाओ वरना

तुम भी मौत के घाट उतार दी जाओगी। मेरे खून को लज्जित न करो।

हबीबा : अब्बाजान! मेरी रगो मे आपका ही खून बह रहा है। मेरी मुहब्बत····

महमूद : (बीच मे ही सिपाहियो से) इसकी भी मुश्कें बाँधकर एक तरफ पटक दो और इसकी आँखों के सामने ही काफिर को जलाओ ताकि अपने तड़पते कलाकार के नजारे देख ले।

[सिपाही हबीबा की मुश्कें बांध कर एक ओर पटक देते है। तत्पश्चात् शेखर को मशालो से जलाते हैं। शेखर बार-बार 'जय भारत' बोलता है। आग जलने से चित्कार निकलती है। अन्त मे बेहोश हो जाता है। हबीबा विवश हाथ पैर मार कर रह जाती है। धीरे-धीरे मशालों की रोशनी गुल हो जाती है। केवल एक चिराग जलता दिखाई दे रहा है। उसकी मन्द रोशनी मे शेखर का जला हुआ विरूप चेहरा दिखाई देता है। पर्दे के पीछे से मातमी धुन बजती है]

जय-यात्रा

राधामोहन जोशी

* * *

पात्र-परिचय

पुरुष पात्र			स्त्री पात्र
धर्मीचन्द	:	मध्यमवर्गीय व्यापारी (प्रौढ़ावस्था)	माया देवी : (धर्मीचन्द की पत्नी)
अजय	:	धर्मीचन्द का ज्येष्ठ पुत्र (आयु 20 वर्ष)	
अशोक	:	धर्मीचन्द का कनिष्ठ पुत्र (आयु 18 वर्ष)	

(प्रथम दृश्य)

स्थान एवं पात्र : राजस्थान का सीमावर्ती नगर बाड़मेर। धर्मीचन्द किराना बेचने वाला साधारण व्यापारी है। बड़ा लड़का अजय बी० ए० कर चुका है। कभी-कभी दूकान पर बैठता है, अधिकांश समय घर से बाहर रहता है। छोटा अशोक बी० ए० का विद्यार्थी है। अधिकाश समय अपने कमरे में घुसा रहता है और बात बहुत कम करता है। धर्मीचन्द की पत्नी माया साधारण पढ़ी लिखी आकर्षक महिला है।

समय : ३ दिसम्बर १९७१ सन्ध्या के ७ बजे हैं। बैठक में साधारण फर्नीचर लगा है। मायादेवी एक आराम कुर्सी पर बैठी है। ...

इस समय घर में वह अकेली है। मेज पर रेडियो पड़ा है। भारत-पाकिस्तान के बीच वातावरण तनावपूर्ण होने के कारण रेडियो पर समाचार सुनने की उत्सुकता माया देवी के चेहरे पर झलकती है। टन-टन-टन ... सात बजते हैं और माया देवी यकायक कुर्सी से उठकर रेडियो का स्विच ऑन करती है।

रेडियो पर आवाज सुनाई देती है—

'पिप-पिप-पिप'''यह आकाशवाणी है, अब आप रामानुजप्रसादसिंह से हिन्दी में समाचार सुनिए—

'यू० एन० आई० के संवाददाता ने समाचार दिया है कि आज शाम को ४ बजकर २० मिनिट पर पाकिस्तान के सेबरजेट विमानों ने श्रीनगर, अमृतसर, पठानकोट एवं आगरा के हवाई अड्डों पर हमला करने का असफल प्रयत्न किया। पठानकोट में दो तथा अमृतसर में १ सेबरजेट मार गिराया गया। विस्तृत समाचारों की प्रतीक्षा की जा रही है। एक विशेष सूचना सुनिए—आज अर्द्ध रात्रि में प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी राष्ट्र के नाम एक महत्त्वपूर्ण संदेश प्रसारित करेंगी। समाचार समाप्त हुए।'

माया : (स्वगत) तो आग भड़क उठी। याह्या खाँ ने आखिर अपनी हठ पूरी की। खैर, भारत अब १९६५ वाला भारत नहीं रहा, पाकिस्तान को छठी का दूध न याद आ जाय तो क्या बात हुई। देखती हूँ इन्दिरा जी आज रात में क्या कहती हैं? (अशोक कॉलेज से लौटता है और बैठक में से होकर माँ की ओर बिना देखे अपने कमरे की ओर बढ़ने लगता है। मायादेवी उसे टोकती हुई कहती है)

माया : बेटा! अशोक! देख तो बेटा! एक मिनिट मेरे पास भी बैठ जा! तू तो बस हर समय अपने कमरे में ही घुसा रहता है। तुझे दीन-दुनिया की कुछ खबर भी है?

अशोक : (परेशान सा) माँ '''मुझे काम है, बताओ जल्दी से तुम क्या कहना चाहती हो?

माया : बेटा, एक मिनिट बैठ तो कहूँ। तुझे तो बस हर समय काम ही

माई ऐहा पूत जरा, जेहा राण प्रताप,
अकबर सूतो ओझके,जाण सिराणे साँप।

और तू समूचे राष्ट्र पर संकट आने के समय ऐसी कायरता की बातें कर अपनी जननी व जन्म-भूमि दोनों को अपमानित कर रहा है ?

अशोक : माँ ! तू भी जरा सोच ! युद्ध, हत्या, मार-काट, खून-खराबा क्या कोई अच्छी बात है ? मुझे तो युद्ध-मात्र से ही घृणा है। क्या मिलता है मनुष्य को मनुष्य का खून बहाकर ? कौन कहता है मनुष्य सभ्य हो गया है ? चन्द्रमा पर पहुँच गया है और मंगल पर जाने की सोच रहा है और कहाँ धरती पर ही अपनी जंगली सभ्यता से उबर नहीं पाया।

माया : यह तो तू बहुत बड़ी-बड़ी बातें करता है बेटा ! तू बी. ए. में पढ़ता है, तेरे जितना ज्ञान तो मुझमें नहीं, पर कुरक्षेत्र के मैदान में कृष्ण ने अर्जुन से जो कहा था वे बातें मैंने भी गीता में पढ़ी हैं। अर्जुन ने युद्ध के मैदान में अपने सामने शत्रु पक्ष में अपने ही बन्धु बाधवों को देखा तो वह युद्ध से विरत होने लगा उस समय कृष्ण ने उसे कहा था-'स्वधर्मो निधन श्रेय, परधर्मो भयावह' क्षत्रिय के लिए तो सत्य की रक्षा के लिए लड़ना ही परम धर्म है, तू क्या किसी की हत्या करेगा—वे जो अधर्म की राह पर हैं, पहले से ही मृत हैं, तू तो उनके विनाश के लिए निमित्त मात्र है। उठ ! शस्त्र संभाल ! युद्धरत हो।

अशोक : माँ, यह सब गये गुजरे जमाने की बातें हैं। आज तो दुनिया सिकुड़ कर बहुत छोटी हो गई है। राष्ट्र, धर्म और जातियों के घेरे अब समाप्त हो रहे हैं। किसका राष्ट्र ? किसका धर्म ? कौन सी जाति ? हम तो सब एक हैं। सारा विश्व एक राष्ट्र है।

माया : बेटा तू तो दार्शनिकों की सी बातें करता है। अपने यहाँ एक कहावत है,'डूँगर बलती दीसे, पग बलती नी दीसे'। घर में तो आग लगी है और तू राष्ट्र, धर्म, जाति सभी एक हैं जैसी बातें करता है। यह नहीं देखता कि सभी राष्ट्र एक होने को तैयार भी हैं, कि नहीं। अभी तो एक दूसरे से टकराने की बात हो रही है, एक

का कोर दूसरा छीन रहा है। एक का हित दूसरे से टकरा रहा है। एक देश दूसरे देश में पलीता लगा रहा है और तू कहता है हम सब एक हैं। आसमान की ओर देखकर चलने वाला ठोकर खाकर गिरता है, जरा धरती की ओर देखकर चल।

अशोक : मां आखिर तू कहना क्या चाहती है? हम कर भी क्या सकते हैं? तू कहे तो एक जोशीली कविता लिख दूं, कोई आग उगलता भाषण झाड़ दूं, या कॉलेज की मैगजीन में एक धुंआधार लेख छपवा दूं। इसके अलावा हम कालेज के विद्यार्थी कर भी क्या सकते हैं?

माया : बेटा तू तो पढ़ा लिखा जवान है, तेरा दिमाग स्वस्थ है, तेरे पुट्ठे देश की रक्षा के लिए पर्याप्त स्वस्थ एवं पुष्ट हैं। बस कमजोरी कहीं है तो तेरे दिल में, अन्यथा तू मुझे यह नहीं पूछता कि हम कर ही क्या सकते हैं?

अशोक : (कुछ देर सोचकर) मां! मैं तेरा संकेत समझ गया हूँ। मुझे समझ में आ गया है कि शान्ति पाने के लिए शान्ति भंग करने वालों के खिलाफ शस्त्र भी उठाना पड़ता है, शान्ति की रक्षा भी संघर्ष से करने की जरूरत होती है। मां! मुझे धर्म ज्ञात हो गया है। अब तू शीघ्र ही मुझे नये रूप में देखेगी बस अब समय बात करने का नहीं, कर दिखाने का है। मैं चलता हूं। प्रणाम माताजी! (अशोक माया देवी के पैर छूकर हाथ सिर पर लगाता है)।

माया : चिरंजीवी हो बेटा! राष्ट्र-रक्षा में लगो, प्रसिद्ध हो! अमरत्व प्राप्त करो।

(पर्दा गिरता है)

दूसरा दृश्य

(सेठ धर्मचंद का स्वागत कक्ष। दो आरामकुर्सी कुछ दूरी से बिछी हैं। बीच में तिपाई पर रेडियो रखा है। माया देवी तथा धर्मचंद दोनों ही आराम-कुर्सी पर ठोडी का सहारा लिए उदास बैठे हुए हैं)

धर्मचंद : आज अशोक अभी तक लौटा नहीं। ग्यारह बज चुके हैं। बाजार में हलचल कुछ अधिक मच रहा है। सुना है लड़ाई छिड़ गई है।

माया : तुम तो अजय के बापू, बस तोलने-बेचने में लगे रहते हो। तुमने ठीक ही सुना है। लड़ाई छिड़ गई है। अभी पौने नौ की खबर में सुना था–पाकिस्तान ने एक साथ बारह ठिकानों पर बमबारी की है। उसके तीन हवाई जहाज गिरा दिये गये हैं। अभी आधी रात में इन्दिराजी रेडियो पर देश के नाम संदेश देने वाली हैं।

धर्मीचंद : देख अजय की माँ, हम राजस्थान की सीमा पर बैठे हैं, लड़ाई शुरू हुई है तो उसका असर सबसे पहले हम पर ही होगा। पिछली बार १९६५ में तुमने मेरे हाथ पाँव रोक लिए थे। कई छोटे-मोटे व्यापारी मालोमाल हो गये और आज लाखों के वारे-न्यारे करते हैं। एक मैं हूँ कि आज भी फटीचर का फटीचर बना रहा।

माया : यह तुम क्या कह रहे हो अजय के बापू! देश तो संकट में पड़ा है और तुम इससे फायदा उठाकर मालदार बनना चाहते हो? ऐसी ओछी बात करते तुम्हारा जी नहीं हिचकिचाता।

धर्मीचंद : देख भली आदमन। दान, दया, धर्म और देश सब पहले अपने घर से शुरू होता है। हम कुछ समर्थ हुए तो देश की सुरक्षा भी अच्छी तरह करेंगे और सुरक्षा कोष में भी कुछ बड़ी रकम दे देंगे।

माया : क्या बात कही है? वाह रे धर्मावतार! यह तो वही बात हुई कि एक हाथ से जननी जन्मभूमि की लाज लूटो और दूसरे से उसके सिर पर वस्त्र डालकर आडम्बर दिखाओ। क्या भगवान तुम्हारी इस धोखाधड़ी को नहीं समझेगा? तुम तो धर्म-कर्म के बहुत हिमायती बनते हो। सच ही है–हाथी के दाँत दिखाने के और, खाने के और होते हैं।

धर्मीचंद : तेरा तो बस वही पुराना सटराग है। अरे, यह इतने बड़े-बड़े करोड़पति, अरबपति क्या मूर्ख हैं? अधर्मी हैं? संसार इनके द्वार पर हाथ बाँधे खड़ा रहता है। तुम्हारे यह बड़े-बड़े नेता, पार्टियाँ सभी तो इनके आगे झुकते हैं, इनसे पैसे लेकर चुनाव लड़ते हैं और राज चलाते हैं। सब पहले अपना घर भरते हैं, फिर देश की बात करते हैं।

माया : अजय के बापू! इतना तो समझो कि तुम पहले जिस घर को भरने की बात कहते हो, वह घर आखिर क्या देश से बाहर

रहेगा ? सीमा पर आग लगी है, हर घर को यह लपटें छूने आ रही हैं ? बताओ तो ? मालोमाल बन कर अपने घर या परिवार को इस आग से कैसे बचाओगे ?

धर्मीचंद : तू क्या समझेगी ? बड़ा बनने के लिए बड़े-बड़े खतरे उठाने होते हैं। हमारा शहर सीमा पर है। जल्दी ही सभी चीजों के भाव आसमान छूने लगेंगे। मैं तो जल्दी ही सारी पूंजी लगा कर बहुत सारा माल इकट्ठा कर लूंगा। जल्दी ही दूने चौगने दाम मिलेंगे उसके।

माया : छी, छी, अजय के बापू ! तुम्हारे मंसूबे राष्ट्र विरोधी हैं और इस संकट की घड़ी में यह गद्दारी ! मैं कभी नहीं होने दूंगी।

धर्मीचंद : देख अजय की माँ ! इस बार मैं तुम्हें अपने आड़े नहीं आने दूंगा। तुम कैसी माँ हो जिसे अपने बच्चों के भविष्य की भी चिन्ता नहीं। मैं जो कुछ कर रहा हूँ, सब उन्हीं के लिए तो है।

माया : बड़े आये बच्चों के भविष्य की चिन्ता करने वाले, तुम्हें पता भी है, तुम्हारा बड़ा बेटा कई-कई रातें बाहर रह जाता है, आवारागर्दी करता है और कौन जाने क्या क्या नहीं करता है ? अभी कुछ दिन हुए विजय बाबू कह रहे थे कि अजय देश के कुछ खतरनाक दुश्मनों से मिलता-जुलता है। तुमने कभी इस ओर ध्यान दिया है ?

धर्मीचंद : क्यों नहीं दिया ? मैं जानता हूँ अजय भी कुटुम्ब की भलाई में मेरा हाथ बँटा रहा है। उसने कहा था- वह बहुत जल्दी कोई ऐसा व्यापार करने जा रहा है जिसमें लाखों रुपयों का लाभ होगा। ताज्जुब नहीं, किसी दिन तुम सेठ धर्मीचंद को मोटर पर घो हुए देखो।

माया : मोटर पर तो नहीं किन्तु मुझे लगता है कभी तुम्हारे अजय को फाँसी के फूले पर लटकते हुआ न देख लूँ। यह लड़का हमारे मुँह पर कालिख पोत कर रहेगा। अभी से इस पर कड़ी निगाह रखो नहीं तो लेने के देने पड़ जायेंगे।

धर्मीचंद : तुम तो अजय की माँ, मारे पर की पाला करवाने पर तुली हो। राष्ट्र धर्म, कर्तव्य सब सभी की ठेकेदारी तुमने ले रखी है। कम्बख्त हो ? देश के लिए हमने हँसते फाँसी पर लटकने वाले

भगतसिंह, राजगुरु, यतीनदास और शहीद चन्द्रशेखर के परिवार वालों को आज कौन-पूछता है। एक बार पढ़ा था कि उनको आज रोटियों के भी लाले पड़ रहे हैं।

या : बस ठहरो, अभी बारह बज रहे हैं। इंदिराजी का राष्ट्र के नाम संदेश आने ही वाला है। तुम भी सुनलो। (रेडियो का स्विच ऑन करती है। रेडियो से आवाज निकलती है–पिप....पिप ...पिप.... हमारे श्रोताओं को शीघ्र ही प्रधान मन्त्री, श्रीमती इन्दिरा गांधी के एक महत्वपूर्ण संदेश की प्रतीक्षा करनी चाहिए....पिप ...पिप.... रेडियो पर एक ट्यून बजती रहती है।)

र्मीचंद : संदेश क्या देना है ? बस वही — एक हो जाओ, मिल-जुल कर पाकिस्तान का मुकाबला करो, सुरक्षा कोष में दान दो— और क्या कहेगी, इन्दिरा गांधी ?

या : जिसकी आँखों में मोह-माया का परदा पड़ा हो उसे कुछ दिखाई या सुनाई नहीं देता।

र्मीचंद : (ठठा कर हँसते हुए) हह हह हह - क्या बात कही है ? मेरी आँखों पर तो माया देवी का परदा २५ वर्षों से पड़ा हुआ है, अब मुझे दूसरा क्या दिखाई देगा ? हह, हह, हह,...

या : करने लगे न ठिठोली ! काम की बात को भी हँसी में उड़ा देना, तुम्हारी आदत है।

र्मीचंद : अच्छा, काम की बात बताओ देवीजी। तुम क्या फरमाना जारी कर रही हो, मेरे लिए तो इन्दिरा गांधी से भी बड़ा फरमान माया देवी का है। कहो तो कान पकड़ कर दस उठ बैठ लगा जाऊँ। घर-बार बेच कर राष्ट्र की सुरक्षा में सब कुछ होम दूँ।

या : ऐसे तो हमारे भाग्य कहाँ कि राष्ट्र रक्षा के लिए सर्वस्व की बाजी लगादें किन्तु कम से कम राष्ट्र की नींव तो न हिलायें, चोर बाजारी या तस्करी से तो बाज आयें।

र्मीचंद : भली कही, माया देवीजी, मोह माया को छोड़ कर जोग कमाने का इससे अच्छा अवसर कब मिलेगा ?

अफसर विजय बाबू को सब-कुछ बता दूंगी फिर तुम जानो और तुम्हारे बेटे।

(धर्मीचंद पर यकायक आतंक व भय की छाया पड़ जाती है। गिड़गिड़ाते हुए से स्वर में कहता है)

धर्मीचंद : अरे……रे……रे · अजय की माँ यह क्या गजब कर रही हो क्या तुम अपने बेटे को और मुझे जेल भिजवाकर सुखी हो जाओगी।

माया : जब तुम ही तस्करी करके देश के अनेक परिवारों को बरबाद करने पर तुले हो और तुम्हारा बेटा राष्ट्र से गद्दारी कर अनेक ललनाओं को विधवा बना डालने पर आमादा हो तो मैं ही सुखी बनकर क्या करूँगी ? कुछ तो राष्ट्र की सेवा हो जायगी।

धर्मीचंद : (कपाल पर हाथ मारते हुए) अरे भागवान ! कुछ तो विचार कर……हे राम ! मेरे घर मे ऐसी कट्टर राष्ट्रभक्तिन भेजकर यह किन कर्मों की सजा दे रहे हो ? खैर तुम भी जब यही चाहती हो कि धर्मीचंद सदैव के लिए नाम का सेठ और घर का फकीर बना रहे तो तुम्हारी मरजी। अब हम भी तिरंगा चोला पहन कर राष्ट्र सेवा का व्रत लेंगे। संसार के बड़े-बड़े जोगी-जतियों को इस माया ने नाच नचाया है, ब्रह्माजी तक को जिसने कुमार्ग पर दौड़ा दिया उस माया देवी से यह क्षुद्र जीव धर्मीचंद कैसे पार पा सकता है। बोलो माया देवी की जय ! हाँ तो अब क्या हुक्म है देवीजी का ? अपना ।। काम-धंधा सब चौपट हुआ समझो। अब तो जो तुम कहोगी, वही करूँगा।

माया : यह नहीं अजय के बापू, यह तो तुम सी. आई. डी. को खबर करने के डर से बदल रहे हो, कल को फिर कोई ऐसा ही घोटाला करोगे। तुम्हारी वाणी बदली है, दिल नहीं।

धर्मीचंद : अरे भाई जब घर का भेदी ही लंका ढाने को तैयार है तो हम क्या करें ? तुम तो महाशक्ति का अवतार हो, कहीं मास्टरनी होती तो अच्छा था। अब तो कसम ही खानी पड़ेगी। सच तो यह है माया कि अब तक अपनी राह चलता रहा तो भी रहा फटीचर का फटीचर। अब देखता हूँ तुम्हारी राह चलकर ही कुछ हो

जाय, शायद इसीमें मेरी भलाई हो। सचाई और ईमानदारी से भी पेट भरने लायक तो कमा हो लूंगा। फिर इस जन्म में तुमसे और अगले जन्म में अपने भाग्य से वैर क्यों मोल लूं।

माया : तो फिर बताओ अब कौन सा सौदा करोगे ?

धर्मीचंद : यह भी साथ ही साथ सोच लिया है देवीजी, जानता हूं आपको पूरी कैफियत तो देनी ही होगी। सौदा तो वही करूंगा—शक्कर, मिट्टी का तेल, अनाज-सभी भरपूर मात्रा में इकट्ठी करूंगा और उचित कीमत पर कम से कम मुनाफा लेकर बेचूंगा।

माया : हां यह बात तुमने ठीक कही। राष्ट्र की सेवा करने का यह भी एक तरीका है।

धर्मीचंद : जरूर है महामाया जी‥‥‥ हर-हर-हरि करे सो खरी।

[तीसरा दृश्य]

(समय प्रात.काल ४ दिसम्बर। माया देवी घर में झाड-पोंछ कर रही हैं। धर्मीचंद गले में दुपट्टा डाले हाथ में माला लिए एक चौकी पर बैठे हैं। तभी अजय एक ओर बाहर से आता है और एकदम तेजी से दूसरी ओर घर में चला जाता है। माया उसे देख कर आवाज देती है‥‥‥‥?

माया : अजय ! अजय बेटे ! जरा इधर आना तो !

(अजय दूसरी ओर से बाहर आता है)

अजय : क्या है मां ? मुझे बहुत काम है। क्या कहती हो ?

माया : ऐसा भी क्या काम है बेटा ? तू कल सुबह से गायब था अब २४ घण्टे बाद लौटा है और अभी भी तुझे कुछ काम है।

अजय : मां, तुझे मेरे काम के बारे में क्या लेना देना है, तुम अपना काम करो।

माया : तो तू समझता है, तेरे काम के बारे में मुझे कुछ नही पता। तू आजकल क्या खिचड़ी पका रहा है यह मुझसे छिपा नही है।

अजय : (चौंक कर एकदम निकट आते हुए) बता तो ? तू क्या जानती है ? मैं भी तो सुनूं।

माया : नहीं बेटे, तुझे फुरसत नहीं है तो मत सुन पर अपनी बूढ़ी माँ की इतनी बात याद रखना कि जो तूने अपनी मातृभूमि से दगा किया तो तेरी यह माँ भी तेरी मित्र नहीं दुश्मन बन जायगी।

अजय : (पुनः चौंकते हुए) यह क्या ऊल-जलूल बक रही हो माँ। मैं क्या कर रहा हूँ – क्या नहीं कर रहा हूँ, तुम्हें क्या पता है? जरूर किसी ने तेरे कान भरे हैं।

माया : बेटा, मैं कानों की इतनी कच्ची नहीं हूँ। पर तू अपने माँ-बाप के नाम पर कलंक लगाने पर तुला है यह मैं खूब जानती हूँ। तू आजकल राष्ट्र के दुश्मनों की जी-हजूरी कर रहा है, उनके तलुए सहला रहा है।

अजय : (क्रोध से उफनते हुए) माँ—यह क्या कहती है, ताने पर ताने दिए जा रही है, खोल कर कुछ नहीं बताती? आखिर तू क्या कहना चाहती है?

माया : बेटा इतना भोला न बन। ले सुनना चाहता है तो कान खोलकर सुनले। तू पाकिस्तान की जासूसी कर रहा है। चन्द चाँदी के टुकड़ों के बदले तूने अपनी आत्मा को बेच दिया है। तुझे यदि पैसा मिले तो तू अपनी माँ को भी बेचने से नहीं हिचकिचाएगा?

अजय : (चीखते हुए) माँ....पहले मुझे यह बता कि यह सब बातें तुमसे किसने कही है? उसका नाम बता ताकि पहले उसी का हिसाब साफ करूँ।

माया : तो तू अब धमकियाँ भी देने लगा? चोरी और सीना जोरी? एक तो देश के साथ गद्दारी और ऊपर से पोल खोलने वालों को धमकी? मैं कहती हूँ बाज आजा इस देशद्रोह से? अभी भी समय है, बच ऐसे पाप कर्म से, नहीं तो तू तो डूबेगा ही अपने साथ सारे परिवार को ले डूबेगा।

अजय : (तेज स्वर में) माँ मैंने कुटुम्ब परिवार को अपने साथ बाँधा तो नहीं है। तू चाहती है तो मैं कहीं और जगह जाकर रहूँ, वैसे भी तुम लोगों को मुझ पर बेजा शक हो गया है।

माया : वह तो ठीक है, तू घर छोड़ कर चला जायगा पर क्या देश भी

छोड़ देगा ? उस मातृभूमि का त्याग कर देगा ? जिसकी मिट्टी पानी से यह तेरा शरीर बना है। उस जननी जन्मभूमि की सेवा करने के बदले तू तो उसे दुश्मनों के हाथ बेचने पर तुला है। 'जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी' कहने वाले तेरे लिए मूर्ख और पागल हैं। विदेशी शासन से देश को मुक्त करने के लिए जिन देशभक्तों ने अपने प्राण दे दिए वे मब क्या सिरफिरे थे ?

अजय · (परेशान सा होकर) बस मां, मैं यह सब बकवास सुनना नहीं चाहता। इतना जानता हूँ कि जो कुछ कर रहा हूँ अपने परिवार की भलाई के लिए ही कर रहा हूँ।

(धर्मीचंद सभी पूजा के आसन से उठकर कुर्सी पर बैठते हुए)

धर्मीचन्द बेटा कुटुम्ब की भलाई किसमें है, यह हम लोगों से ज्यादा तुम्हारी मां समझती है। कल तक मैं भी अंधेरे में भटक रहा था पर आज मेरी आंखों पर से पड़ा पर्दा हट चुका है। तू पहले इसकी बात गौर से सुनले फिर तुझे अच्छी लगे तो करना।

अजय : बाबूजी आप भी मां के बहकावे में आ गये लगते हैं। इन औरतों को मर्दों के मामले में नहीं पड़ना चाहिए। यह तो चाहती हैं कि हम इनकी गोद में छुप कर बैठ रहें नहीं तो कोई हव्वा हमको उड़ा ले जायगा।

माया . बेटा तू अपनी मां और सम्पूर्ण नारी जाति का अपमान कर उनकी अच्छी मिट्टी पलीत कर रहा है। तुम जैसे पुरुषों को जन्म देकर सचमुच में ही हम लज्जा की पात्र बनी हैं। युद्ध में चूड़ियों से जाने वाले पति और दूध लजाने वाले पुत्रों को जन्म देकर मातायें सचमुच अभागिन होती हैं। (रुँआसी हो जाती है)

अजय बस मां, बहुत हुआ। मुझे अपना काम करना है। तुम्हारे आंसू पोंछने को मैं यहां बैठा नहीं रह सकता।

माया : नहीं बेटा, तू भला मेरे आंसू क्यों पोंछेगा ? तू तो अपने आका, अमरदास पाकिस्तान के हुक्कामों की दुनिया बाट और अपने कमरे में बन्द होकर ट्रांसमीटर से समाचार दे कि देश की फौजों के महत्वपूर्ण मुकाम कहां-कहां है ? (आंसू पोंछने लगती है)

अजय : (जाते हुए पलट कर) क्या कहा ? ट्रांसमीटर ! तो बात यहाँ तक आ पहुँची है । जरूर किसी सिर फिरे ने सिखा-पढ़ा कर तुझे मेरे खिलाफ भर दिया है । सच-सच बता दे माँ यदि तू मुझे अपना बेटा मानती है और चाहती है कि मैं तुझे माँ समझकर तेरी इज्जत करूँ—कौन है वह ? जिसने तुझे यह सब बताया है ?

माया : तू क्यों किसी का नाम जानने को इतना बेताब है ? मैं तो स्वयं ही सब-कुछ पुलिस को बताने जा रही हूँ । न रहेगा बाँस न बजेगी बाँसुरी ।

अजय : क्या कहा ? पुलिस ! तो तू भी मेरे दुश्मनों से मिली हुई है । मैं नहीं जानता था, एक माँ अपनी औलाद की इतनी बड़ी शत्रु हो सकती है । यदि यह बात है तो कान खोलकर सुन लो । मैं हर आदमी को अपने रास्ते से हटाने की ताकत रखता हूँ, चाहे वह मेरी माँ हो, चाहे कोई और ।

माया : यही तो करना अब बाकी रह गया है अजय ! तू अपनी जननी-जन्मभूमि की हत्या तो कर ही रहा है अब अपनी खुद जननी को ही क्यों छोड़ता है ? ले, मैं खड़ी तो हूँ तुम्हारे सामने । निकाल दे अपनी वह पिस्तौल जो तुझे नापाकों से मिली और चीन की बनी है ।

अजय : बस-बस बहुत हो चुका ! अब भला इसी में है कि तू अपनी जबान को लगाम दे और चुप हो बैठ नहीं तो कोई अनहोनी होकर रहेगी ।

धर्मचंद : (जो अब तक आँखें बंद किये माला जपा रहे थे) बेटा, तू यह सब आखिर किस लोभ के लिए कर रहा है ? एक ओर परिवार की भलाई के लिए इतना बड़ा खतरा उठा रहा है और दूसरी ओर परिवार को ही खत्म करने की बात कहता है । तू यदि करोड़पति भी बन गया तो क्या हो जायेगा ? संसार के कई करोड़पतियों का बड़ा बुरा हश्र हुआ है । तू भी एक और उनमें जुड़ जायगा । अफसोस तो यही रहेगा कि अपने बाप-दादों और देश के नाम ऐसा कलंक लगा जायगा जो गंगा नदी के समूचे पानी से भी नहीं धुल पायगा ।

अजय : बाबूजी ! आप मुझे ऐसे समय अपने मार्ग पर बढ़ने से रोकना चाहते हैं जब मैं इस राह पर बहुत आगे बढ़ आया हूँ। इधर बढ़ता हूँ तो कुँआ है–उधर लौटता हूँ तो खाई। मुझे तो अब अपनी राह को छोड़ने का भी अधिकार नहीं रहा।

माया : यह सब तेरे बहाने हैं अजय ! मैं तुम्हे ऐसी उत्तम राह बता सकती हूँ जिस पर चलकर तुम अपनी मातृभूमि की सेवा भी कर सकते हो और दुश्मन को करारी मात भी दे सकते हो–वह भी ऐसे कि किसी को सदेह तक न हो।

अजय : बता तो माँ ! तू ऐसा कौनसा मार्ग मुझे दिखाना चाहती है जो अब तक मैं नहीं देख पाया।

माया : बेटा, बहुत छोटी सी बात है। भगीरथ ने स्वर्ग से गगा को उतार कर धरती पर अपने मनचाहे मार्ग पर बहाया, तू क्या इतनी भी नहीं कर सकता कि अपनी पिस्तौल का मुँह इधर की बजाय उधर फेर दे। काम वही कर जो अभी कर रहा है पर अपने लिए कर, अपने देश के लिए कर। जिनके लिए अभी कर रहा है उनका विश्वासपात्र बना हुआ ही है, इस तरह तू देश को बहुत बड़ा लाभ पहुँचा सकता है।

अजय : (थोड़ी देर चिंतन कर सिर झुकाते हुए) माँ ! आज मैंने जाना कि नारी को नररत्नों की खान क्यों कहा जाता है, क्यों उसे महाशक्ति कहा गया है। तूने मेरी आँखों पर पड़े अज्ञान के अधकार को चीर कर मेरा मार्ग प्रशस्त किया है। आज से तू मेरी माँ ही नहीं गुरु भी है–'तमसो मा ज्योतिर्गमय'। मुझे अँधकार से प्रकाश में लाने वाली मेरी माँ तू तो साक्षात् जगज्जनी भवानी का साकार रूप है, तुझे मेरा शत्-शत् प्रणाम ! आज से ही अजय देश के दुश्मनों लिए अजेय दुर्भेद्य दुर्ग बन जायगा। धन्य है माँ तुझे ! (चरण छूता है, तभी अशोक का प्रवेश, शरीर पर फौजी वर्दी पहनी हुई है, आते ही माँ को सैल्यूट ठोक कर उसके चरण छूता है। माया व धर्मचंद की आँखें चमक उठती हैं)

माया : अशोक बेटा–तू तो आज पहचाना ही नहीं जाता। यह क्या रूप बनाया है बेटे ?

अजय : (जाते हुए पलट कर) क्या कहा ? ट्रांसमीटर ! तो बात यहाँ तक आ पहुँची है। जरूर किसी सिर फिरे ने सिखा-पढ़ा कर तुझे मेरे खिलाफ कर दिया है। सच-सच बता दे माँ यदि तू मुझे अपना बेटा मानती है और चाहती है कि मैं तुझे माँ समझकर तेरी इज्जत करूँ—कौन है वह ? जिसने तुझे यह सब बताया है ?

माया : तू क्यों किसी का नाम जानने को इतना बेताब है ? मैं तो स्वयं ही सब-कुछ पुलिस को बताने जा रही हूँ। न रहेगा बाँस न बजेगी बाँसुरी।

अजय : क्या कहा ? पुलिस ! तो तू भी मेरे दुश्मनों से मिली हुई है। मैं नहीं जानता था, एक माँ अपनी औलाद की इतनी बड़ी शत्रु हो सकती है। यदि यह बात है तो कान खोलकर सुन लो। मैं हर आदमी को अपने रास्ते से हटाने की ताकत रखता हूँ, चाहे वह मेरी माँ हो, चाहे कोई और।

माया : यही तो करना अब बाकी रह गया है अजय ! तू अपनी जननी-जन्मभूमि की हत्या तो कर ही रहा है अब अपनी खुद जननी को ही क्यों छोड़ता है ? ले, मैं खड़ी तो हूँ तुम्हारे सामने। निकाल दे अपनी वह पिस्तौल जो तुझे नापाकों से मिली और चीन की बनी है।

अजय : बस-बस बहुत हो चुका ! अब भला इसी में है कि तू अपनी जबान को लगाम दे और चुप हो बैठ नहीं तो कोई अनहोनी होकर रहेगी।

धर्मचंद : (जो अब तक आँखें बंद किये माला घुमा रहे थे) बेटा, तू यह सब आखिर किस लोभ के लिए कर रहा है ? एक ओर परिवार की भलाई के लिए इतना बड़ा खतरा उठा रहा है और दूसरी ओर परिवार को ही खत्म करने की बात कहता है। तू यदि करोड़पति भी बन गया तो क्या हो जायेगा ? संसार के कई करोड़पतियों का बड़ा बुरा हस्र हुआ है। तू भी एक और उनमें जुड़ जायगा। अफसोस तो यही रहेगा कि अपने बाप-दादों और देश के नाम ऐसा कलंक लगा जायगा जो गंगा नदी के समूचे पानी से भी नहीं धुल पायगा।

अजय : बाबूजी ! आप मुझे ऐसे समय अपने मार्ग पर बढ़ने से रोकना चाहते हैं जब मैं इस राह पर बहुत आगे बढ़ आया हूँ। इधर बढ़ता हूँ तो कुँआ है–उधर लौटता हूँ तो खाई। मुझे तो अब अपनी राह को छोड़ने का भी अधिकार नहीं रहा।

माया : यह सब तेरे बहाने हैं अजय ! मैं तुम्हें ऐसी उत्तम राह बता सकती हूँ जिस पर चलकर तुम अपनी मातृभूमि की सेवा भी कर सकते हो और दुश्मन को करारी मात भी दे सकते हो–वह भी ऐसे कि किसी को संदेह तक न हो।

अजय : बता तो माँ ! तू ऐसा कौनसा मार्ग मुझे दिखाना चाहती है जो अब तक मैं नहीं देख पाया।

माया : बेटा, बहुत छोटी सी बात है। भगीरथ ने स्वर्ग से गंगा को उतार कर धरती पर अपने मनचाहे मार्ग पर बहाया, तू क्या इतनी भी नहीं कर सकता कि अपनी पिस्तौल का मुँह इधर की बजाय उधर फेर दे। काम वही कर जो अभी कर रहा है पर अपने लिए कर, अपने देश के लिए कर। जिनके लिए अभी कर रहा है उनका विश्वासपात्र बना हुआ ही है, इस तरह तू देश को बहुत बड़ा लाभ पहुँचा सकता है।

अजय : (थोड़ी देर चिंतन कर सिर झुकाते हुए) माँ ! आज मैंने जाना कि नारी को नररत्नों की खान क्यों कहा जाता है, क्यों उसे महाशक्ति कहा गया है। तूने मेरी आंखों पर पड़े अज्ञान के अंधकार को चीर कर मेरा मार्ग प्रशस्त किया है। आज से तू मेरी माँ ही नहीं गुरु भी है–'तमसो मा ज्योतिर्गमय'। मुझे अंधकार से प्रकाश में लाने वाली मेरी माँ तू तो साक्षात् जगज्जननी भवानी का साकार रूप है, तुझे मेरा शत्-शत् प्रणाम ! आज से ही अजय देश के दुश्मनों लिए अजेय दुर्भेद्य दुर्ग बन जायगा। धन्य है माँ तुझे ! (चरण छूता है, तभी अशोक का प्रवेश, शरीर पर फौजी वर्दी पहनी हुई है, आते ही माँ को सैल्यूट ठोक कर उसके चरण छूता है। माया व धर्मचंद की आँखें चमक उठती हैं)

माया : अशोक बेटा–तू तो आज पहचाना ही नहीं जाता। यह क्या रूप बनाया है बेटे ?

धर्मचंद : बेटा धन्य हो ! तुमने तो हम सबको पीछे छोड़ दिया।

अशोक : यह सब आपका ही आशीर्वाद है और माँ की प्रेरणा का फल है बाबूजी ! मुझे आज ही भरती कर लिया गया है और सेकिंड लेफ्टीनेन्ट का पद सौंपकर अग्रिम मोर्चे पर ट्रेनिंग के लिए जाने का हुक्म मिला है। कॉलिज की एन० सी० सी० ट्रेनिंग मेरे बड़े काम की साबित हुई है।

माया : जुग-जुग जियो बेटा, मातृभूमि के लिए सर्वस्व न्योछावर कर दो।

अजय : (दौड़ कर अशोक को गले लगाता हुआ) मेरा भाई, तूने तो छोटा होकर भी बड़े को मात दे दी। खैर मैं भी तेरे पीछे-पीछे ही आ रहा हूँ। हम सभी भारत की जय-यात्रा के पाथेय हैं।

धर्मचंद : देर आयद दुरुस्त आयद। आज मेरा जीवन धन्य हुआ मेरे दो बेटे मेरी दोनों आँखें, जननी-जन्मभूमि की सेवा के लिए समर्पित हैं। ऐसा शुभ अवसर और कब मिलेगा ? अजय, अशोक की माँ चलो हम भी मातृभूमि की विजय यात्रा में सम्मिलित होकर इस पावन यज्ञ में अपनी आहुति दें।

माया : मैं तो आपकी आज्ञा की प्रतीक्षा में ही हूँ।

धर्मचंद : हम सभी यह प्रतिज्ञा करते हैं कि हमारे जीवन का प्रत्येक क्षण अब देश के लिए है। हम सभी अपना जीवन-दान का संकल्प लेते हैं। आज से हमारी कमाई, मान, खान-पान आराम सब-कुछ राष्ट्र के लिए होगा।

सभी समवेत स्वर में : जय मातृभूमि-जय, भारत माँ
जय जय हमारी विजय यात्रा।

[पटाक्षेप]

चुनौती

नाथूलाल चोरड़िया

* * *

पात्र परिचय

रामू	: कॉलेज का एक २३ वर्षीय छात्र ।
धरम चन्द	: नगर का एक सेठ, रामू का पिता ।
धन्नामल	नगर का एक सेठ, धरम चन्द का मित्र ।
श्यामू	· रामू का सहपाठी मित्र ।
मन्त्री	: राज्य के वित्त मन्त्री ।
जज	. सेशन कोर्ट का मुख्य न्यायाधीश ।
भीखू	: एक १२ वर्षीय अनाथ बालक ।
भारत	. मानव रूप मे देश का स्वरूप ।
अकाल	: शनि, अकाल-मानव के रूप मे ।
वकील	: सरकारी वकील ।

समय : प्रातःकाल

स्थान : गांव और कॉलेज के मध्य का मार्ग

[प्रथम दृश्य]

यवनिका-उत्तोलन

[रामू अपनी पुस्तकें लिये अपने गाव के कॉलेज जा रहा है । मार्ग में एक यान पर एक छोटी सी वाटिका में विश्राम करता है । उमी समय बालक भीखू हाथ रोटी लिये एक ओर से भगा हुआ आता है और कहता है :]

भीखू : रामू दादा ! रामू दादा ! तुम यहाँ से शीघ्र भाग आओ। इधर से तुम्हारे स्कूल के दो लड़के तुमको पीटने आ रहे हैं।

रामू : क्यों ? तुम्हें कैसे मालूम !

भीखू : वे कल से ही तुमको ढूँढ रहे हैं। एक स्थान पर उन दोनों को मैंने तुम्हारी बात करते सुना है।

रामू : क्या सुना है ?

भीखू : वे कहे थे—'इस रामू के बच्चे ने कल कॉलेज में जो सेठों के खिलाफ भाषण दिया उसका ऐसा मजा चखाना है कि बच्चू उमर भर याद करे।

रामू : मैं नहीं जाता। मैंने इन सेठों को जैसा पाया वैसा गाया।

[इसी समय पर्दे के पीछे से दो अन्य कॉलेज छात्र हाथों में स्टिक लिये आते हैं और रामू का हाथ पकड़ कर कहते हैं:]

पहला : रामू ! तुझे गरीब और भिखमंगे प्यारे हैं न !

दूसरा : तो ले ! तुझे हम सेठों के धन से मालामाल कर देते हैं।

[इतना कह एक छात्र रामू का हाथ मरोड़ कर नीचे गिरा देता है और दूसरा जोर से एक चोट स्टिक की पीठ पर और एक सिर पर मारता है। रामू गिर कर तड़फड़ाता है। भीखू छुड़ाना चाहता है तो वे उसे भी मारकर उसके हाथ की सूखी रोटी छीन कर फेंक देते हैं और भाग जाते हैं]

भीखू [रामू का सिर हिलाता हुआ] रामू दादा ! रामू दादा ! हे राम ! क्या करूँ ! ये तो बेहोश हैं।

[इधर-उधर देखता है, इसी समय एक ओर से दो स्काउट्स आ जाते हैं।]

भीखू : [स्काउट्स से] ओ भाई ! मेरे रामू दादा को अस्पताल पहुँचा दो। इनको अभी-अभी दो गुण्डों ने पीट कर बेहोश कर दिया है।

[स्काउट्स अपनी लकड़ियों पर अपने कमीजों की [illegible] बनाकर तुरन्त स्ट्रेचर में डाले हैं। भीखू भी साथ में जाता है।]

[द्वितीय दृश्य]

समय : सायंकाल

स्थान : नेहरू पार्क

[पार्क में दूर एक ओर दो-तीन भिखारी बालक हाथ में सूखी रोटियाँ लिये बड़ी कठिनता से चबा-चबाकर खा रहे हैं। एक ओर से सेठ धरम चन्द और धन्ना सेठ हाथ में अंगूरों का गुच्छा लिये खाते हुए एक खाली बैंच पर बैठ कर वार्त्ता करते हैं।]

धरम चन्द धन्ना सेठ ! जैसा आपने बताया मैंने उसी भाँति मुनीम को घी में मिलावट की बात समझा दी है।

धन्नामल : सेठ साहब ! इस मिलावट से ही काम नहीं चलने वाला है। यही एक अकाल का सुनहरा अवसर है कि हम चाहे तो मालामाल हो सकते हैं। इस समय सड़ी-गली, सभी प्रकार की सामग्री आसानी से निकल जाती है।

धरम चन्द : तो आप बताओ कि अब आगे क्या करना है ?

धन्नामल : करना क्या ? सड़ी गली मिरचों पर अच्छा लाल रंग छिड़कवा दो और आटे में सोप स्टोन, घी के डिब्बे में सर्दी में नीचे चौथाई पानी, काली मिर्चों में पपीते के बीज, गेहूँ में कंकड़, चावलों में सफेद पत्थर के छोटे-छोटे टुकड़े और शक्कर में खाद मिलवा कर डिब्बे और बोरियाँ भरवा दो।

धरम चन्द · परन्तु यह सब निकालोगे कैसे ?

धन्नामल आप चिन्ता न करें। इनकी निकासी के लिए मैंने सभी साँठ-गाँठ कर रखी है।

भिखारी : ए बाबू ! एक पैसा दे दे। भूख लग रही है। कल से एक सूखी रोटी का टुकड़ा ही खाया है।

धन्नामल : (लात उठाकर), हट पाजी ! यहाँ क्या तुझ भुखमरे के लिए कमा रहे हैं ? (दोनों सेठ अंगूर खाना प्रारम्भ करते हैं और बातें करते जाते है।)

धन्नामल : सेठ साहब ! एक काम और करिये। अभी सभी प्रकार के नाज

को गोदाम में भरते रहिये। दो गोदाम माल मेरे यहाँ भी इकट्ठा हो गया है। भगवान प्रकाश में दूनी कीमत आ देगी।

(दोनों एक कुल्हड़ी पीते हैं शराब निकलने में फेंक देते हैं। भिखारी बालक भीख और कौओं की भाँति उस पर झपटते हैं। झटपटकर खाने लगते हैं।)

धरम चन्द ठीक है सारी स्टॉक कर लेंगे। परन्तु धन्ना सेठ एक बात ध्यान रखना कि कहीं मेरे लड़के राजू को यह सब भेद नहीं मालूम हो जाय। आजकल वह आवारा सी बातें करने लग गया है।

धन्नामल आप चिन्ता न करें। मुझे मालूम है। उसका प्रबन्ध करा रखा है। अब चलें। (दोनों के प्रस्थान के समय एक भिखारी पैसा माँगता-माँगता साथ-साथ भागता है। धन्ना सेठ धक्का देकर उसे वहीं गिरा देता है।)

(दूसरी ओर से एक बाबू जी एक हाथ में मिठाई का डिब्बा और एक हाथ में अपने टॉमी कुत्ते के गले की चेन पकड़े आते हैं। कुत्ता भी साथ में आता है।)

भिखारी : बाबू साहब ! कुछ खाने को हमको भी दो। कल से कुछ नहीं खाया है।

बाबू जी : (टॉमी को डिब्बे में से मिठाई खिलाते हैं।) हट कुत्ते ! तुम्हारे पेट भरने का क्या हमने ठेका ले रखा है ? दीखता नहीं ! यह मिठाई तो मेरे टॉमी राजा के लिये है।

(फिर टॉमी को मिठाई हाथ से खिलाता है। भिखारी बालकों का जी ललचाता है। एक बालक कुत्ते के मुँह में से झपटना चाहता है। बाबू साहब उसे एक लात लगाकर गिरा देते हैं।)

बाबू जी : हट कमीने ! कहीं तेरी बीमारी मेरे टॉमी राजा को लग जायगी।

भिखारी : बाबू जी मिठाई नहीं, रोटी नहीं, तो कुछ पैसा तो दे दो। रात को फुटपाथ पर बहुत ठंड लगती है। ओढ़ने को एक फटा-टूटा कम्बल खरीदेंगे।

बाबू जी : [लात मारकर] हट सामने से ! सर्दी लगती है तो हम क्या करें

पैदा क्यों हुआ ? [यह कहकर अपने टाँगों को लिए प्रस्थान। भिखारी 'ऐ ! बाबू' की आवाज करते रहते हैं।]
[इसी समय एक ओर से रामू और श्यामू का, हाथ में कुछ फल, कुछ रोटियाँ लिये प्रवेश। भिखारी बालक उसे देखते ही उसकी जय बोलते हैं।]

भिखारी : [उछलते हुए] रामू दादा की जय !
[रामू और श्यामू भिखारियों में रोटी और फल वितरण करते हैं। भिखारी आनन्द से खाने लगते हैं। रामू और श्यामू बातें करने लगते हैं।]

रामू : तो श्यामू ! धन्ना सेठ ने क्या उत्तर दिया ?

श्यामू : रामू भैया ! उसने नाज का एक दाना भी दान में देने से मना कर दिया है। कहने लगा—'इस भीषण अकाल में हमारे पास कहाँ नाज है ?

रामू : फिर क्या कार्यवाही की ?

श्यामू : वही की जिसकी पूर्व निश्चित योजना बना रखी थी।

रामू : तो क्या धन्ना सेठ के मालगोदाम का पता लग गया ?

श्यामू : हाँ रामू भैया ! लग गया। उसने अपने मालगोदाम मोटर गैराज के नीचे बना रखे थे। हमारे लोगों ने बड़ी होशियारी से पता लगाकर लूट लिया।

रामू : बहुत अच्छा ! पशुओं के लिये घास का क्या किया ?

श्यामू : घास के लिए पता लगा कि—'प्रतापगढ़ रावजी के यहाँ करीबन् डेढ़ सौ ट्रक घास एक घास-घर में भरा हुआ है।'

रामू : फिर क्या किया ?

श्यामू : यह किया कि सारा घास बाहर निकलवा लिया और पशुओं को डलवा दिया। जब रावजी के आदमी आये तो किसानों ने उन्हें पकड़ लिया।

रामू : ठीक किया। देखो श्यामू ! अब हमें योजना-बद्ध काम करना

होगा; क्योंकि अधिकारी और धनिक हमारे काम में विघ्न डालने लग गये हैं।

[बाहर से भीखू का प्रवेश]

भीखू : रामू दादा ! रामू दादा !

रामू : क्या है रे !

भीखू : रामू दादा ! कलटर साब के यहाँ कई आदमियों ने उनकी लड़की की शादी के भोजन की सब मिठाई और खाना झपट लिया और खा रहे हैं। पुलिस वाले उनको पीट रहे हैं।

रामू : [आश्चर्यपूर्वक] अच्छा ! तुम चलो। मैं सब सम्भाल लूँगा [बालक का प्रस्थान] श्यामू ! अब बड़े ढंग से काम करना होगा। इधर गरीबों की भूख बढ़ गई है और दूसरी ओर ये धनी मानी हमारे पीछे लग गये हैं।

श्यामू : रामू भैय्या ! किसानों की खेती भी पानी के अभाव में सूखी जा रही है।

रामू : देखो ! यदि अधिक ही हानि होती दीखे तो बाँध की मोहरी खुलवा देना।

श्यामू : ठीक है। मैं देख लूँगा। मैं जाऊँ ? [जाना चाहता है।]

रामू : और सुनो ! एक संकेत और कर देना कि जिन गरीब किसानों के पास खेती की भूमि का अभाव है वे पड़त जमीन तथा जिनके पास भी अधिक भूमि देखें, अपनी ओर से बोवाई कर दें।

[श्यामू का प्रस्थान]

रामू : [भिखारी बालकों से] देखो अब तुम लोग भी भीख माँगना छोड़ दो। काम वालों से काम माँगो। कुछ काम कर मेहनत से पेट भरना सीखो। आज से ही अपने को भिखारी कहलाना बन्द कर दो। जाओ अभी से ही काम की तलाश में घूमना प्रारम्भ करदो।

भिखारी : अच्छा रामू दादा ! आज से हम ऐसा ही करेंगे।
[एक ओर से भिखारी बालकों का प्रस्थान, दूसरी ओर से रामू के पिता धरमचंद का प्रवेश]

[पिता को देखते ही रामू खड़ा होकर दृष्टि नीचे कर एक ओर खड़ा हो जाता है।]

धरमचन्द : [क्रोधपूर्वक] रामू !!

रामू : [सिर नीचा किये] जी पिताजी !

धरमचन्द : [फिर क्रोध से] जी पिताजी के बच्चे ! मैं जानता था कि तेरी आवारागर्दी एक दिन घर को बर्बाद कर देगी।

रामू : नहीं, पिताजी ! आप मुझे गलत समझ रहे हैं।

धरमचन्द : [और अधिक आवेश में] चुप रहो ! तुम्हें विदित होना चाहिए कि तुम्हारे ही कारण धन्ना सेठ का मालगोदाम लूटा जाने से हम भी बर्बाद हुए हैं।

रामू : बर्बाद नहीं, पिताजी ! उस अन्न से तो गरीबों की आत्मा बड़ी शान्त हुई है। बड़ा शुभ काम हुआ है।

धरमचन्द : रामू !··· मैं तुम्हें कई बार निर्देश कर चुका हूँ कि तुम्हारा यह रवैया ठीक नहीं है।

रामू : पिताजी, आप चिन्ता न करें। गरीबों को दिया दान कभी व्यर्थ नहीं जाता। आप भी स्वेच्छा से गरीबों को कुछ दान दे दीजिये।

धरमचन्द : [उग्र होकर] चुप रहो ! मुझे तुम्हारे धर्मोपदेश सुनने की आवश्यकता नहीं। छोटे मुँह बड़ी बात करते तुम्हें शर्म नहीं आती ! पहले तो कुछ आवाराओं के साथ मिलकर अपनी पढ़ाई बर्बाद की। फिर अपनी पिटाई कराई और अब शायद जेल जाने की तैयारी कर रहे हो। तुम्हें विदित होना चाहिए कि कॉलेज से भी तुम्हारा पत्ता कट गया है।

रामू : पिताजी ! देश के गरीब और अनाथ के लिए जेल तो क्या जिन्दगी भी देनी पड़ेगी तो भी दूँगा।

धरमचन्द : ओ धर्मराज के बच्चे ! कल तेरे मुँह में मक्खियाँ घुसेंगी, उस समय क्या ये अनाथ और भिखमंगे तेरा पेट भरेंगे ?

रामू : पिताजी ! गरीबों का भला किसी स्वार्थ-भावना से नहीं किया जाता है।

धरमचंद : ओ निस्वार्थ के पुतले ! तुझे क्या मालूम कि पैसा किस भाँति कमाया जाता है ।

रामू : पिताजी ! यह मैं यथार्थ जानता हूँ कि उस कमाई के पैसे से कभी भला नहीं हो सकता जिसमें गरीबों की हाय हो ।

धरमचंद : रामू ! भलाई-बुराई, पाप और पुण्य, मैं अच्छी तरह से जानता हूँ ।

रामू : पर पिताजी ! देश के गरीब और अनाथ दाने-दाने के लिये विवश हों । जन-साधारण कमर-तोड़ महँगाई के कारण पेट काट रहे हों । ऐसी दशा में सेठ-साहूकार कालाबाजारी करें, भ्रष्टाचारी करें, संग्रह-वृत्ति अपनायें । यह पाप नहीं तो क्या है ?

धरमचंद : ऐसा दिखाई दे रहा है कि तुम्हारे मस्तिष्क में विकृति आ गई है ।

रामू : हाँ पिताजी ! लोभ और स्वार्थ में डूबे हर मदान्ध व्यक्ति को आजकल मैं ऐसा ही दिखाई दे रहा हूँ ।

धरमचंद : [अत्यन्त ही क्रोधपूर्वक] रा मू ! मुझे विवश मत करो कि मैं तुम्हारे साथ कुछ अनुचित व्यवहार कर बैठूँ ! तुम मेरी इकलौती सन्तान हो । न ⋯ हो तो ⋯ ⋯?

रामू : नहीं तो क्या ? पिताजी यही न कि मुझे घर से निकाल देंगे ! गुण्डों से पिटवाते ! जेल में डलवाते !

पिताजी ! आप जरा विचार करें । आज प्रकृति-प्रकोप ने जन-साधारण के जीवन को अस्त-व्यस्त कर दिया है । जन-जन में त्राहि-त्राहि मची हुई है । आज जीवन मौत से संघर्ष कर रहा है ।

धरमचंद : ओ नादान लड़के ! तू अपनी यह निरर्थक बकवास उन भिख-मंगों के सामने करना । कान खोलकर सुन ले ! आज के बाद इस घर का द्वार अब तेरे लिये बन्द समझ !

[इस कथन के साथ ही धरमचन्द जाना चाहता है परन्तु सामने से पुलिस इन्सपेक्टर आता है और कहता है ।]

इन्सपेक्टर : [धरमचन्द से] क्षमा करें, सेठ साहब ! मैं मि. रामू को गिरफ्तार करने आया हूँ । इनके विरुद्ध शान्ति भङ्ग और बगावत का

आरोप है। [रामू से] आपको पुलिस स्टेशन पर चलना होगा। [रामू आगे हो जाता है, इन्सपेक्टर रामू के पीछे और दूसरी ओर से धरमचन्द जाता है।]

(पर्दा गिरता है)

[तृतीय दृश्य]

समय : मध्याह्न

स्थान : न्यायालय

[न्यायाधीश सामने एक ऊँची कुर्सी पर बैठे हैं। न्यायाधीश के बाँई ओर रामू और सामने सरकारी वकील खड़ा है। सामने बैंच पर पुलिस इन्सपेक्टर एवं दो अन्य वकील बैठे हुए हैं।]

न्यायाधीश : [रामू से] रामू! तुम्हारा अपना कोई वकील है?

रामू : जी, कोई नहीं।

न्यायाधीश : ठीक है। अभियोग की सुनवाई प्रारम्भ हो।

सरकारी वकील माई लॉर्ड, रामू के विरुद्ध ठोस प्रमाण प्राप्त हो चुके हैं कि इसने ही सेठ धन्नामल के मालगोदाम की लूट कराई।

न्याया० : रामू! तुम अपने पक्ष में कुछ कहना चाहते हो?

रामू : जी, कुछ नहीं।

स० वकील : माई लॉर्ड! यही नहीं, कलक्टर साहब के यहाँ जो भोज-सामग्री लूटी गई, उसमें भी इसी का हाथ था।

न्याया० : रामू! इस सम्बन्ध में कुछ कहना चाहते हो?

रामू : जी कुछ नहीं।

स० वकील : माई लॉर्ड! रामू शान्त रहकर कोर्ट पर अपनी भावुकता का प्रभाव डालकर लाभ उठाना चाहता है। परन्तु प्रमाण द्वारा यह सत्य सिद्ध हो चुका है कि यह अभियोगी है। अत: इसे ऐसा दण्ड दिया जाय कि कोई भी भावुक व्यक्ति भावावेश में आकर कुछ भी अनहोनी करने का साहस न कर सके।

न्याया० : रामू! तुम्हें अपने पक्ष में कुछ कहने का एक अवसर और दिया जाता है।

रामू : धन्यवाद जज साहब ! मुझे और तो कुछ नहीं, केवल य... है कि क्या वे धनी-मानी नियम की दृष्टि में अभियोगी ... नहीं हैं ? जो इस भीषण दुर्भिक्ष के समय नाज के ... ब्लेक मार्केटिंग करें, भाँति-भाँति की मिलावट करें, ... निवासी करालें, अपने कुत्तों का मिठाइयों से पेट भरें ... दीन मानव-बच्चा घास और भूसे की रोटियों से, चील-कौ... कुत्तों की भूँठन से अपना पेट भरे। जज साहब !......... पतन की पराकाष्ठा हो चुकी है।

(बेंच पर बैठे वकील और पुलिस इन्सपेक्टर काना-फूँसी ... और स्वीकृति-सूचक आश्चर्य प्रकट करते हैं। न्यायाधीश ... पूर्वक सुनते हैं। इसी मध्य सरकारी वकील टोकता ... कहता है।)

स० वकील : माई लॉर्ड ! यह न्यायालय के विरुद्ध है कि अभियोगी राम... दीन भावों को नाटकीय-ढङ्ग से प्रस्तुत कर अपराध को ... बनाने का प्रयास करे। इसे बोलने से रोक दिया जाय।

(इसी समय बैन्च पर से एक वकील खड़ा होकर कहता है—... इसे कहने दिया जाय।')

न्याया० : *हाँ रामू ! तुम अपना कथन जारी रखो।*

रामू : धन्यवाद ! जजसाहब ! आज धनिक तथा उच्चाधिका... दुर्भिक्ष की इस भीषण विभीषिका में विलास-केन्द्रों में, क्ल... रेस में, मध्य-भोज में तथा शानदार अट्टालिकाओं में ... मनायें, उनके कुत्तों के लिये गर्म और शरद्-गृह हों और वह ... साधारण नग्न-देह, भूखे-पेट गन्दी बस्तियों और फुट-पाथ ... ठिठुर-ठिठुर कर, बिलख-बिलख कर अपनी जिन्दगी के दिन ... यह है हमारे देश का नियम और नैतिकता।

[बेंच पर बैठे वकील और इन्सपेक्टर फिर आश्चर्य करते हैं।]

न्याया. : रामू ! तुम कहना क्या चाहते हो ?

रामू : जी, यही कि इस अभूतपूर्व खाद्यान्न-संकट की अनुभूति ... तब हो सकती है जबकि वे इस दया-प्रहार की ...

कल्पना स्वयं अपने ऊपर करें। आज अकाल गरीबों को मृत्यु की चुनौती दे रहा है। देश का गरीब आज किंकर्त्तव्यविमूढ़ है। उसका जीना दूभर हो रहा है और यह उच्च-वर्ग दिन-प्रतिदिन उनके प्रति क्रूर एवं निर्दयी होता जा रहा है। आज समग्र जन-जीवन और पशु सन्त्रस्त हैं। उच्च-वर्ग में उनके प्रति सहानुभूति का एक शब्द कहने वाला भी नहीं। उनके समर्थक जेल में ठूँसे जाते हैं, अभियोग लगाये जाते हैं। जज साहब ! ……… ….

[इसी समय न्यायाधीश शांत रहने का संकेत करते हैं।]

न्याया० : [रामू से] शान्त ! शान्त ! [जूरी से] मैं जूरी से अपील करता हूँ कि वे मि. रामू के अभियोग पर ध्यानपूर्वक विचार करें।

[बेंच पर बैठे वकील और इन्सपेक्टर आपस में काना-फूँसी करते हैं, फिर कुछ लिखते हैं। बाद में एक वकील खड़ा होकर वह कागज न्यायाधीश को देता है। न्यायाधीश पढ़कर कहता है।]

न्याया० : [निर्णय सुनाने के पूर्व पर्दे के पीछे से 'रामू दादा को रिहा करो' के नारों की तीन-चार बार आवाज आती है। उसी समय न्यायाधीश निर्णय सुनाता है।] जूरी के निर्णय एवं जन-हित की दृष्टि से रामू को मुक्त किया जाता है और चेतावनी दी जाती है कि भविष्य में भावोत्तेजनावश कभी भी कोई भी अनुचित कदम नहीं उठावेगा।

[निर्णय के तुरन्त बाद न्यायाधीश खड़े हो जाते हैं। सभी खड़े हो जाते हैं। एक-एक कर सभी का प्रस्थान, रामू वहीं खड़ा रहता है। उसी समय वित्तमन्त्री, धरम चन्द, श्यामू और दो अन्य नेताओं का प्रवेश। श्यामू आगे बढ़ रामू के गले में पुष्प माला डालता है। सभी बैठ जाते हैं। मन्त्री रामू को अपने पास बैठाते हैं। रामू सबको नमस्कार करता है।]

वित्तमन्त्री : भाई रामू ! तुमने तो जन-जन को जागृत कर दिया। इस क्षेत्र का बच्चा-बच्चा आज तुम्हारी ओर दृष्टि लगाये बैठा है। आज उनके हितैषियों का अभाव है। जन हित के पक्ष में तुम्हें अभियोग से भी मुक्ति मिल गई। मेरी भी बधाई स्वीकार करो और देश के इस विपत्ति-काल में राज्य में एक 'असामयिक विपत्ति-कोष' की

स्थापना की है उसमें तुम्हें सचिव पद पर मनोनीत किया गया है अतः इस निर्णय को भी स्वीकार करो।

राम : मन्त्री महोदय ! इस कोष स्थापना हेतु तो मैं आपका आभारी, परन्तु इसके सचिव पद हेतु आप किन्हीं वृद्ध अनुभवी को नियत करते तो अधिक उचित होता। मैं तो दीन-हीन की सेवार्थ सर्वदा प्रस्तुत हूँ।

वित्तमंत्री : नहीं रामू, इस पद पर किसी जागृत नवयुवक की ही आवश्यकता है। और तुम इस हेतु सर्वभांति उपयुक्त तथा योग्य हो। बापू बाजार में इस हेतु एक कार्यालय की भी व्यवस्था की जा चुकी है। तुम्हें शीघ्र इस जन-हित कार्यालय को सम्भालना है।

श्यामू : रामू भैय्या ! हम सब उस कोष के सक्रिय सदस्य बन जायेंगे। आप स्वीकार करलें।

रामू : आज्ञा शिरोधार्य !

वित्तमंत्री : धन्यवाद ! (धरमचन्द से) सेठ साहब ! यह मान्य है कि हमारा देश घोर संकट की घड़ियों में गुजर रहा है। ऐसी विकट दशा में हर व्यक्ति का कर्त्तव्य है कि वह तन-मन-धन से दीन-हितैषी रामू के हाथ मजबूत करे।

धरमचन्द : मैं स्वीकार करता हूँ मंत्री महोदय ! आज मैं लज्जित हूँ कि हमने रामू को नहीं समझा। यद्यपि यह मेरा लड़का है परन्तु इसने हम सबकी आंखों का पर्दा हटा दिया।

वित्तमंत्री : सेठ साहब ! यह आपका नौनिहाल रामू गांव-गांव और घर-घर का रामू बन गया है। आज समग्र बाल-युवा इसके संकेत पर उमड़ पड़े हैं।

रामू : मंत्री महोदय ! आज आवश्यकता इस बात की है कि देश का हर नागरिक चाहे धनिक हो या गरीब, अधिकारी हो या सहायक, नेता हो या मजदूर, सभी अपने कर्त्तव्य का पूर्ण जिम्मेदारी एवं नैतिकतापूर्वक पालन करें। महोदय ! जब तक समाज और सरकार के हर क्षेत्र में व्याप्त इस भ्रष्टाचारी-वृक्ष को निर्मूल नहीं

कर दिया जाएगा तब तक इस भुखमरी और अनैतिकता का विष-वृक्ष सर्वदा फलता रहेगा।

मंत्री : मैं स्वीकार करता हूँ रामू ! पर युवा पीढ़ी को चाहिये कि वह इस जन साधारण का मनोबल ऊँचा बनाये रखे।

श्यामू : उसके लिये हम सभी जी-जान से प्रस्तुत हैं पर महोदय, सरकार की ओर से भी विभिन्न प्रकार की क्षेत्रीय विकास योजनाएँ लागू की जायं। भूमिहीनों को भूमि और अपाहिजों को भोजन दें।

मंत्री : भाई ! मैं राज्य की ओर से सभी प्रकार का सहयोग दिलाने का वादा करता हूँ।

रामू : परन्तु मंत्री महोदय, आज धनिक एवं उच्च वर्ग को भी व्यावहारिक धरातल पर लाने की आवश्यकता है। अन्यथा भारत की मानव-संरक्षक की जो कीर्त्ति विश्व-विख्यात है वह बालू की दीवार की भाँति ढह कर ढेर हो जायेगी और विदेशी राष्ट्र हम पर कीचड़ उछालेंगे। व्यंग्य करेंगे।

मंत्री : नही ऐसा कभी नही होने दिया जायगा। मैं वादा करता हूँ कि इस भीषण दुष्काल मे किसी को भी मौत के मुँह मे नही जाने दिया जायेगा।

रामू : तो महोदय ! आप निश्चित मानिये कि देश मे एक भिखारी भी ढूँढने पर नही मिलेगा। जन साधारण का हर बाल-युवा-स्त्री-वृद्ध, श्रम के आधार पर अपना पेट पालन करेगा।

मंत्री : रामू !.... तो यह भारत फिर से सोने की चिड़िया हो जाएगा। अच्छा चलें। तुम अपना कोष-कार्यालय शीघ्र सम्भाल लेना।

[मंत्री उठता है, सभी उठते हैं। आगे-आगे मंत्री, पीछे सेठ, रामू, श्यामू सभी का प्रस्थान]

[पर्दा गिरता है।]

ooo

देश का मोह

मंडलदत्त व्यास

* * *

(करीम नवमी कक्षा का छात्र है। पाठशाला से लौटकर अपनी अम्मी से होमगार्ड की ट्रेनिंग में जाने के लिए कहता है।)

अम्मी : नहीं-नहीं, मैं तुम्हें होमगार्ड की ट्रेनिंग में नहीं जाने दूंगी।

करीम : क्यों ? अम्मी।

अम्मी : मैंने तुम्हे शिक्षा ग्रहण करने के लिए पाठशाला भेजा है। गार्ड बनने के लिए नहीं। मेरी इच्छा है कि तू पढ़-लिख कर डॉक्टर बने।

करीम : (हँसकर) अम्मी मैं रेल का गार्ड बनने नहीं, होमगार्ड की ट्रेनिंग में जाना चाहता हूँ। इस ट्रेनिंग में अपनी तथा देश की सुरक्षा के नियमों को बतलाया जाता है ताकि समय आने पर अपनी तथा देश की रक्षा कर सकूँ।

अम्मी : देश की रक्षा करने के लिए तू ही बच गया है सो ट्रेनिंग में जायेगा? तेरी कक्षा के अन्य विद्यार्थी चले जायेंगे।

करीम : अगर सभी माताएँ ममता का मोह नहीं छोड़ेंगी तो क्या देश की रक्षा करने वाला कोई नहीं रहेगा ? मैंने सोचा कि मेरी अम्मी हँसते-हँसते कहेगी कि जा बेटा, आज के होनहार बालकों पर देश की जिम्मेदारी आयेगी तब मेजर शैतानसिंह, अब्दुल हमीद की तरह रक्षा करेंगे। परन्तु तुमने..........।

अम्मी : मेरे सामने हठ कर रहा है। जीभ चलाता है। आने दे अपने अब्बा को, वही तेरी खबरगिरी लेंगे। मैं यह नहीं समझती थी कि तू मेरे सामने बड़ी-बड़ी बातें करेगा। मैं जाने के लिए मना कर रही हूँ और तू जिद् कर रहा है।

करीम : मैंने ऐसी कोई बात नहीं कही जिससे कि आपका अपमान हो मैंने आज तक आपकी इज्जत की है और करूंगा। माँ की रक्षा करने वाला ही देश की रक्षा कर सकता है। देश की होमगार्ड की ट्रेनिंग जरूर करूंगा। मैं फालतू बात करता तो आप मुझ पर बिगड़ती।

अम्मी : अच्छा ! तू ठहर, आने दे तेरे अब्बा को, वही तुझे समझायेंगे।

करीम : अब्बा ? कभी भी मना नहीं करेंगे। अब्बा तो खुशी-खुशी यही कहेंगे कि जा बेटा देश की रक्षा के लिए तेरे दादाजी, चाचाजी तथा मैंने सेवाएँ की है, तू भी कर !

अम्मी : हाँ-हाँ ! चाचाजी, दादाजी सभी देश के लिए शहीद हो गये परन्तु तू मेरा इकलौता बेटा है इसलिए ही मना कर रही हूँ।
(बातों ही बातों में करीम के अब्बा आ जाते है।)

अब्बा : (करीम से) क्या बात है ? कौनसी बात को लेकर माँ-बेटे कहा-सुनी कर रहे हो ?

करीम : अब्बा, मैं पाठशाला की ओर से होमगार्ड की ट्रेनिंग में जाना चाहता हूँ।

अब्बा : जरूर....जरूर मेरे सपूत। मैं इसी दिन की राह मे था कि देश हेतु उमंग तुम्हारे हृदय मे उमड़े। आखिर वंश का खून रंग लाया ही। देश....मादरे वतन भारत, उसकी रक्षा करना हर भारतीय का फर्ज है।

अम्मी : क्या हमने ही देश की रक्षा का भार लिया है ? मेरा इकलौता पुत्र होमगार्ड की ट्रेनिंग ले और अपने पूर्वजों की तरह देश के लिए शहीद हो जाये ? मैं ऐसा कभी नहीं करने दूंगी।

अब्बा : (क्रोध में) कैसी बातें कर रही हो ? ऐसी बातें करते हुए तुम्हें शर्म नहीं आती ? करीम की अम्मी तुमने उस धरती पर जन्म लिया जहाँ की माताओं ने अपने पुत्रों को देश के लिए अर्पण कर दिया।

दुर्गावती ने अपने वीर पुत्र नारायण को सोलह वर्ष की उम्र में ही युद्धभूमि में भेज दिया। जिस धरती की नारियों ने केवल स्वामी-भक्ति हेतु पुत्र के प्राण न्यौछावर कर दिये, उस पन्ना का नाम भूल गई हो? क्या उसके इकलौता पुत्र नहीं था? देश पर कुर्बानी देने वाले मर कर भी अमर हो जाते हैं जैसे शहीद भगतसिंह तथा सोहनलाल। तुम्हारी तरह सभी माताएँ ममता का मोह रखेंगी तो देश का मोह कौन रखेगा? करीम की अम्मी गर्व कर अपनी औलाद पर जिसके मन में देश का मोह है। मैं अपने भाग्य पर तभी गर्व करूँगा जब कि तू अपने मुँह से करीम को ट्रेनिंग में जाने के लिए सच्चे मन से कहेगी।

अम्मी : (भावना की मुद्रा में) मुझे माफ करना करीम के अब्बा, मैं ममता के मोह में बंधी हो गयी थी। आपने मेरी आँखें खोल दी। मैं करीम को हँसते-हँसते सच्चे मन से विदा करूँगी।

अब्बा : करीम की माँ, इस प्रकार की औरतों पर देश को गर्व है जो कि आन के लिए सर्वस्व त्याग देती हैं परन्तु पीछे नहीं हटतीं।

करीम : अब्बा, मुझे आप पर गर्व है। आपको विश्वास दिलाता हूँ कि मैं होमगार्ड की ट्रेनिंग कर देश का रक्षक बनूंगा। देश की सेवा करने वाला ही सच्चा लाल होता है क्योंकि माँ केवल जन्म देती है, धरती माता पालती है? उसी धरती माता की रक्षा करके आपका तथा अम्मी का सिर ऊँचा करूँगा। मैं उन बलिदानियों के नाम पर कभी भी कलंक नहीं लगने दूँगा जिन्होंने देश के लिए सिर कटवाया परन्तु झुकाया नहीं।

●●●

हड़ताल

रमेश भारद्वाज

* * *

पात्र-परिचय

१. प्रधानाध्यापक
२. वर्मा—एक अध्यापक, विजय के पिता
३. हैडकान्सटेबुल
४. विजय—प्रमुख छात्र नेता
५. विजय की माँ
   - दो अध्यापक
   - एक चपरासी
   - प्रदीप, नीलम, गणेश, सुभाष, नरेन्द्र आदि—छात्र नेता।
   - डाक्टर एवं कम्पाउण्डर।

प्रथम दृश्य

स्थान : विद्यालय का एक प्रकोष्ठ।

समय : ११.०० बजे पूर्वाह्न।

दृश्य : प्रकोष्ठ में १५-२० डेस्के व स्टूलें इधर-उधर बेतरतीब पड़ी हुई हैं। दस-बारह विद्यार्थी उपस्थित हैं। तीन विद्यार्थी खड़े हैं शेष उन्हीं स्टूलों और डेस्कों पर इधर-उधर बैठे है। विद्यार्थियों की मुख मुद्रा आवेशपूर्ण है। एक विद्यार्थी जिसका नाम विजय है, रोषपूर्ण मुद्रा में मुट्ठियाँ बाँधे, बाँह चढ़ाये खड़ा है। प्रदीप और नीलम उसके पास खड़े हैं। गणेश, सुभाष, नरेन्द्र आदि बैठे हैं।

प्रदीप : तो प्रधानाध्यापक जी ने हमारी माँगें पूरी नहीं की ?

विजय : (हाथ उठा कर मुक्का तानते हुए) बिल्कुल नहीं, बिलकुल नहीं। उन्होंने विद्यालय से निकालने की धमकी और दी है।

नीलम : (साश्चर्य) अच्छा ! तब तो कुछ करना ही होगा।

गणेश : (खड़े होते हुए उत्तेजनापूर्वक) क्यों नहीं ! क्या हम भेड़-बकरी हैं ? यदि वे इतनी साधारण सी माँगें स्वीकार नहीं करते तो हमें सीधी कार्यवाही करनी ही होगी।

प्रदीप : सीधी कार्यवाही से तुम्हारा क्या मतलब है गणेश ?

विजय : यही कि हड़ताल जारी रखी जाय, विद्यालय में तोड़-फोड़ की जाय, किसी भी अध्यापक का कहना नहीं माना जाय। और.........

नीलम : (बात काटते हुए) और यदि वे समझाने-बुझाने की कोशिश करें तो ?

विजय : उनकी कोई बात नहीं सुनी जाय। प्रधानाध्यापक जी का घेराव किया जाय, जुलूस निकाले जायें और नारे लगाये जायें। क्यों ठीक है न ?

सभी : बिलकुल ठीक है।

विजय : तो नारों को तैयार कर उन्हें दस-बारह गत्तों पर मोटे-मोटे अक्षरों में लिखने का काम सुभाष और नरेन्द्र का है। लड़कों को संगठित कर जुलूस निकालने का काम प्रदीप और नीलम का है। यह ध्यान रखना है कि आज तीन बजे तक जुलूस विद्यालय के क्रीड़ांगन पर लौट आये। हम वहाँ तैयार मिलेंगे। वहाँ भाषण होंगे और आगे का प्रोग्राम बनेगा।

नीलम : ठीक है।

प्रदीप : तो अब चलें ? बहुत से लड़के घर चले गये होंगे। सभी को सूचना करानी होगी।

नीलम : एक बजे जुलूस निकाला जाय और सदर बाजार में घुमाकर क्रीड़ागण पर लौटा जाय।

विजय : बहुत ठीक। अच्छा अब चला जाय ?

सब उठकर : हाँ-हाँ, चलो।

(सब का निष्क्रमण, पटाक्षेप)

द्वितीय दृश्य

स्थान : प्रधानाध्यापक-कक्ष। प्रधानाध्यापक तथा दो अध्यापक चिन्तातुर बैठे हैं।

प्रधानाध्यापक : देखिये अब गोविन्द आता ही होगा।

पहला अध्यापक : वर्मा जी वहाँ करने क्या गये थे ?

प्रधानाध्यापक : मैंने भी उन्हें रोका था परन्तु वे माने नहीं। जब विद्यार्थी क्रीड़ांगण पर सभा करने जा रहे थे तभी वे उन्हें समझाने पहुँचे।

दूसरा अध्यापक : ओह, अकेले ही ?

प्रधानाध्यापक : हाँ, उन्हें देखकर पहले तो विद्यार्थियों ने खूब जोर शोर से नारे लगाये और जब वे उन्हें समझाने पर ही तुले रहे तो कुछ ने पत्थर फेंक दिये और एक-दो पत्थर उनके सिर में आ लगे।

पहला अध्यापक : क्या खून बहुत बह गया ?

प्रधानाध्यापक : हाँ, दशा कुछ गंभीर ही है। मैं डॉक्टर को फोन कर चुका हूँ। पुलिस को भी फोन किया है। कुछ पुलिसमैन आ जायें तो यहाँ की सुरक्षा का भार सौंपकर मैं अस्पताल जाना चाहता हूँ।

दोनों अध्यापक : ठीक है, हम भी आपके साथ चलेंगे।

प्रधानाध्यापक : (कुछ चिन्तित स्वर में) समझ में नहीं आता कि इस देश और जाति का क्या होगा, दिन पर दिन अनुशासनहीनता बढ़ती जा रही है।

पहला अध्यापक : और क्या होना है सिवा पतन के ?

दूसरा अध्यापक : और मजेदार बात यह है कि इस सब के लिए दोषी है अध्यापक।

प्रधानाध्यापक : हाँ, कहा तो यही जाता है।

पहला अध्यापक : (उत्तेजित होकर) क्या कहा जाता है इसे छोड़कर यह बताइये कि अध्यापक कैसे दोषी है ?

प्रधानाध्यापक : उनकी शिक्षा और उनके आचरण का प्रभाव उनके शिष्यों पर पड़ना चाहिये।

दूसरा अध्यापक : ऐसा सोचने वाले यह क्यों भूल जाते हैं कि आज का शिक्षक एक कक्षा में एक कालांश के लिए ही जाता है और एक कक्षा में लगभग चालीस विद्यार्थी होते हैं।

पहला अध्यापक : और वह कक्षा-प्रवेश से कालांश की समाप्ति तक शिक्षण में व्यस्त रहता है। कालांश के पश्चात् उसका सम्पर्क उन विद्यार्थियों से बिलकुल नहीं रहता है।

दूसरा अध्यापक : ऐसी दशा में शिक्षक का क्या प्रभाव पड़ेगा ?

प्रधानाध्यापक : आपका कहना ठीक है, परन्तु भारतीय परम्परा के अनुसार शिष्य पर गुरु के आचरण का प्रभाव माना जाता है। वे आज की स्थिति पर कहाँ विचार करते हैं ?

पहला अध्यापक : जब गुरु के यहाँ रह कर शिष्य पढ़ते थे तब की बात और थी। तब गुरु-शिष्य हर समय साथ रहते थे और समाज से अलग भी रहते थे।

दूसरा अध्यापक : तब के शिष्य गुरु के प्रति असीम श्रद्धा रखते थे और सबसे बड़ी बात यह थी कि उन्हें कायदे-कानून सिखाने वाला कोई नहीं था। आज तो विद्यार्थियों को अपने शिक्षकों से अधिक उनकी नौकरी के कायदे कानून मालूम हैं।

प्रधानाध्यापक : वास्तव में आज सम्बन्ध गुरु-शिष्य का नहीं, शिक्षक और शिक्षित का है।

पहला अध्यापक : आज की शिक्षा क्या शिक्षा है ?

प्रधानाध्यापक : नहीं है, और इस कारण भी अनुशासनहीनता बढ़ रही है।

दूसरा अध्यापक : वास्तव में इस अनुशासनहीनता के कई कारण हैं।

प्रधानाध्यापक : हाँ, निकम्मी शिक्षा, बालक का वातावरण तथा समाज और सरकार का दृष्टिकोण इसके लिए मुख्य रूप से उत्तरदायी हैं।

(बाहर से आवाज सुनाई देती है)

—क्या मैं आ सकता हूँ ?

प्रधानाध्यापक : अवश्य आ सकते हैं।

(पुलिस वर्दी में एक हैड कान्स्टेबुल का प्रवेश)

हैडकांस्टेबुल : (अभिवादन करते हुए)सबसे पहले मैं दो बातों के लिए क्षमायाचना करता हूँ। एक तो मैंने आपकी बातो मे विघ्न डाल दिया, दूसरे मैंने आपकी कुछ बातें अनधिकारपूर्वक सुन ली हैं। क्या मैं भी इस चर्चा मे कुछ भाग ले सकता हूँ?

प्रधानाध्यापक : दीवानजी यह विद्यालय है, यहाँ गोपनीय बाते नही होती हैं अतः न तो आपको क्षमायाचना की आवश्यकता है, न चर्चा में भाग लेने मे संकोच करने की।

हैडकांस्टेबुल : यह तो स्पष्ट है कि यह शिक्षा निकम्मी है क्योंकि नीरस होने के साथ ही यह उद्योगहीन भी है। इससे केवल सूचनात्मक ज्ञान, स्मृति और कुछ समझने की शक्ति का विकास होता है परन्तु बालक के वातावरण से आपका अभिप्राय शायद उसके घर के वातावरण से है?

प्रधानाध्यापक : आपने ठीक समझा है। बालक विद्यालय में लगभग छह घण्टे रहता है अर्थात् एक दिन के चौथे भाग, शेष समय वह घर पर या विद्यालय के बाहर रहता है। अवकाश के दिनो मे तो उसका विद्यालय से कोई सम्पर्क रहता ही नही है। इसी के साथ एक बात और है कि अब अशिक्षित और अर्द्ध सभ्य घरो से बहुत बड़ी संख्या में बालक पढने आते हैं।

हैडकांस्टेबुल : एक बात और, समाज और सरकार के दृष्टिकोण से आपका क्या अभिप्राय है?

प्रधानाध्यापक : समाज और सरकार शिक्षा और शिक्षक के प्रति जैसे विचार और भाव रखेंगे वैसा ही व्यवहार उनके साथ करेंगे और उसका प्रभाव बालको पर भी पड़ेगा।

पहला अध्यापक : आज से हजार वर्ष पहले भारतवर्ष मे गुरु पर क्या पत्थर फैंके जा सकते थे? और यदि कोई ऐसा कर बैठता तो क्या राज्य और समाज आज की तरह उपेक्षा करते?

प्रधानाध्यापक : हाँ देखिये, इस ओर न तो अभी तक सरकार ने ही कोई ध्यान दिया है न समाज ने। किसी ने पूछा भी नहीं कि जिन शिक्षकों के

स्त्री : क्यों किसी का सिर फूटे तो फूटे, तुम्हे इसकी चिन्ता क्यों ? हड़-
ताल ऐसे कमजोर दिल से कैसे सफल होगी ? सारे शिक्षक तुम्हारे शत्रु हैं, सारा समाज तुम्हारी उपेक्षा करता है। तुम ऐसी सख्त कार्यवाही नहीं करो तो तुम्हें कौन जाने माने ?

विजय : (माँ के पैरों में गिर कर) माँ-माँ (कण्ठावरोध)

माँ : (रोते हुए) हट जा मेरे सामने से, मैं तेरी माँ नहीं। तेरी बजाय पत्थर हो होता तो अच्छा रहता। तू मेरा बेटा होता तो मुझे विधवा बनाने की कोशिश करता ? यदि इन्हें कुछ हो जाता तो मुझे और छोटे-छोटे बच्चों को कौन रोटी देता ? जवानी इसलिये नहीं आती कि किसी के प्राण लिये जायें।

विजय : (आँसू पोंछते हुए अवरुद्ध कण्ठ से) माँ, मुझे माफ करो मैं अब कभी ऐसा नहीं करूँगा। (पैर पकड़ कर) विश्वास करो माँ !

(दोनों अध्यापकों के साथ प्रधानाध्यापक का प्रवेश। विजय की माँ उठकर खड़ी हो जाती है, विजय अपराधी की भाँति नत-मस्तक मौन खड़ा रहता है।)

विजय की माँ : (नमस्कार करते हुए) आइये।

प्र. अध्यापक : बैठिये, बैठिये ! वर्मा जी की तबियत कैसी है ?

विजय की माँ : अभी नींद आयी है। वैसे ठीक हैं, खून बहुत बह जाने के कारण कमजोरी आ गयी है। सिर मे पाँच टाँके आये हैं, एक इंच गहरा घाव भी है।

प्र. अध्यापक : डॉक्टर साहब ने क्या कहा है ?

विजय की माँ : कह रहे थे कि अब कोई डर नहीं है। हाँ कुछ दिन आराम करना होगा।

प्र. अध्यापक : (विजय की ओर देखकर) क्यों विजय यही माँग थी तुम्हारी ?

(विजय मौन खड़ा रोता रहता है)

पहला अध्यापक : अच्छा भाभी जी किसी प्रकार की सहायता की आवश्यकता हो तो विजय को निस्संकोच किसी के भी घर भेज देना।

प्र. अध्यापक : वैसे समय-समय पर हम आते रहेंगे।

विजय की माँ : मेहरबानी है आप लोगों की, वैसे अस्पताल का स्टाफ भी काफी सहृदय है। उन्होंने कोई तकलीफ जैसी बात पैदा नहीं होने दी है।

प्र. अ. : हम डॉक्टर साहब और कम्पाउण्डर से मिलकर कह जायेंगे। आपको किसी भी प्रकार से कष्ट पाने की आवश्यकता नहीं है।

विजय की माँ : (सामने देखकर) डॉक्टर साहब तो वे आ रहे हैं।

(कुछ क्षणोपरान्त डॉक्टर और कम्पाउण्डर आते हैं)

प्र. अ. : नमस्ते डॉक्टर साहब, कहिये वर्मा जी का केस कैसा है?

डॉक्टर : नमस्ते साहब! अब कोई चिन्ता की बात नहीं है। हाँ, खून की कमी से कमजोरी काफी आ गयी है। शायद दो सप्ताह बाद चलने फिरने में समर्थ हो सकें।

प्र. अ. : आपकी सामयिक और तुरन्त सहायता के लिए हम आभारी हैं।

डॉक्टर : इस सब की आवश्यकता नहीं, हमारा तो धर्म और कर्म यही है।

प्र. अ. : अच्छा यहाँ से जाने का समय हो गया है, अब हम चलें।

(विजय की माँ नमस्कार करती है और तीनों प्रस्थान करते हैं)

डॉक्टर : आपके साथ और कोई नहीं है?

विजय की माँ : क्यों?

डॉक्टर : शायद एक-दो रात जगना पड़े।

विजय : मैं हूँ डॉक्टर साहब!

विजय की माँ : हम दोनों बारी-बारी से जग लेंगे।

डॉक्टर : भय की कोई बात नहीं। नर्स और कम्पाउण्डर रहेंगे।

(डाक्टर का प्रस्थानोन्मुख होना, दृश्य परिवर्तन)

चतुर्थ दृश्य

प्रथम दृश्य वाला कक्ष। अब मंच के एक पार्श्व में चार-छह डेस्कें तथा स्टूलें तरतीब से रखी हैं तथा पर्दा खुला है जिससे ऐसा भान होता है कि पीछे तक उनका क्रम है। स्टूलों पर सुभाष, प्रदीप तथा अन्य विद्यार्थी बैठे हैं, नीलम खड़ा है।

लिम : भाइयो, आज हमारी हड़ताल बिना शर्त समाप्त हो गयी है, यह तो आपको मालुम ही है और हमारा नेता विजय अस्पताल में अपने पिताजी की सेवा कर रहा है।

भाव : (अपने स्टूल से खड़ा होकर) वे केवल उसके पिता ही नहीं हमारे गुरू भी हैं।

लिम : हाँ हैं, परन्तु हम मे से ही किसी ने उन पर पत्थर फैंक कर उन्हें गम्भीर रूप से घायल कर दिया है।

दीप : (अपने स्टूल से उठकर सामने आते हुए) और यह हमारा गम्भीर अपराध था। इसी कारण यह हड़ताल इस रूप मे समाप्त करनी पड़ी।

भाव : केवल इतना ही पर्याप्त नहीं होगा, हमें कुछ प्रायश्चित भी करना होगा। क्या सब इसके लिए तैयार हैं ?

मी समवेत
र में : हाँ, हम तैयार हैं।

लिम : अब बताओ तुमने क्या प्रायश्चित सोचा है ?

भाव : अच्छा भाइयो सुनो, हमारे चौकीदार की रिपोर्ट के अनुसार हमने चालीस स्टूलें और तीस डेस्कें तोड़ डाली हैं। स्कूल मे फर्नीचर की पहले ही कमी थी। किसी भी प्रकार यह सामान इस सत्र मे नही आ सकता। इसलिये अब कोई न कोई कक्षा इस सामान से वंचित रहेगी।

दीप : हमारी कक्षा सबसे बड़ी कक्षा है, अत यह त्याग हमे करना चाहिये।

लिम : अवश्य ही, क्योंकि यह सब कुछ हमारे ही नेतृत्व में हुआ है।

भाव : क्या यह सभी को स्वीकार है ?

मवेत स्वर : हाँ, हम दरी बिछाकर जमीन पर बैठेंगे।

भाव : अब हमें कम से कम इस सत्र में हड़ताल जैसी बात और पथराव व घेराव जैसा व्यवहार कभी नही करने की प्रतिज्ञा करनी चाहिये।

मवेत स्वर : हम सहमत हैं।

भाव : तब मेरे अच्छे भाइयो, तुम्हें धन्यवाद !

नीलम : केवल इतना ही नहीं, यह प्रायश्चित तो विद्यालय के प्रति हुए
गुरू जी के प्रति हुए दुर्व्यवहार के लिये तो कुछ प्रायश्चित
ही नहीं।

सुभाष : हम सभी को अस्पताल में जाकर उनसे क्षमा माँगनी चाहिये।

प्रदीप : इतना ही नहीं, हमें उनकी सेवा-सुश्रूषा भी करनी चाहिये।
यह प्रस्ताव रखता हूँ कि जब तक उन्हें अस्पताल से छुट्टी
मिले तब तक दो-दो विद्यार्थी दो-दो घण्टे के लिये उनके पास रहें

समवेत स्वर : हम सब तैयार हैं।
(विद्यालय के घण्टे का शब्द नेपथ्य से सुनाई देता है)

नीलम : लो, प्रार्थना का समय हो गया, चलें।

(सबका प्रस्थान, पटाक्षेप)

सेना और साहस

सुरेन्द्र अंचल

* * *

[साधारण रंगमंच ! एक मुगल सरदार आरबखाँ बेचैनी से टहल रहा है]

नेपथ्य : शाबाश आरबखाँ ! हम तुम्हारे हौसले की दाद देते हैं ! शहंशाह बदस्तूर बागी अमरसिंह को गिरफ्तार कर लाने की इजाजत देते हैं ! मगर हुशियार ! याद रखना कि वह राजपूत है ! जाओ ।"

[कुछ क्षण मौन]

"मगर हुशियार ! याद रखना कि वह राजपूत है ! जाओ !"

आरबखाँ : (उत्तेजित) बागी का सर कुचल दूँगा उसका कबाब बना दूँगा—अल्ला पाक की कसम !—मगर शहंशाह अकबर का हुक्म उसके सरकलम का नहीं है !—उसे जीते जी पकड़ लाने का है ! हूँ ! (सीना ठोककर) आरबखाँ की बादलों सी उमड़ती फौज के सामने मुट्ठी भर राजपूत ! (अट्टहास) हा""हा""हा""हा !""सिपाही !

(एक सिपाही आकर कोनिस करता है !)

आरबखाँ : कुरबान अली ! हम राजा साहब पृथ्वीराज से मिलना चाहते हैं ।

[सिपाही उसी तरह आदाब करता हुआ वापस चला जाता है ।]

आखिर इन राजपूतों के पास ऐसी क्या वजह है कि वे इतना गजब का हौसला रखते हैं—एक ओर फौज का उमड़ता हुआ दरिया, दूसरी ओर हौसला सिर्फ हौसला !""""""हूँ !

[पृथ्वीराज का प्रवेश]

अकबर : (स्वकथन)''''''' '''यह शाही दरबार की इज्जत का सवाल है। अमरसिंह बागी है—उसे सजा देनी ही होगी ! अगर इस तरह छोटे बड़े राजा लोग सिर उठाने लगे तो मुगलिया सल्तनत पर मुश्किल आ जायेगी ! (दो क्षण मौन) अमरसिंह जैसे बहादुर तो हमारे दरबार की शोभा बढ़ाने चाहिये ! (दो क्षण मौन, सहसा रुककर) आरब खां की तरह जिन्दगी खतरे में है !—हाँ जरूर खतरे में है !—(उत्तेजना) खतरे में है ! नहीं ऐसा नहीं हो सकता (कुछ शान्त रहकर) शाबाश अमरसिंह ! हम तुम्हें बाइज्जत हमारे दरबार में अच्छा ओहदा देंगे। इतिहास के पन्ने बतायेंगे कि अकबर बहादुरी की कद्र करना जानता था। राजपूत बहादुर कौम है। इस कौम की बहादुरी की चाबी है उनका आजादी के लिए दीवानापन—हौसला !

[घण्टा बजाता है !—पहरेदार का प्रवेश]

हम राजा साहब को याद फरमाते हैं

(सिपाही का प्रस्थान)

''''''''क्या सचमुच अमरसिंह जिन्दा नहीं पकड़ा जा सकता !

''''''आरब खां जरूर पकड़ लायेगा ! आखिर इतनी बड़ी फौज और मुट्ठीभर बागी''''' '''''''''''''

(पृथ्वीराज का प्रवेश)

पृथ्वीराज : (झुककर सलाम करते हुए) शहंशाह की खिदमत में पृथ्वीराज हाजिर है !

अकबर : राजा साहब ! आरब खां की कोई खबर आई ?

पृथ्वीराज : जहांपनाह ! अमरसिंह को घेर लिया गया है।

अकबर : हाँ, मैं जानता था, आरब खां बहादुर है—वह अमरसिंह को जरूर पकड़ लायेगा।

पृथ्वीराज : नामुमकिन ! जहाँपनाह गुस्ताखी माफ हो, लेकिन यह नामुमकिन है। वह शाही हुकूमत का बागी है, इसलिये मेरा भी दुश्मन है ! लेकिन है तो वह राजपूत ही न ! वह मेरा भाई है, उसके खून को मैं जानता हूँ। आरब खां का सलामत लौट आना मुश्किल है।

सहर लूटतो तू सदा देश करतो सरद्द
कहर नर पड़ी थारी कमाई,
अमर ! अकब्बर तणी फौज आई,
नींदहर सिंह घरमार करतो वसू !
आरव खाँ अठिव आवियों आग आसमाण
निवारो नींद कमधज अबे नीडर नर !
अमर ! अकब्बर तणी फौज आई !

(अमरसिंह करवट बदल लेता है) पद्मा पुन: कहती है—

आरब खाँ ठहर, अमरसिंह जाग
गया है तू बच कर नहीं जा सकता !
नहीं जा सकता ! नहीं जा सकता !

अमरसिंह : (सहसा तलवार खींच कर उठ खड़ा होता है) हाँ, नहीं जा सकता! आरब खाँ जिन्दा नहीं जा सकता !

पद्मा : वीर वर अमरसिंह की.........!

सभी : (तलवारें खींच कर) जय हो !

पद्मा : भैया ! दुश्मन दरवाजे पर खड़ा ललकार रहा है। दिल्ली से दाता पृथ्वीराज का पत्र भी आया है।' उन्होंने यह शर्त रखी है कि अमरसिंह जीवित नहीं पकड़ा जा सकता और आरब खाँ के भी जीवित लौटने की कोई आशा नहीं है।

अमरसिंह : आरब खाँ ! अमरसिंह ने गुलाम रहना नहीं सीखा। यह भवानी तेरे खून की प्यासी है। इस तलवार पर बाई पद्मा के दोहों की धार लगी हुई है।—(तलवार उठाकर हर-हर महादेव)

सभी : हर हर महादेव ! (एक ओर से सब का प्रस्थान)

[नेपथ्य से युद्ध का शोर-गुल]

आरबखाँ : (नेपथ्य) बहादुरो घेर लो ! अमरसिंह को जिन्दा पकड़ लो !

(प्रवेश)

[मंच पर आरबखाँ और अमरसिंह का लड़ना ! सहसा अंधकार ! परदा गिरना ! पुनः मंच पर प्रकाश-अकबर का पूर्ववत सोये हुए होना]

अकबर : (चौंककर जागता है) नहीं ! आरम खाँ नहीं ! तुम अमर को नहीं पकड़ सकोगे ! ....ओफ्फो ! कितना खौफ़नाक नज़ारा !

[पहरेदार का प्रवेश]

जहाँपनाह, लड़ाई के मैदान से एक सिपाही खबर लाया है।

अकबर : जल्दी हाज़िर करो !

[प्रहरी का प्रस्थान-सैनिक का प्रवेश]

सिपाही : हुज़ूरे आलम ! शाही फौज जीत गई ! अमरसिंह मारा गया।

अकबर : अमरसिंह मारा गया ! जिन्दा नहीं पकड़ा गया ! अफ़सोस ! खैर जाओ !

[सिपाही का प्रस्थान]

(अकबर पास में लटके घण्टे पर चोट करता है ! प्रहरी का प्रवेश)

अकबर : हम राजा साहब को याद फरमाते हैं।

(प्रहरी का प्रस्थान-अकबर बेचैनी से घूमता रहता है-पृथ्वीराज का प्रवेश)

पृथ्वीराज : हुज़ूर पृथ्वीराज हाज़िर है !

अकबर : राजा साहब, सुना तुमने, [illegible]ई के मैदान से खबर आयी है कि शाही फौज को फतह मिली ! .... अमरसिंह मारा गया ! .... वह हमारे दरबार की शोभा नहीं बढ़ा सका ! ....मगर एक बागी तो खत्म हुआ !

पृथ्वीराज : हुज़ूर क्या आरब खाँ जीवित है ?

अकबर : हमारी फतह और अमरसिंह के सर कलम का तो यही है कि आरब खाँ सही सलामत है।

पृथ्वीराज : ऐसा ना-मुमकिन है।

[प्रहरी का प्रवेश]

प्रहरी : जमादार महावत खाँ हाज़िर होना चाहते हैं।

अकबर : तो जमादार महावत खाँ से पूरी खबर सुनो, हाज़िर करो !

(प्रहरी का प्रस्थान-महावत खाँ का प्रवेश चेहरे पर घावों के दाग !)

महावत खाँ : जहांपनाह का इक्बाल बुलन्द हो ! हमारी फतह हुई है ! एक भी राजपूत नहीं बच सका !

अकबर : मगर अमरसिंह जिन्दा नहीं पकड़ा जा सका ?

महावत खाँ : या अल्ला ! वह तो आरब खां की कयामत था। अमरसिंह के घोड़े के दोनों पाँव आरब खां के हाथी के दोनों दांतों पर थे। मैंने पीछे से फौरन अमरसिंह की कमर काट दी। हुजूर गुस्ताखी माफ हो। ऐसा करिश्मा हमने कभी नहीं देखा कि आधा धड़ तो घोड़े पर सवार था और आधा धड़ उड़कर सिपहसालार के हाथी के हौदे पर सवार होकर आरब खां के सीने को चीर दिया। ओफ !

अकबर : (चौंककर) या खुदा ! यह कैसा नजारा, दोनों सिंह खत्म हो गये। (दो क्षण बेचैनी से टहलकर) राजा साहब, अमरसिंह बला का बहादुर था वह इन्सान नहीं, उड़ता हुआ शेर था ! वह मर कर जीत गया ! ऐसा हौंसला ! आपने ठीक कहा था—

"सेना की नहीं साहस की जीत होती है।"

(पर्दा गिरता है)

○○○

अंतिम बलिदान

देवप्रकाश कौशिक

* * *

पात्र-परिचय

निर्मला	:	१८ वर्ष की एक सुन्दर लड़की कैंसर से पीड़ित
निर्मला के पिता	:	एक अध्यापक, आयु लगभग ५० वर्ष
निर्मला की माँ	:	आयु लगभग ४० वर्ष
कमलेश	:	निर्मला की छोटी बहन, आयु १५ वर्ष
डॉक्टर मोहन	:	प्रसिद्ध तथा कुशल डॉक्टर, आयु लगभग ३० वर्ष
प्रकाश	:	निर्मला का बड़ा भाई, आयु २१ वर्ष

पहला दृश्य

[मध्यम परिवार का एक साधारण-सा कमरा। समय रात के ८ बजे। कमरे मे एक चारपाई पर निर्मला लेटी हुई है। एक लम्बे समय से कैंसर से पीड़ित होते हुये भी उसके मुख मण्डल पर प्रसन्नता की आभा है। रुक-रुक कर खाँसती है और नीचे रखे तसले में थूकती है। एक मेज पर कुछ दवाइयाँ पड़ी हुई हैं। चारपाई के आस-पास कुछ कुर्सियाँ पड़ी हुई हैं। इस समय कमरे में निर्मला के पिता तथा डॉक्टर मोहन बैठे हैं। डॉक्टर मोहन का इस परिवार से घनिष्ट सम्बन्ध है।

कमरे में एक कोने मे एक मेज पर रेडियो बज रहा है। रेडियो काफी धीमी आवाज से बज रहा है। रेडियो के यह कहने पर कि "अब हिन्दी में समाचार होंगे" सब ध्यानपूर्वक सुनने लग जाते हैं। निर्मला भी तकिये के सहारे बैठ जाती है।

रेडियो से समाचार प्रसारित होते हैं—"चीन के आक्रमण का सामना भारतीय जवान बड़ी वीरता से कर रहे हैं। चीनी सैनिकों के बड़ी संख्या में होने के कारण हमारे जवानों को कुछ चौकियां छोड़नी पड़ी। किन्तु हमारे जवान बड़ी वीरता तथा साहस से शत्रुओं का मुकाबला कर रहे हैं। हमारे जवानों ने काफी संख्या में चीनी सैनिकों को मौत के घाट उतारा है। देश के कोने-कोने से राष्ट्रीय रक्षा-कोष के लिये धन, सोना, सोने के गहने आदि देने के समाचार लगातार प्राप्त हो रहे हैं। बड़ी संख्या में युवक तथा युवतियाँ रक्तदान कर रहे हैं। लड़कियाँ तथा महिलायें जवानों के लिये जर्सियाँ तैयार कर भेज रही हैं। एक पेन्शन प्राप्त सैनिक ने जिसकी दोनों भुजायें द्वितीय महायुद्ध में कट गयी थी, अपने दोनों नेत्र देने को कहा है। एक युवती ने अपने सारे आभूषण राष्ट्रीय रक्षाकोष मे दे दिये। इस युवती के पति ने कुछ दिन पूर्व ही युद्ध में वीरगति प्राप्त की थी।"

(समाचार समाप्त होने पर निर्मला अपने पिता की ओर देखती है।)

निर्मला : (अपने पिता से) पिताजी मैं भी खून दूंगी जवानों के लिए।

पिता : (ऊपरी हँसी हँसते हुये) बेटा, पहले तू ठीक तो हो जा। तेरे डॉक्टर भैया का कहना है कि तुझे खुद खून की जरूरत है।"

निर्मला : (डॉक्टर की ओर देखकर) डॉक्टर भैया तो ऐसे ही कहते रहते हैं। अच्छा पिताजी इस लड़ाई मे क्या होगा ?

पिता : बेटा, भारत की विजय निश्चित है। हो सकता है कि हमारे सैनिकों को कुछ चौकियाँ और छोडनी पड़ें क्योंकि चीनी सैनिक संख्या मे बहुत अधिक हैं किन्तु अन्त में विजय हमारी होगी, क्योंकि हम सत्य पर हैं।

(कमलेश का प्रवेश। उसके हाथ मे किताबें हैं तथा कापियाँ हैं। उसकी आयु लगभग पन्द्रह वर्ष है। वह आकर एक स्टूल पर बैठ जाता है।)

पिता : (कमलेश से) क्यों बेटा आज जल्दी छुट्टी हो गई ? अभी तो दो भी नहीं बजे।

कमलेश : हाँ पिताजी ! आज हमारे स्कूल में पढ़ाई तो हुई ही नहीं। भारत पर चीन के आक्रमण के बारे मे बहुत सी बातें बतलाई गईं। अध्यापिकाओं तथा छात्राओं ने भाषण दिये और फिर एक लम्बा जलूस चीन के आक्रमण के विरोध मे निकाला गया।

पिता जलूस में तू भी गई थी ?

कमलेश : हां पिताजी मैं जलूस से ही तो आ रही हूँ। हमारे यहाँ लड़कियों ने एन. सी सी. में नाम लिखाया है। मैंने भी एन. सी. सी. में नाम लिखवा लिया है।

पिता : यह तूने बहुत अच्छा किया बेटा। तेरी दीदी भी खून देने को कह रही थी, जबकि इसे खुद खून की जरूरत है।

कमलेश : दीदी को तो मैं खून दूंगी पिताजी !

निर्मला : (कृत्रिम हंसी हँसते हुए) तुझ मे बहुत खून है न जो मुझे खून देगी !

कमलेश : दीदी तुमसे तो मेरे मे कम से कम दस गुना खून होगा और फिर जब मेरे खून देने से तुम जल्दी ठीक हो जाओगी तो मारे खुशी के मेरा खून फिर बढ़ जायेगा।

निर्मला : अच्छा जा ! डॉक्टर भैय्या के लिए माँ से कुछ चाय-वाय ले आ।
(कमलेश कमरे से बाहर जाती है, निर्मला संकेत से डॉक्टर मोहन को अपने पास बुलाती है।)

निर्मला : भैय्या मेरी एक बात मानोगे ?

डॉक्टर : (हँसकर) कौनसी बात है बोल न ? मैंने आज तक तेरी कोई बात टाली है ?

निर्मला : भैय्या..........मैं नेत्र दान करना चाहती हूँ।

डॉक्टर : (आश्चर्य चकित होकर) निर्मला.........तू.........तू...... यह क्या...
....कह रही है ?

निर्मला : (दृढ़ स्वर में) मैं ठीक कह रही हूँ भैय्या ! और मैं कर ही क्या सकती हूँ अपने देश के लिये।

डॉक्टर : (प्यार से डांटते हुये) निर्मला पागल मत बन ! इस तरह हिम्मत नहीं हारते हैं। तू ठीक हो जायेगी जल्दी। तू फिर चाहे जैसे भी देश की सेवा करना।

निर्मला : भैय्या, तुम सब कुछ जानते हुए भी अनजान बन रहे हो। तुम डॉक्टर हो। तुम्हारा काम ही धीरज बँधाना है। पर मुझे पता है

मैं कुछ ही देर की मेहमान हूँ। (डॉक्टर तथा निर्मला के पिता की आँखें छलछला आईं उसे देखकर)

डॉक्टर भैय्या यह तुम क्या कर रहे हो, डॉक्टर होकर अपने कर्त्तव्य से दूर जा रहे हो। अभी तो तुम मुझसे कह रहे थे (खांसती है) कह रहे थे कि हिम्मत नहीं हारनी चाहिये और अब तुम खुद दिल छोटा कर रहे हो। (फिर खांसी आती है। थोड़ा रुक कर) और...... और पिताजी आप...... आप इतने बड़े होकर रो रहे हैं बच्चों की तरह। माँ देखेगी तो उनकी क्या दशा होगी और कमलेश बेचारी के दिल पर क्या प्रभाव पड़ेगा। छि मुझे छोटा होकर भी आपको समझाना पड़ रहा है। (फिर खाँसती है, डॉक्टर और निर्मल के पिता आँसू पोंछ लेते हैं)

पिता : (कुछ बोलना चाहते हैं पर कण्ठ अवरुद्ध हो जाता है) बे...टा, बेटा तू...

निर्मला : मैं जानती हूँ आप कुछ कह नहीं सकते? आपका हृदय करुणा और ममता से भीग रहा है। पर आपको आज्ञा देनी ही होगी। बोलिये पिताजी ...?

[कमरे में निस्तब्धता कुछ क्षण को हो जाती है। निर्मला कभी डॉक्टर की ओर, कभी अपने पिता की ओर देखती है।]

पिता : (अवरुद्ध स्वर में) मैं ...मैं क्या कहूँ बेटा!

दूसरा दृश्य

समय—शाम के सात बजे हैं।

स्थान—पहले दृश्य वाला कमरा।

[इस समय कमरे में निर्मला, उसकी माँ, पिता, कमलेश तथा डॉक्टर बैठे हैं।]

निर्मला : (माँ से) माँ आज खाने को क्या बनाया है?

माँ : (प्रसन्न होकर) बोल क्या खायेगी बेटी? वैसे मैंने तेरी पसन्द की ही चीजें बनाई हैं—मक्का की रोटी और आलू मटर टमाटर की रसेदार सब्जी! इसमें मसाला सलाद भी है।

निर्मला : माँ यही ले आओ।

[निर्मला की माँ खाना लेने कमरे से बाहर जाती है।]

निर्मला : (पिता से) पिताजी प्रकाश भैय्या नहीं आये ?

पिता : बेटा, आता ही होगा। कल इतवार है न, उसके कॉलेज की छुट्टी होगी। अबके वह तेरे लिये घड़ी जरूर लायेगा, कह गया था न।

[निर्मला की माँ का खाना लिये हुये प्रवेश। निर्मला थोड़ा सा खाना खाती है। माँ थाली लेकर बाहर चली जाती है।]

निर्मला : (कमलेश से) कमलेश ! तू मुझे खून देने को कह रही थी न ?

कमलेश : हाँ दीदी, मैं तुम्हें खून दूँगी और......।

निर्मला : पर अब मुझे खून की जरूरत नहीं रही।

कमलेश : (आश्चर्य-चकित होकर) क्यूँ दीदी ?

निर्मला : अब मैं खून का क्या करूँगी ? मैं तो वैसे ही ठीक हो रही हूँ। अब तू खून घायल जवानों के लिये देना। देगी न ?

कमलेश : हाँ दीदी, क्यों न दूँगी जब तुम कह रही हो ?

निर्मला : और देश की हर तरह से सेवा करना, जवानों के लिये ऊनी कपड़े भेजना, नर्स बन कर घायलों की सेवा करना। करेगी न मेरी अच्छी बहन ?

कमलेश : (कुछ न समझते हुए).........हाँ दीदी।

निर्मला : (खाँसते हुये) प्रकाश भैय्या नहीं आये।

डॉक्टर : आता ही होगा। क्यों दिल घबरा रहा है क्या ? ग्लूकोज ले लो जरा।

निर्मला : (टूटे स्वर में) ग्लूकोज ......हा ......दे दो ......पर .... ?

(थोड़ा-सा ग्लूकोज लेती है, कमलेश उसे पानी पिलाती है)

[बाहर पानी बरस रहा है, जिसकी आवाज धीमी धीमी आती है]

निर्मला : बाहर पानी बरस रहा है क्या ?

डॉक्टर : हाँ निर्मला, हल्का-हल्का पानी बरस रहा है और बादल हैं।

[निर्मला डॉक्टर को पास बुलाती है]

निर्मला : भैया, मेरी बात जरा ध्यान से सुनना। समय कम है। देखो भैया तुमने मेरे लिए बहुत कुछ किया पर अब पिताजी और माँ का ध्यान रखना। दोनों वृद्ध हैं, और कमलेश (खाँसती है) कमलेश बच्ची है उसका ध्यान रखना (फिर खाँसती है)

(पिता भी उसके पास आ जाते हैं)

पिताजी जब प्रकाश भैया आएँ तो मेरा चरण स्पर्श कहना और ......और कहना........कहना कि वे अपना जीवन देश-सेवा में समर्पित कर दें और आप लोग भी जितनी हो सके देश-सेवा करें।

और.........भैया...........आपको मेरी बात याद है न.....नेत्रदान ! पिताजी घबराना नहीं। ईश्वर को यही मंजूर था .. ..दिल छोटा मत करना.........माँ का, कमलेश का और अपना ध्यान रखना। रोना धोना नहीं.......नहीं तो मेरी आत्मा को दुख पहुँचेगा।..... .....अच्छा पिता.....जी.....भैया .. विदा !

[निर्मला के प्राण पखेरू एक हिचकी के साथ उड़ जाते हैं। कमला चीखकर उसके निर्जीव शरीर से लिपट जाती है। चीख सुनकर उसकी माँ दौड़ी-दौड़ी आती है।]

माँ : डॉक्टर भैया, देखो तो जरा क्या हुआ मेरी बच्ची को ...... देखो न भैय्या !

(तभी बाहर का दरवाजा खुलता है और प्रकाश का सूटकेस और एक बण्डल लिये हुए प्रवेश। वह पानी से भींगा हुआ है।)

प्रकाश : ....निर्मला.....निर्मला...... देख .. ..(सहसा शव देखकर)..... .....हैं.....यह क्या किया तूने .. क्या-क्या लाया हूँ तेरे लिए.....यह देख सुनहरी घड़ी (भावावेश में आकर) और यह तेरे लिए साड़ी.....

डॉक्टर : (समझाते हुए) प्रकाश पागल मत बनो। कुछ सोच समझ से काम लो। बूढ़े माँ-बाप और छोटी कमलेश को देखो। उनकी हालत क्या होगी ?.....और ...और अपनी दीदी के अन्तिम शब्द सुनो ... उसने तुम्हारे लिए क्या कहा.......

प्रकाश : (भावावेश में)........... .. क्या कहा भैय्या मेरी दीदी ने.......

डॉक्टर : (भावुक होकर तथा सोचते हुए)...........उसने-उसने .... कहा था कि.........कि प्रकाश भैय्या को मेरा चरण स्पर्श कहना।

......और...... और कहना कि जो घड़ी मेरे लिये लाए उसे राष्ट्रीय रक्षा कोष में दे देना।

प्रकाश : (भावना में बहकर) "......कहना......घड़ी......राष्ट्रीय रक्षा कोष..............

डॉक्टर : (उसी प्रकार भावना में) और उसने कहा (ऊँचे स्वर में) घबराना मत, रोना धोना नहीं, नहीं तो मेरी आत्मा को कष्ट होगा। बूढ़े माँ....बाप और कमलेश का ध्यान रखना। और उसने कहा...... सब लोग देश सेवा करना......उसने अपने नेत्र दान कर दिये।

प्रकाश : नेत्रदान... मैं....मैं कल ही एमरजेन्सी कमीशन में भर्ती हूँगा अपनी सेवायें अर्पित करके मैं मोर्चे पर जाऊँगा। .... अपनी छोटी बहन की आज्ञा का पालन करूँगा।

डॉक्टर : ....प्रकाश मैंने भी घायल जवानों को अपनी सेवायें अर्पित करने के लिए अर्जी दे दी है।

कमलेश : डॉक्टर भैय्या.... मुझे नर्स की ट्रेनिंग लेनी है। आप मुझे भर्ती करा दीजियेगा।

डॉक्टर : .... क्यों नहीं कमलेश, क्यों नहीं, जरूर भर्ती कराऊँगा तुम्हें।

माँ : डॉक्टर भैय्या! मैं बूढ़ी कुछ कर नहीं सकती, हाँ, ऊनी कपड़े जरूर भेजूँगी जवानों के लिये।

पिता : तुम सब लोग कुछ न कुछ कर रहे हो.... पर मैं....मैं....क्या करूँ मैं बूढ़ा हूँ खून नहीं दे सकता........ स्वेटर नहीं बुन सकता....लड़ नहीं सकता।

प्रकाश : ... .पिताजी आप तो बहुत कुछ कर सकते हैं........आप पहले तो मुझे मोर्चे पर जाने की आज्ञा दीजिये। फिर आप तो अध्यापक हैं, अपने छात्रों में देश भावना जाग्रत कर उन्हें अच्छा नागरिक बना सकते हैं। देश को अच्छे नागरिक, स्वयंसेवक तथा सैनिक दे सकते हैं।

डॉक्टर : निर्मला को आई बैंक ले जाना है।

पिता : (विचारों में डूबे हुए चौंककर) हैं....आई बैंक....हाँ उसकी अंतिम इच्छा तो पूरी करनी ही होगी।

●●●

श्रीमती कर्नल : (चौंक कर) हाथों को दूर झिटकते हुए। यह क्या बदतमीजी है तुम अभी तक सोये नहीं जाओ चल कर सोओ।

चौ० कर्नल : वॉट नॉनमेन्स अभी तक तुम जाग रहे हो ?

श्रीमती कर्नल : (गुस्से से आवाज देती हैं) मेरी, कहाँ हो ! ले जाओ इस शैतान के बच्चे को। घड़ी भर भी कहीं चैन से नहीं बैठने देता।

(मिस मेरी जो एक क्रिश्चियन लड़की है शीघ्रता से प्रवेश करती है। उम्र २० वर्ष, रंग गेहुँआ काले रंग की स्कर्ट कोटी पहने हुए है, बाल फैशनेबल ढंग से सँवार रखे हैं।)

मिस मेरी : यस मैडम !

श्रीमती कर्नल : यस मैडम की बच्ची, कहाँ थी अभी तक राकेश को सुलाया नहीं (मेरी उसके मुँह की ओर देखती है) मेरे मुँह की ओर क्या देखती है इसे ले जाओ और जा कर सुलादो।

(बालक रुआँसा सा होकर मिस मेरी के साथ घर के अन्दर की ओर चला जाता है)

श्रीमती कर्नल : सारा मूड बिगाड़ कर रख दिया है आपके इस लाडले ने तो, चलो डियर अब चलें। बहुत रात हो गई है।

मि० कर्नल : चलो चलें (दोनों चले जाते हैं)

[दूसरा दृश्य]

(समय सवेरे के १० बजे हैं। कमरा पूर्ववत ही है, स्कूल की यूनीफॉर्म पहने राकेश अधीरता से इधर-उधर देख रहा है कि तभी हाथ में बस्ता लिये मिस मेरी प्रवेश करती है।)

मिस मेरी : लो यह बस्ता और अब चलो स्कूल।

राकेश : मेरी जल्दी चलो, देर हो जायेगी, वरना कल की तरह आज भी मास्टर जी मुझ पर नाराज होंगे।

मिस मेरी : कल तुम पर नाराज हुए थे क्या ? तुमने जवाब दे दिया होता कि मास्टर जी, कर्नल का लड़का हूँ जब भी चाहूँगा आऊँगा। जब चाहूँगा तब जाऊँगा। वह कौन होते हैं रोकने वाले ?

राकेश : मेरी सिस्टर वे हमारे मास्टरजी होते हैं।

मेरी : मास्टर जी हुए तो क्या हुआ ? तुम्हारे मास्टर जी अमीरों की दया से ही रोटी खा रहे हैं (पास जाकर) और जो तुम्हारा काला-सा ऐनकी मास्टर है न, वो तुम्हारे पापा से बहुत डरता है कभी धमका के देखना तुम।

[नेपथ्य में नई फिल्म के Announcement की आवाज आती है। राकेश ध्यान से सुनता है।]

राकेश : (उत्सुकता से) मेरी यह आदमी क्या कह रहा है ?

मेरी : यहाँ जो नई फिल्म लगी है उसी के बारे में बताया जा रहा है।

राकेश : फिल्म क्या होती है ?

मेरी : बहुत सुन्दर तस्वीरें होती हैं वो बोलती भी हैं, गाती भी हैं, नाचती भी हैं, तुम देखोगे ?

राकेश : मैं कैसे देख सकता हूँ, मैं तो स्कूल जा रहा हूँ।

मेरी : क्यों नहीं देख सकते, क्लास के बीच में से तुम ३ बजे चुपचाप उठ कर भाग आना मैं यहीं पर मिल जाऊँगी फिर दोनों देखने चलेंगे नई फिल्म देखने, अच्छा टा–टा।

[तीसरा दृश्य]

(स्कूल का एक छोटा सा कमरा, कक्षा में छात्र अपने अपने सामने पुस्तकें खोल कर बैठे हैं। अध्यापक कक्षा की ओर पीठ किये हुये श्यामपट्ट पर कुछ बना रहे हैं, कि तभी राकेश चुपके से आकर सबसे पीछे बैठता है। श्यामपट्ट पर भारत के नक्शे को बना करके विद्यार्थियों को कहते हैं।)

मास्टर जी : (कक्षा की ओर देख कर) बच्चो ! सामने देख रहे हो यह तुम्हारा भारत देश है, हमारा भारत देश है। यह देश तुम्हारा है आज मारे देश की आँखें तुम्हारी इन नन्हीं-नन्हीं आँखों में अपने भविष्य को देख रही हैं। तुम ही कल के बुद्ध, गांधी बन कर देश का मान बढ़ाओगे। तुम महान् से महान् बनने की चेष्टा करो, यही मेरी हार्दिक इच्छा है।

(सहसा राकेश की ओर देख कर) ऐं ! तुम क्या आज भी देरी से आये हो ?

राकेश : (खड़े होकर) जी–जी ।

मास्टर जी : हाँ बताओ न कि तुम्हें रोज रोज देरी क्यों हो जाती है ?

राकेश : (एकाएक) आप कौन होते हैं पूछने वाले, मेरा जब मन करेगा कक्षा मे आऊँगा, जब मन करेगा चला जाऊँगा ।

(अध्यापक को पहले क्रोध आता है तदुपरान्त बड़े ही प्यार से एवं स्नेह सिक्त स्वर में) अरे आज क्या हो गया है तुम्हें ?

मास्टर जी : तुम्हें स्कूल तक छोड़ने कौन आता है ?

राकेश : (गुस्से से) मेरी गवर्नेस, मिस मेरी ।

मास्टर जी : (प्यार से) आज शाम को घर जाने से पूर्व मुझसे मिलना ।

(मास्टर जी चले जाते हैं ।)

राकेश : (अपने साथी से) रमेश आज नई फिल्म लगी है, मैं दोपहर वाले शो में जाऊँगा । बड़ा मजा आएगा ।

[नये अध्यापक का प्रवेश]

(उनके हाजिरी के लिए रजिस्टर खोलने के बाद राकेश उनके पास जाता है ।)

राकेश : सर आज मुझे घर पर कार्य है मेरी उपस्थिति लगा दीजिए ।

[राकेश का प्रस्थान]

[चौथा दृश्य]

(पहले दृश्य का ही कमरा, समय रात्रि के द बजे । मेरी हाथ में सुई धागा लेकर राकेश की वुशर्ट में बटन लगा रही है ।)

राकेश : मेरी, पिक्चर अच्छी थी न ?

मेरी : सभी पिक्चर अच्छी होती हैं । (बटन लगा कर) जल्दी कर सोयें, सुबह स्कूल भी तो तुम्हें जाना है ।)

राकेश : (मुँह बनाते हुए) हूँ मैं स्कूल नहीं जाऊँगा, कल तुम्हारे साथ सिनेमा देखने और घूमने जाऊँगा ।

मेरी : (समझाते हुए स्वर में) लेकिन उसके लिए तो रुपये चाहिये ।

राकेश : (चिन्तित स्वर में) रुपये ?

: हाँ रुपये, ऐसा करो अपने पापा से कहना कि दस रुपये चाहिए स्कूल में मास्टर जी ने मँगवाये हैं। (खुशी से) क्यों ठीक है न, तब मैं तुम्हें खूब सैर करा दूँगी।

श : यह तो झूठ है।

: अरे, कौन से तुम्हारे पिताजी मास्टरजी से पूछने जायेंगे।

श : (प्रसन्न हो जाता है) हाँ मेरी यह ठीक रहेगा।

[पाँचवाँ दृश्य]

(स्कूल का कक्षा-कक्ष, अन्य बालकों में राकेश नहीं है)

टर जी : (अन्य बालकों से पूछते हुए) राकेश आज भी नहीं आया क्या ? आपमें से कोई जानता है कि राकेश स्कूल क्यों नहीं आ रहा ? (सभी विद्यार्थी नकारात्मक ढंग से प्रत्युत्तर देते है) (चिन्तित स्वर मे) न जाने राकेश को इन दिनों क्या हो गया है ? स्कूल में देर से आना, क्लास में समय से पहले घर चले जाना, आश्चर्य तो तब होता है जब अभिभावक भी उपेक्षामय व्यवहार करते हैं। (अपने आपसे) मैं आज जाकर पता लगाऊँगा।

[छठा दृश्य]

(चौधरी कर्नल के बंगले का ड्राइंग रूम। कर्नल साहब अखबार पढ़ रहे हैं, ो ही उनकी पत्नी स्वेटर बुन रही है कि तभी नौकर प्रवेश करता है।)

तया : साहब बाहर कोई मिलने आये है।

ल : (अखबार मे नजर गड़ाते हुए) भेज दो अन्दर।

[नौकर चला जाता है मास्टर जी प्रवेश करते हैं।]

मास्टर जी की उम्र ४० वर्ष, बन्द गले का कोट एवं उसके ऊपर मफलर डे हैं, सफेद धोती तथा पैरों में कुछ घिसी हुई चप्पल।

स्टर जी : नमस्कार, कर्नल साहब !

ल : (उपेक्षित स्वर मे) नमस्कार कौन हो तुम ?

स्टर जी : जी मैं राकेश का क्लास टीचर हूँ। राकेश आजकल कहाँ है ? एक

सप्ताह से वह स्कूल नहीं आ रहा है। मुझे चिन्ता हुई तो यहाँ चला आया, उसका पता करने।

कर्नल : (घृणा से) क्लास टीचर तो स्कूल में हो यहाँ आने की क्या जरूरत थी तुम्हें। अपनी हैसियत भी देखते हो बस चले आते हो बड़े लोगों से मिलने के लिए।

मास्टर जी : जी-जी-मैं तो राकेश का पता करने आया हूँ वो मेरा प्रिय शिष्य है।

कर्नल : (अत्यधिक घृणा से) ताकि जब चाहो उससे फीस के बहाने रुपये मँगा सको।

मास्टर जी : (आश्चर्य से) आप यह क्या कह रहे हैं? मैं कुछ समझा नहीं, कर्नल साहब!

कर्नल : (तेज स्वर में) आप झूठ बोलते हैं, राकेश रोज स्कूल जाता रहा है और तुम अलग-अलग बहाने कर लगातार उससे रुपये ऐंठते रहे हो। याद रखो यदि तुम्हारा रवैया ऐसा ही रहा तो किसी दिन हाथों में हथकड़ियाँ दिखाई देंगी।

मास्टर जी : (दुखी स्वर में) आपका आरोप मिथ्या है कर्नल साहब! राकेश तो एक सप्ताह से स्कूल नहीं आया है।

[तभी मेरी के साथ सिर पर पट्टी बाँधे हुए राकेश का प्रवेश पट्टी पर खून के धब्बों को देखकर कर्नल एवं श्रीमती कर्नल चौंककर चिन्तित मुद्रा में हो जाते हैं।]

मास्टर जी : (राकेश की ओर सहसा देखकर एवं अधीरता से) यह क्या हुआ राकेश? कहाँ थे तुम? यह तुम्हारे सिर पर पट्टी कैसी? ऐं खून, क्या हुआ राकेश तुम्हें?

मेरी : (व्यंग्यात्मक स्वर में) बहुत अनजान बन रहे हो मास्टर साहब। स्वयं ही स्कूल में उसे बुरी तरह पीट कर सिर पर बंधी पट्टी का कारण जानना चाहते हो।

कर्नल : (क्रोध से) क्या? तुमने मेरे लड़के को मारा है, अपराध क्या था? इस नन्हे का? उसे पीटते हुये तुम्हें तनिक भी लज्जा अनुभव नहीं हुई। ठीक है तुम जैसे अपराधी को मैंने भी जेल की कोठरी में नहीं धकेला तो मेरा नाम चौधरी कर्नल नहीं।

मास्टर जी : (दीन स्वर में) कर्नल साहब यह सब झूठ है। राकेश क्या मैंने तुम्हें पीटा है ? मेरे बच्चे बोलते क्यों नहीं ?

राकेश : (हटकर पिताजी के समीप जाकर) पापा ...पापा आज जब मुझे स्कूल पहुँचने मे देर हो गई तो मास्टर जी ने बहुत पीटा (रोता है)
[रोने की आवाज]

[सातवाँ दृश्य]

[अदालत का दृश्य। सामने उच्चासन पर जज साहब विराजमान हैं। उसके सामने नीचे स्थल पर कुछ वकील एव सामने का कमरा दर्शकों से भरा हुआ है। एक ओर कोने मे मुख नीचा किये उदास मन मास्टर जी कठघरे मे खड़े हैं]

जज : शीतलप्रसाद तुम पर यह आरोप लगाया जाता है कि तुम चौधरी कमल के सुपुत्र राकेश की मारफत समय-समय पर रुपया ऐंठते रहे हो। एक दिन कक्षा मे देर से पहुँचने पर तुमने उसे इस निर्दयता से पीटा कि वह निर्दोष बेहोश हो गया।

मास्टर जी : (भावनात्मक ढंग से स्वीकार करते हुए) हाँ-हाँ जज साहब मैंने उसे पीटा है।

जज : क्या अपने बचाव पक्ष मे आप कुछ कहना चाहेंगे।

मास्टर जी : (करुणार्द स्वर मे) कुछ नहीं जज साहब केवल इतना कि अगर किसी के हित मे सोचना दोष है तो दोषी मैं हूँ, अगर सच बोलना गुनाह है तो गुनाहगार मैं हूँ, अगर ऐय्याशी में डूबे माता-पिता से तिरस्कृत एवं उपेक्षित बालकों को स्नेह देना पाप है तो उसका भागीदार मैं हूँ, हाँ जज साहब मैंने गुनाह किया जो इस राकेश को अपने लड़के सा प्यार किया, इसे महान् से महान् बनाना मेरी इच्छा थी अगर इन भावनाओं का दास बनना अपराध है तो अपराधी मैं हूँ, मैंने इसे प्यार किया है अगर इस दुनिया मे प्यार करना पाप है तो जज साहब मैं पापी हूँ, मैं अपराधी हूँ। जज साहब मुझे सजा दीजिए। (सहसा राकेश रोते-रोते मास्टर जी के पैरों पर गिर जाता है)

राकेश : नहीं-नहीं मास्टर जी, आपको कोई सजा नहीं होगी, [रोते हुए] दोष तो मेरा था मुझे सजा दीजिये। जज साहब मैंने झूठ बोला था

मैं ही आठ दिन से स्कूल नहीं गया। मेरी ने मुझसे पापा से पैसा माँगने को कहा था, मास्टर जी ने मुझे कभी नहीं मारा (सिर की ओर संकेत करते हुए) यह चोट तो मेरे साईकिल से टकराने के कारण हुई है, मैं मेरी के साथ फिल्में देखने, सैर-सपाटे करने जाता रहा हूँ।

कर्नल एवं श्रीमती कर्नल : (लज्जा से मास्टर जी के समीप जाकर) हमें क्षमा कर दीजिये हमसे बहुत बड़ी भूल हो गई जो आप जैसी महान् आत्मा को गलत समझा और इतना कष्ट पहुँचाया।

[आसपास मेरी को न पाकर वह दुष्ट लड़की कहाँ गई?]

मास्टर जी : (हर्ष मिश्रित मुस्कान से) मुझे कोई कष्ट नहीं हुआ कर्नल साहब! मास्टर जाति को कभी कोई कष्ट नहीं होता।

कर्नल : भूल मेरी ही है मास्टर जी! साहब, जो आपके हृदय के विशाल रूप को न देख सका जिसमें सब प्राणी मात्र के लिए प्यार एवं त्याग कूट-कूट कर भरा हुआ है। दोष हमारा ही था जो स्वयं हम बालक के प्रति उत्तरदायित्वों से विमुख हैं मुझे क्षमा कर दीजिये?

मास्टर जी : भाई मैं कौन हूँ क्षमा करने वाला? व्यक्ति का अन्तःकरण ही क्षमा प्रदान कर सकता है और फिर सुबह का भूला शाम को लौट आये तो उसे भूला नहीं कहा जाता।

[पर्दा गिरता है]

०००

हम सब एक हैं

गणपत लाल शर्मा

* * *

[कुछ लोगो का बातचीत करते हुए प्रवेश]

मोहन : मैंने आज तक जितने 'राजस्थान-श्री' देखे, उनमे रमेश जैसा आज तक नही देखा।

विनोद : कल शारीरिक गठन और सौन्दर्य दोनो मे उसकी जोड का एक भी प्रतियोगी नही था।

कमल : सितारों मे चांद-सा लग रहा था।

मोहन : क्या गठीला जवान है ?

विजय सिंह : अङ्ग की एक-एक मच्छी बोल रही थी। यार 'कॉलेज श्री' तो मैं भी हूँ पर रमेश तो रमेश ही है।

मोहन : लो इस 'श्री' को तो आप भूल ही गये ! इसकी भी थोड़ी······

विजय सिंह : मैं अपनी तारीफ करने की बात नही कहता।······खैर छोड़ो रमेश को आज बधाई देने चल रहे हो ? वह कल मोर्चे पर जा रहा है। सेना का अनुशासन ही ऐसा है।

कमल : अभी चले चलें। क्यों ?

सभी : हाँ ठीक है। [सबका प्रस्थान]

[रमेश कमरे में बैठा है। मोहन, विनोद, कमल सभी कमरे में प्रवेश करते हैं।]

(बारी-बारी से) भाई रमेश बाबू, आपके 'राजस्थान श्री' चुने जाने पर सबकी ओर से बधाई स्वीकार करें।

जी हां! आइये बैठिये! यह सब आपकी शुभकामनाओं का फल है।

: भाई कल तो स्टेज पर तुम ही तुम थे।

: तुम प्रतियोगिता में क्यों नहीं शामिल हुए?

: मैं तुम्हारे सामने क्या हूँ।

: अरे! इसमें निराश होने की क्या बात! हौसला बढ़ता है, प्रदर्शन की तकनीक मालूम होती है।

: हां! यह तो है ही।

(नौकर चाय लेकर आता है, रमेश चाय तैयार करता है)

: चाय में शक्कर कितनी डालूँ?

: मैं तो एक चम्मच ही लेता हूँ।

: भाई मैं तो मीठे के लालच से ही चाय पीता हूँ। मैं दो चम्मच लूँगा।

: जरूर, जरूर।

: इस चाय ने ही तुमको सीकिया पहलवान बना दिया है।

: हां, यदि इसे मोर्चे पर भेज दिया जाय तो यह क्या निहाल करेगा?

: और तुम जैसे बड़े तीस मार खां हो? बड़े तीर मार लोगे?

: अच्छा-अच्छा लड़ो मत 'हां रमेश! तुम सीमा पर कल जा रहे हो?

: हां कल ही जा रहा हूँ। सीमा पर तो मोर्चे तो हम सम्भालेंगे। पर देश के भीतर के मोर्चे?

: जनता सम्भालेगी।

: जनता अभी आपसी झगड़े में उलझी है। कहीं प्रान्त के नाम पर झगड़ा तो कहीं भाषा के नाम पर। ऐसा लगता है देश के शरीर का प्रत्येक अंग आपस में झगड़ रहा है।

विनोद : यहीं तो बुरी बात है। यदि ऐसा ही होता रहा तो देश कमजोर हो जायेगा।

रमेश : कल जब 'राजस्थान श्री' के मुकाबले मे लोगो ने मेरे प्रत्येक अंग की सराहना की तो मैं फूला नही समा रहा था।

कमल : क्यो नही सुन्दर पिण्डलियाँ और मजबूत रानो वाले पैर, बलिष्ठ भुजाएँ, उन्नत वक्ष, केहरी कटि और उसके साथ उज्ज्वल दूध से दाँत और सुन्दर आँखें ! सभी तो प्रशसनीय है।

रमेश : मैं जब घर आकर सोया तो सपने मे क्या देखता हूँ कि सभी अंग आपस में झगड़ रहे हैं।

सभी : (उत्सुकता से) क्या ? कैसे ? कुछ समझाओ तो ......

रमेश : तो सुनो सपने मे सभी अंगो ने क्या कहा ?

(पर्दा गिरता है। आंख का प्रवेश)

आँख : अरे ओ हाथ ! सुना तुमने ! मेरे द्वारा रक्षित इस शरीर की लोग कैसी तारीफ कर रहे हैं ?

हाथ : (प्रवेश करता हुआ) क्या है महारानी ? आज तो बडी खुश दिखाई दे रही हो ! ऐसा कौन-सा मैदान मार लिया ?

आँख : अरे निठल्ले ! मैं कोई तुम्हारे जैसे थोड़े ही हूँ, जो मैदान हाथ न लगे। इस शरीर की लोग प्रशसा क्यो करते हैं ? सोचा ?

हाथ : हाँ मालूम क्यों नही। हम बलिष्ठ दो भाई जो इसकी शान हैं।

आँख : अरे वाह मियाँ मिट्ठू ! अपनी तारीफ करना तो तुम्हें खूब आता है, वे तुम्हारी नहीं मेरी प्रशंसा करते हैं।

पैर : (प्रवेश करके) सुनो आँख और हाथ ! तुम दोनों बेकार का झगड़ा कर रहे हो। लोग इस शरीर की प्रशंसा मेरे कारण कर रहे हैं। वे मेरी चाल की, सुन्दर पिण्डलियाँ और मच्छीदार रानो की प्रशंसा कर रहे हैं।

आँख : वाह ! क्या देखकर प्रशंसा कर रहे हैं ?

पैर : हाँ, हाँ, मैं चिरकता हूँ, कूदता हूँ, दौड़ता हूँ उससे वे इस शरीर की ताकत का अन्दाजा लगाते है।

आंख : (गुस्से मे) चुप ओ शूद्र ! आज तुमको भी घमण्ड हो रहा है। प्रतिदिन रेत और गन्दगी से सने रहने वाले ! तू क्या प्रशंसा पायेगा !

पैर : पलकों की कोठरी मे बैठने वाली डरपोक ! तू हम वीरों के कार्य क्या जाने ! हम दोनों भाइयो का कड़ा परिश्रम ही इस शरीर को ऐसा बनाये हुए है ।

हाथ : वाह रे वीर के बच्चे ! तू हम दोनों भाइयों को नहीं जानता ? सब लोग यही कहते हैं । भुजाओं का दिया खाते हैं, भुजाओं के बल पर जीवित है ।

पैर : हां, हां, सुन लिया । पर तुमने यह नहीं सुना कि जब तक पैर चलते है तब तक ठीक । टट्टू थका कि शरीर थका ।

आंख : अरे कुरूप की प्रशंसा कभी नही होती। देख मेरे रूप पर रीझकर लोगो ने कितने मुहावरे और कितनी कहावतें रच डाली हैं ?

पैर : सुन्दरता पर नहीं लोग गुणों को देखते हैं । पचतंत्र की वह बारहसिंगे की कहानी नहीं सुनी जो अपने सींगो को सुन्दर और पैरों को कुरूप समझता था । उस सुन्दर सींगों ने झाड़ियों में फंसकर उसे मरवा डाला और हम पैरो ने यथाशक्ति भाग कर उसकी रक्षा की ।

आंख : सुनली तुम्हारी दलील । किस बूते पर भागते हो ? तुमको मैं सम्भालती हूं । कहीं ठोकर नही लग जाय, कहीं गड्ढे मे नहीं गिर पड़ो । कांटा न चुभ जाय । (हाथ की ओर मुड़कर) और हाथ ! तुम मेरे इशारे पर काम करते हो । तुम दोनों का इस शरीर को बनाने मे कोई योग नहीं ।

हाथ : चुप रहो वाचाल ! तुम स्वयं तो अपनी सहायता कर नहीं सकती, दूसरों का क्या निर्देशन करोगी ? एक मच्छर ने भी आकर डंसा नहीं कि रोने लगती हो । सहायता तो आखिर मुझको ही करनी पड़ती है ।

(प्रवेश करके) तुम सब निरर्थक लड़ रहे हो । तुम सबको इस

पेट की पूजा करनी चाहिये। मैं ही सब भोजन पचाकर, उसमे सबको बल प्रदान करता हूँ।

जीभ : (प्रवेश करके) अरे ओ आलस के अवतार! कुछ करते-धरते तो तुझसे बनता नहीं और बढ़-बढ़ कर बातें बनाता है। यदि मैं नही होऊँ और तुम तक खाना नही पहुँचाऊँ तो हाय-हाय करने लगेगा।

दांत : ओ झगड़े की साक्षात मूर्ति! तू अपनी आदत नही छोड़ेगी। महापुरुषो ने ठीक ही कहा है। जबान को लगाम चाहिए। यों ही बकवास करती जा रही है। अरे हम बत्तीस भाई न हों तो बिना चबाये भोजन को तू इस आलसी पेट के पास कैसे पहुँचा पायेगी?

जीभ : अरे जबड़ों पर आश्रित रहने वाले तुम क्या चबाते हो? यदि जबड़े नहीं चले तो तुम क्या कर सकते हो? यह तो मेरा और जबड़ों का ही काम है कि जबड़े चलते हैं, और मैं वस्तु को तुम्हारे नीचे देती हूँ, उसमे लार मिल कर फिर पेट तक पहुँचाती हूँ। तू तो जड़ है जड़।

हाथ : यह भी खूब रही! सारा यश तू ही लिये जा रही है। तूने यह नहीं कहा कि मैं भोजन और अन्य खाद्य वस्तुओ के लिए कितना परिश्रम करता हूँ। खाने वाली वस्तुओं को जुटाता हूँ, साफ करता हूँ, पकाता हूँ और तुम्हारे स्वाद के भेंट चढाने उसे मुँह तक पहुँचाता हूँ। तू पहले उसका स्वाद ले लेती है, फिर बेकार समझ कर पेट के पास पहुँचा देती है।

जीभ : चुप रहो! मेरे और आँख के गुलाम! यदि आँख तुम्हारी सहायता न करे और मेरे स्वाद को आज्ञा मैं तुमको न दूँ, तो तुम निठल्ले बैठे रहोगे। इस शरीर की सुन्दर बनावट मे हम दोनों का ही योग है।

पैर : हाँ तुम्हारे निर्माण की भी अजब बात है। खट्टा, कभी मीठा, तो कभी चटपटा न जाने कितनों को फरमाइश करती रहती हो, और हम दोनो भाइयों को उस तरफ भागना पड़ता है। यदि गलत फरमाइश हुई तो तुम अपना स्वाद ले लेती हो और सजा पेट को मिलती है।

आँख (गुस्से से) चुप रहो मूर्ख ! आज तुमको भी घमण्ड हो रहा है। प्रतिदिन रेत और कंकड़ों से सने रहने वाले ! तू क्या प्रशंसा पायेगा !

पैर . मच्छरों की कोठरी में बैठने वाली डरपोक ! तू हम वीरों के कार्य क्या जाने ! हम दोनों भाइयों का कड़ा परिश्रम ही इस शरीर को ऐसा बनाये हुए है।

हाथ . वाह रे वीर के बच्चे ! तू हम दोनों भाइयों को नहीं जानता ? सब लोग यही कहते हैं। भुजाओं का दिया खाते हैं, भुजाओं के बल पर जीवित हैं।

पैर . हाँ, हाँ, सुन लिया। पर तुमने यह नहीं सुना कि जब तक पैर चलते हैं तब तक ठीक। टट्टू थका कि शरीर थका।

आँख . अरे कुरूप की प्रशंसा कभी नहीं होती। देख मेरे रूप पर रीझकर लोगों ने कितने मुहावरे और कितनी कहावतें रच डाली हैं ?

पैर सुन्दरता पर नहीं लोग गुणों को देखते हैं। पचतंत्र की वह बारह-सिंगे की कहानी नहीं सुनी जो अपने सींगों को सुन्दर और पैरों को कुरूप समझता था। उस सुन्दर सींगों ने झाड़ियों में फँसकर उसे मरवा डाला और हम पैरों ने यथाशक्ति भाग कर उसकी रक्षा की।

आँख : सुनली तुम्हारी दलील। किस बूते पर भागते हो ? तुमको मैं सम्भालती हूँ। कहीं ठोकर नहीं लग जाय, कहीं गड्ढे में नहीं गिर पड़ो। काँटा न चुभ जाय। (हाथ की ओर मुड़कर) और हाथ ! तुम मेरे इशारे पर काम करते हो। तुम दोनों का इस शरीर को बनाने में कोई योग नहीं।

हाथ . चुप रहो वाचाल ! तुम स्वयं तो अपनी सहायता कर नहीं सकती, दूसरों का क्या निदेशन करोगी ? एक अणु ने भी आकर छेड़ा नहीं कि रोने लगती हो। सहायता तो आखिर मुझको ही करनी पड़ती है।

पेट : (प्रवेश करके) तुम सब निरर्थक लड़ रहे हो। तुम सबको इस

पेट की पूजा करनी चाहिये। मैं ही सब भोजन पचाकर, उसमें सबको बल प्रदान करता हूँ।

जीभ : (प्रवेश करके) अरे जो आलस के अवतार ! कुछ करते-धरते तो तुमसे बनता नहीं और बढ़-बढ़ कर बातें बनाता है। यदि मैं नहीं होऊँ और तुम तक खाना नहीं पहुँचाऊँ तो हाय-हाय करने लगेगा।

दाँत : ओ झगड़े की साक्षात मूर्ति ! तू अपनी आदत नहीं छोड़ेगी। महापुरुषों ने ठीक ही कहा है। जबान को लगाम चाहिए। यों ही बकवास करती जा रही है। अरे हम बत्तीस भाई न हों तो बिना चबाये भोजन को तू इस आलसी पेट के पास कैसे पहुँचा पायेगी ?

जीभ : *अरे जबड़ों पर आश्रित रहने वाले तुम क्या चबाते हो ? यदि जबड़े* नहीं चलें तो तुम क्या कर सकते हो ? यह तो मेरा और जबड़ों *का ही काम है कि जबड़े चलते हैं, और मैं वस्तु को तुम्हारे नीचे* देती हूँ, उसमें लार मिल कर फिर पेट तक पहुँचाती हूँ। तू तो जड़ है जड़।

हाथ : यह भी खूब रही ! सारा यश तू ही लिये जा रही है। तूने यह नहीं कहा कि मैं भोजन और अन्य खाद्य वस्तुओं के लिए कितना परिश्रम करता हूँ। खाने वाली वस्तुओं को जुटाता हूँ, साफ करता हूँ, पकाता हूँ और तुम्हारे स्वाद के भेंट चढ़ाने उसे मुँह तक पहुँचाता हूँ। तू पहले उसका स्वाद ले लेती है, फिर बेकार समझ कर पेट के पास पहुँचा देती है।

जीभ : चुप रहो ! मेरे और आँख के गुलाम ! यदि आँख तुम्हारी सहायता न करे और मेरे स्वाद की आज्ञा मैं तुमको न दूँ, तो तुम निठल्ले बैठे रहोगे। इस शरीर की सुन्दर बनावट में हम दोनों का ही योग है।

पैर : हाँ तुम्हारे निर्माण की भी अजब बात है। खट्टा, कभी मीठा, तो कभी चटपटा न जाने कितनों की फरमाइश करती रहती हो, और हम दोनों भाइयों को उसके लिए भागना पड़ता है। यदि गलत फरमाइश हुई तो तुम अपना स्वाद ले लेती हो और सजा पेट को मिलती है।

दांत : हाँ बेचारा पेट हाय-हाय करने लगेगा और यह सुन्दर शरीर रा

मे पड़ जायेगा। यही है न तुम्हारा योग।

हाथ : हाँ बिलकुल ठीक। और इसकी बहन आँख इस शरीर को ऐसा भट

देती है कि, यह इस लोक या परलोक कही का नही रहता। व

न दीन का रहता है न दुनिया का। तभी तो एक कवि

कहा है:—

नैण पटकद्यूं ताल पर, किरच किरच हो जाय।

मैं नैणाँ थने कद कह्यो, मन पहलां मिल जाय॥

पेट : अरे वाह हाथ वाह! खूब कही। इस सुन्दर शरीर को ये आँ

मजनूं बना देती है, वह चिथड़ा फाड़ता दर-दर भटकता है औ

इस तरह यह सुन्दर शरीर टूट जाता है।

दांत · और जीभ तो भैया आँख से भी बुरी है। किले के भीतर बैठी-बै

ऐसी बात करती है कि इस शरीर को इसका फल भोगना पड़

है। कपाल पर जूतों की इतनी बौछार होती है कि इस पर ए

भी बाल न रहे, और हमारी भी खैर नही रहती। इसीलिये रही

ने ठीक ही कहा है:—

रहिमन जिह्वा बावरी, कह गई सरग पताल।

आप कहि भीतर गई, और जूते खात कपाल॥

हाथ : अरे! बड़े-बड़े राज्य उजाड़ दिये है इस जीभ ने। इस पर ल

लगाम जरूरी है।

पेट : अब तुम सब चुप भी रहोगे या नहीं। तुम सबको मेरी गुलाम

करनी पड़ेगी। तुम्हारी सबकी यह बकवास बेकार है। मैं तुम्हा

राजा हूँ। तुम मेरी प्रजा हो। तुमको मेरी गुलामी करनी पड़ेगी

पैर! तुमको मेरे लिये दौड़ना पड़ेगा। हाथ! तुमको मेरे लिये भोज

जुटाना और पकाना होगा। आँख, दांत, जीभ सब खाना-खा

काम करो। यह सारा शरीर मेरा साम्राज्य है।

हाथ : हमें गुलाम कहने वाले दम्भी! तेरी खैर नहीं। हमारे सहयोग क

तुमने गुलामी कहा। हम गुलाम बनाया चाहते है, बनते नहीं

मैं तुम्हारे लिये कोई काम करने को तैयार नहीं।

दांत : हाँ बेचारा पेट हाय-हाय करने लगेगा और यह सुन्दर शरीर ख
में पड़ जायेगा। यही है न तुम्हारा योग।

हाथ : हाँ बिल्कुल ठीक। और इसकी बहन आँख इस शरीर को ऐसा भटक
देती है कि, यह इस लोक या परलोक कहीं का नहीं रहता। व
न दीन का रहता है न दुनिया का। तभी तो एक कवि
कहा है:—

नैण पटकदयूं ताल पर, किरच किरच हो जाय।
मैं नैणां थने कद कह्यो, मन पहलां पिल जाय॥

पेट : अरे वाह हाथ वाह! खूब कही। इस सुन्दर शरीर को ये आँ
मजनूं बना देती हैं, वह चिथड़ा फाड़ता दर-दर भटकता है औ
इस तरह यह सुन्दर शरीर टूट जाता है।

दांत : और जीभ तो भैया आँख से भी बुरी है। किले के भीतर बैठी-बै
ऐसी बात करती है कि इस शरीर को इसका फल भोगना पड़
है। कपाल पर जूतों की इतनी बौछार होती है कि इस पर ए
भी बाल न रहे, और हमारी भी खैर नहीं रहती। इसीलिये रही
ने ठीक ही कहा है:—

रहिमन जिह्वा बावरी, कह गई सरग पताल।
आप कहि भीतर गई, और जूते खात कपाल॥

हाथ : अरे! बड़े-बड़े राज्य उजाड़ दिये हैं इस जीभ ने। इस पर त
लगाम जरूरी है।

पेट : अब तुम सब चुप भी रहोगे या नहीं। तुम सबको मेरी गुलाम
करनी पड़ेगी। तुम्हारी सबकी यह बकवास बेकार है। मैं तुम्हा
राजा हूँ। तुम मेरी प्रजा हो। तुमको मेरी गुलामी करनी पड़ेगी
पैर! तुमको मेरे लिये दौड़ना पड़ेगा। हाथ! तुमको मेरे लिये भोज
जुटाना और पकाना होगा। आँख, दांत, जीभ सब अपना-अपन
काम करो। यह सारा शरीर मेरा साम्राज्य है।

हाथ : हमें गुलाम कहने वाले दम्भी! तेरी खैर नहीं। हमारे सहयोग क
तुमने गुलामी कहा। हम गुलाम बनाया करते हैं, बनते नहीं
मैं तुम्हारे लिये कोई काम करने को तैयार नहीं।

कमल : हाँ ठीक है ! यह भारत शरीर है । और शरीर के अंग है जनता ।

विजय : *किसान, मजदूर, कामगर पैर हैं जो निर्माण को गति देते है । तथा* सैनिक और युवक इसकी बलशाली भुजाएँ है ।

मोहन : *शिक्षक और नेता इसकी आँखें है जो देश का निदेशन कर उसे* खतरे से बचाते हैं ।

कमल : जीभ तो व्यापारी और उद्योगपति हैं जो नाना उद्योगों की *आकांक्षा करते हैं । और दांत ?*............

विनोद : दाँत मुनीम और कर्मचारी हैं ।

रमेश : और पेट है सरकार जो कर आदि की योजना के राजस्व का भोजन पचा, जन-समृद्धि की योजना के रस मे परिवर्तित कर देश मे प्रवाहित करता है ।

मोहन : तो मस्तिष्क बाकी क्यों छोड़ें ?

रमेश : मस्तिष्क है देश की संसद और विधान सभा । हृदय और फेंफड़े हैं *न्यायपालिका और व्यवस्थापिका । ये सब देश-रूपी शरीर की* तंत्रियों का संचालन करते हैं, प्राणवान बनाते हैं, शुद्धिकरण करते हैं ।

विजय : शरीर के अङ्गों की तरह इनमें समन्वय आवश्यक है ।

रमेश : हाँ सबकी एकता ही देश की समृद्धि है । सबको अपना-अपना कर्त्तव्य निभाना चाहिये । कारखानों में मजदूर अधिक उत्पादन करें, खेतो मे किसान । व्यापारी देश की अर्थ-व्यवस्था में सहयोग दें । सीमा पर हम अपना मोर्चा सम्भालें और जनता प्रान्तीयता, साम्प्रदायिकता के झगड़े छोड़ अपना मोर्चा सम्भाले ।

विनोद : बहुत अच्छा रमेश ! आज यह भी मालूम हुआ कि स्वस्थ शरीर *मे स्वस्थ मस्तिष्क रहता है । आज तुमने हमारे कर्त्तव्य का भान* कराया ।

विजय : तुम अपना मोर्चा सम्भालो । हम अपना । हमारा नारा है, हम एक थे, एक है, एक रहेंगे ।

रमेश : तो जय और जीत हमारी होगी ।

आँख : मेरे आगे अन्धेरा ही अन्धेरा है। यह क्या हो गया? अरे यह क्या हो गया?

पेट : ओह! सुनो! हाथ, पैर, आँख, दाँत और जीभ! मैं बड़ा दुखी हूँ। पीठ से मिला जा रहा हूँ। मेरा अस्तित्व मिटा जा रहा है। मैं गलती पर हूँ। हम सब इस शरीर के अंग हैं। ओह! आह!

हाथ : क्या कहना चाहते हो! जल्दी कहो!

पेट : हम सब एक दूसरे पर आश्रित हैं। यह शरीर सबका है। मुझको क्षमा करदो। अपना-अपना कार्य शक्ति अनुसार प्रारम्भ करो। सब ठीक हो जायेगा। तुम मुख तक खाना पहुँचाओ। मैं रस बना कर फिर तुम्हारे पास भेजूँगा। सब ठीक हो जायेंगे।

पैर : हाँ! हम किसी भी तरह इस शरीर को भोजन तक ले जायेंगे।

हाथ : हम भी अपना काम प्रारम्भ करते हैं।

आँख : पैर और हाथ भैया मैं आपके कार्य में हाथ बटाऊँगी।

हाथ-पैर : जरूर-जरूर! तभी हम सफल होंगे।

दाँत : मैं उस भोजन को ऐसा चबाऊँगा कि पेट भैया को पचाने में तनिक भी कठिनाई नहीं होगी।

जीभ : मैं आप सबके काम में सहयोग करूँगी। अपनी स्वाद भावना को त्याग पुष्ट भोजन की माँग ही करूँगी। प्राप्त भोजन को यथोचित रूप से पेट भैया के पास पहुँचाऊँगी।

पेट : और मैं आप सबके परिश्रम को अन्तिम रूप दूँगा। उसको पचाने का अपनी शक्ति भर प्रयत्न करूँगा।

सब : हम सब तैयार हैं। हम सब एक हैं।

(परदा उठता है। रमेश अपने साथियों के साथ बातचीत करता हुआ दिखाई देता है)

रमेश : हम सब एक हैं। और इस तरह देखता हूँ कि मैं स्वस्थ हो गया हूँ। मेरा शरीर पहले जैसा हो गया है। इसके बाद मेरी आँख खुल गई।

दिनेश : वाह! शरीर के अङ्गों में लड़ाई और शरीर का पतन। शरीर के अङ्गों में एकता और शरीर स्वस्थ।

राजू : तो मैं यही कहने जा रहा था। इसी तरह भारत की जनता में मनमुटाव, भारत का पतन और भारतीय जनता में एकता, भारत का शक्तिशाली होना।

कमल : हाँ ठीक है ! यह भारत शरीर है । और शरीर के अंग हैं जनता।

विजय : किसान, मजदूर, कामगर पैर हैं जो निर्माण को गति देते हैं । तथा सैनिक और युवक इसकी बलशाली भुजाएँ हैं ।

मोहन : शिक्षक और नेता इसकी आँखें हैं जो देश का निर्देशन कर उसे खतरे से बचाते हैं ।

कमल : जीभ तो व्यापारी और उद्योगपति हैं जो नाना उद्योगों की आकांक्षा करते हैं । और दांत ?..........

विनोद : दाँत मुनीम और कर्मचारी हैं ।

रमेश : और पेट है सरकार जो कर आदि की योजना के राजस्व का भोजन पचा, जन-समृद्धि की योजना के रस मे परिवर्तित कर देश में प्रवाहित करता है ।

मोहन : तो मस्तिष्क बाकी क्यों छोड़ें ?

रमेश : मस्तिष्क है देश की संसद और विधान सभा । हृदय और फेफड़े हैं न्यायपालिका और व्यवस्थापिका । ये सब देश-रूपी शरीर की तंत्रियों का संचालन करते हैं, प्राणवान बनाते हैं, शुद्धिकरण करते हैं ।

विजय : शरीर के अङ्गों की तरह इनमें समन्वय आवश्यक है ।

रमेश : हाँ सबकी एकता ही देश की समृद्धि है । सबको अपना-अपना कर्त्तव्य निभाना चाहिये । कारखानों में मजदूर अधिक उत्पादन करें, खेतों मे किसान । व्यापारी देश की अर्थ-व्यवस्था मे सहयोग दें । सीमा पर हम अपना मोर्चा सम्भालें और जनता प्रान्तीयता, साम्प्रदायिकता के झगड़े छोड़ अपना मोर्चा सम्भाले ।

विनोद : बहुत अच्छा रमेश ! आज यह भी मालूम हुआ कि स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मस्तिष्क रहता है । आज तुमने हमारे कर्त्तव्य का भान कराया ।

विजय : तुम अपना मोर्चा सम्भालो । हम अपना । हमारा नारा है, हम एक थे, एक हैं, एक रहेंगे ।

रमेश : तो जय और जीत हमारी होगी ।

जनता-पुलिस–एकता-जिन्दाबाद !

गणपतलाल शर्मा

* * *

स्थान : सेठ किस्तूर चन्द का मकान। किस्तूर चन्द चौधरी धीरा राम और अन्य कुछ लोग बैठे हैं।

किस्तूर चन्द : धीराजी ! आज के कुछ समाचार सुने ? मेघजी के पीछे पुलिस लग गई है और वे अपने गाँव की ओर आ रहे हैं।

धीरा : आज कहाँ डकैती डाली ?

किस्तूर चन्द : अजी डकैती कहाँ डाली। डालने जा रहे थे कि पुलिस को मालूम हो गया। उसने पहले ही मोर्चा लगा लिया।

धीरा : मुखबिरों ने खबर क्यों नहीं दी ? यदि पुलिस ने मोर्चा ले लिया था, तो मेघजी को सचेत करना था।

किस्तूर चन्द : ठीक है। परन्तु पुलिस ने गाँव से बाहर किसी को निकलने ही नहीं दिया। इतना समय भी नहीं था।

धीरा : खैर पर किस्तूर चन्दजी ! मेघजी का हमेशा अपने गाँव में रहना ठीक नहीं। हम कभी पुलिस की नजरों में चढ़ गये तो.........

किस्तूर चन्द : अरे छोड़ ऐसी कायरता की बात (कुछ देखता है) लो मेघजी तो आ ही गये।

(डाकू मेघसा का कुछ साथियों के साथ प्रवेश) पधारो, पधारो मेघजी ! आज क्या बात है ?

मेघला : देखो किस्तूर चन्दजी ! और चौधरी वीरा ! हम थके हुए हैं ! पुलिस हमारा पीछा कर रही-है।) परन्तु फिर भी हम यहां विश्राम करना चाहते हैं । जल्दी प्रबन्ध करो ।

(सब सिर झुकाकर स्वीकृति देते हैं)

एक डकैत : इस गांव पर हमको पूरा भरोसा है । हम भी अपना फर्ज निभायेंगे ।

दूसरा डकैत : देखते जाओ ! इस गांव में खपरैल का एक मकान नजर नहीं आयेगा । मालामाल कर देंगे । पक्के मकान बन जायेंगे सबके । हाँ इन्तजाम में दारुड़ा, मारुड़ा का भी प्रबन्ध होना चाहिये ।

मेघला : हाँ ! जल्दी करो ! तुम्हारा यह गांव इसीलिये बचा हुआ है कि तुम हमारी सेवा करते आ रहे हो । नहीं तो आज गांव मेघसिंह के हाथों कभी धूल में मिल गया होता । जाओ !

(सब जाते हैं ।)

वीरा : ठाकुरों की वेगार तो गई, पर यह नयी वेगार सिर पर आ पड़ी है ।

गांव चौधरी : किस्तूर चन्द जी ! हिम्मत तो नहीं होती । पर आप हमारे ही हैं तो कहे देता हूँ । हम इनके खाने-पीने का प्रबन्ध तो करते हैं पर गांव की बहन बेटियों की इज्जत ये सरे आम लूटते हैं, यह ठीक नहीं ।

किस्तूर चन्द : मेरा भाई ! तुम बड़े भोले हो । अपनी कौनसी बहन-बेटी ? उनको पैसा भी तो देते हैं । खैर छोड़ो पहले प्रबन्ध करना है । वीरा जी ! कहाँ प्रबन्ध करें ?

वीरा : जहाँ आपकी मर्जी । एक जगह ठहरना ठीक नहीं । जगह बदलते रहना चाहिये ।

किस्तूर चन्द : अच्छा तो मेरे नोहरे का तलघर कैसा रहेगा ?

वीरा : उससे अच्छी जगह कोई नहीं । एकान्त का मकान और तलघर में किसी को पता भी नहीं लगेगा ।

किस्तूर चन्द : तो ठीक है । चलो ।

(सभी थोड़ी देर बाद मेघला के पास पहुँचते हैं)

जनता-पुलिस–एकता-जिन्दाबाद !

गणपतलाल शर्मा

* * *

स्थान : सेठ किस्तूर चन्द का मकान । किस्तूर चन्द चौधरी धीरा राम और अन्य कुछ लोग बैठे हैं ।

किस्तूर चन्द : धीराजी ! आज के कुछ समाचार सुने ? मेघजी के पीछे पुलिस लग गई है और वे अपने गाँव की ओर आ रहे हैं ।

धीरा : आज कहाँ डकैती डाली ?

किस्तूर चन्द : अजी डकैती कहाँ डाली । डालने जा रहे थे कि पुलिस को म...
हो गया । उसने पहले ही मोर्चा लगा लिया ।

धीरा : मुखबिरों ने खबर क्यों नहीं दी ? यदि पुलिस ने मोर्चा ले...
था, तो मेघजी को सचेत करना था ।

किस्तूर चन्द : ठीक है । परन्तु पुलिस ने गाँव से बाहर किसी को नि...
नहीं दिया । इतना समय भी नहीं था ।

धीरा : खैर पर किस्तूर चन्दजी ! मेघजी का हमेशा अपने ...
ठीक नहीं । हम कभी पुलिस की नजरों में चढ़ गये ...

किस्तूर चन्द : अरे छोड़ ऐसी कायरता की बात । (कुछ देखकर) ...
आ ही गये ।
(डाकू मेघला का प्रवे...
मेघजी !

चाहिये। डाकुओं को पकड़वाने में मदद करने वाले को इनाम मिलता है। अच्छा हम पास ही डाकुओं को खोज रहे हैं। आप लोग सावधान रहें। ज्योंही डाकुओं का आभास हो तुरन्त हमें सूचित करें।

सेठ : जो हुक्म साहब।

(पुलिस का प्रस्थान)

सेठ : देखो, कोई इत्तला देने नहीं जावे। ये पुलिस वाले केवल बकवास करते हैं। डाकुओं का सामना कभी नहीं करते। दिखावे के लिए यों ही इधर-उधर हाथ-पांव मारते हैं।

एक आदमी : हां, गोली के सामने जाते इनकी नानी मरती है। सबको अपनी जान प्यारी है। सबके पीछे बाल बच्चे हैं।

सेठ : जो आदमी शिकायत करता है, वह बेमौत मारा जाता है। उसका पूरा परिवार डाकुओं के द्वारा मौत के घाट उतार दिया जाता है। ऐसा इनाम मिलता है।

दूसरा आदमी : (डरा हुआ सा) सच है। पर कभी-कभी पुलिस वाले भी तंग करते हैं। बताओ कौन आये हैं, कहाँ छिपे हैं? तुम झूँठ बोलते हो आदि।

सेठ : कुछ भी हो हमारे गाँव का संगठन नहीं टूटना चाहिये। हमें ये पुलिस वाले क्या निहाल करने वाले हैं? ये डाकू कुछ न कुछ तो हमें देते ही हैं।

पहला आदमी : हाँ साहब!

सेठ : अच्छा मैं अब मेघजी की सेवा में जा रहा हूँ। सावधान! किसी के बहकावे में मत आना।

सभी : जो हुक्म।

(सेठ का प्रस्थान। बाद में सभी का प्रस्थान। दूसरी ओर से चौधरी भेरा और हीरा का प्रवेश।)

हीरा : भेरा जी! आप कैसे गाँव चौधरी हैं? आपको बहकाकर सेठ कस्तूरचन्द पूरे गाँव को उल्लू बनाता है।

किस्तूर चन्द : (हाथ जोड़कर) सब तैयार हैं हुक्म, ! पधारिये ! (अन्य लोग भी हाथ जोड़े खड़े रहते हैं ।

मेघला : अच्छा हम जाते हैं । पर खबरदार ! यदि किसी ने गद्दारी की, तो मेघसिंह की यह रायफल उसे भून डालेगी और गाँव की ईंट से ईंट बजा दी जायेगी ।
(सबका प्रस्थान पुलिस सुपरिन्टेण्डेण्ट, कुछ अधिकारी और सिपाहियों का प्रवेश)

एस.पी. : सेठजी ! यहाँ कोई अजनबी तो नहीं आये, जिनके पास बन्दूकें भी थी ।

सेठजी : नहीं साहब, इधर तो कोई नही आये ।

एक पुलिस अफसर : देखो, हम डाकुओं का पीछा करते हुए जा रहे हैं । उनके पैरों के निशान तुम्हारे गाँव में आये हैं ।

सेठजी : आये होंगे साब । पर हम तो यहाँ चार-पाँच घण्टे से बैठे हैं । इधर तो कोई आये नही ।

पुलिस थानेदार : पुलिस वाले भी नही आये ।

सेठ : आप ही आये हैं । दूसरे तो कोई आये नहीं ।

थानेदार : डाकू गाँव वालों को धोखा देने के लिए पुलिस के वेश में भी आते हैं । इसका ध्यान रखना ।

सेठ : हाँ साब, डाकुओं का बड़ा जोर है । रोजाना कुछ न कुछ सुनते रहते हैं । आप लोग कभी कभी धीरज बंधाने आ जाते हैं । इसीलिये थोड़ा विश्वास है । वरना हम कभी के गाँव छोड़कर चले जाते ।

एस.पी. : गाँव छोड़कर जाना कायरता है । डाकुओं को पकड़ने में पुलिस की मदद करो । जनता और पुलिस के सहयोग से ही डाकुओं का सफाया जल्दी हो सकेगा ।

पुलिस थानेदार : परन्तु जनता में भी कुछ ऐसे गद्दार लोग होते हैं, जो डाकुओं को छुपाने में सहायता करते हैं । उन्हें शस्त्र और खाना पहुँचाते हैं ।

एस.पी. : ऐसे लोग समाज के दुश्मन हैं । उसकी सूचना पुलिस को देंं

थानेदार : अच्छा बैठो । बोलो क्या खबर है ?

भेरा : बैठने का समय नहीं है । जल्दी कीजिये । मेघला किस्तूरचन्द के मकान में छुपा हुआ है ।

थानेदार : क्या कहते हो ? अभी तो सेठ कह रहा था, यहाँ कोई नहीं आया ।

भेरा : वह डाकुओं से मिला हुआ है ।

एस.पी. : अच्छा फिर जल्दी करो । चलो । बैठो सभी जीप में । बहादुर जवानों आज मेघला बच कर नहीं जाना चाहिये । पुलिस के इतिहास में अपनी वीरता का अध्याय जोड़ दो । आज तुम्हारे कर्तव्य की घड़ी है । तुम्हारी परीक्षा है । चलो ।

(सभी का प्रस्थान)

(सेठ किस्तूरचन्द के मकान के बाहर पुलिस जीपों से उतरकर मोर्चा सम्भालती है ।)

एस.पी. : (ध्वनि विस्तारक पर) डाकू मेघला ! तुम पुलिस के घेरे में हो । हथियार डाल दो और अपने साथियों के साथ अपने आपको पुलिस को समर्पण करदो ।

(तलघर में नाच-गान और शराब के दौर चल रहे हैं । एस पी. हवा में फायर करता है । नाचगान बन्द होता है । एस.पी. अपनी घोषणा पुनः दोहराता है)

मेघला : सेठ किस्तूरचन्द ! यह गद्दारी !

सेठ : (घबराकर) गद्दारी ? मैं····मैं··· मैं गद्दारी करता तो यहाँ क्यों आता ?

मेघला : तो किसने की है यह गद्दारी ?

सेठ : (कांपता हुआ) भेरा हो सकता है । वह आजकल खिचा-खिचा रहता है ।

मेघला : अच्छा तो उससे भी निपटेंगे । चलो साथियो ! निकलने की तैयारी करो ।

(सब राइफलें उठाकर खिड़की के रास्ते से बाहर निकलते हैं । भेरा उन्हें देख लेता है । वह उधर झपटता है ।)

भेरा : मैं सब समझता हूँ। सेठ बड़ा चालाक और धूर्त है। डाकुओं से मिला हुआ है। इसलिये..........

वीरा : इसलिये क्या ? इसमें क्या डरने की आवश्यकता। वह डाकुओं से मिला हुआ है, हमें पुलिस से मिलना चाहिये। गांव की बहू-बेटियों की इज्जत खतरे में है।

भेरा : सुना है आज पुलिस वाले आये थे।

वीरा : हां आये थे। कह रहे थे, डाकुओं को पकड़ाओ, पुलिस की मदद करो। इनाम मिलेगा।

भेरा : सेठ ने क्या कहा ? तुम सेठ के ज्यादा नजदीक हो। मैं तो उससे ज्यादा बात करता नहीं। कभी कुछ कह दिया तो यों ही रार पड़ेगी।

वीरा : किस्तूरचन्द क्या कहता ? यही, "यहां कोई नहीं आया, हमें तो आप पर भरोसा है।" ऐसा कह कर पुलिस को धत्ता बता दिया।

भेरा : डाकुओं का माल खाता है न। कहेगा ही।

वीरा : और गांव वालों को पुलिस के जाने के बाद क्या कहता है सेठ। "सुनो ! गांव का संगठन मत तोड़ना। कोई इत्तला मत देना।"

भेरा : अच्छा ? पुलिस वाले कहां हैं ?

वीरा : यही गांव के पास ही नदी की खार में।

भेरा : मैं खबर करने जाता हूँ। आज इस पार या उस पार।

वीरा : क्यों खतरा मोल लेते हो ?

भेरा : अरे, गांव चौधरी हूँ। तुम चिन्ता मत करो। समाज के दुश्मनों को दण्ड मिलना ही चाहिये। (प्रस्थान).

(वीरा का भी प्रस्थान)

(नदी के किनारे जंगल में भेरा पुलिस के पास पहुँचता है)

भेरा : जय राम जी की थानेदार साहब।

थानेदार : अरे भेरा जी हम और एस.पी. साहब अभी-अभी तुम्हारे गांव में होकर आये हैं।

भेरा : हां खबर मिली थी। मैं आपको और एस.पी. साहब सुनाने आया हूँ।

थानेदार : अच्छा बैठो। बोलो क्या खबर है ?

मेरा : बैठने का समय नहीं है। जल्दी कीजिये। मेघला किस्तूरचन्द के मकान में छुपा हुआ है।

थानेदार : क्या कहते हो ? अभी तो सेठ कह रहा था, यहाँ कोई नहीं आया।

मेरा : वह डाकुओं से मिला हुआ है।

एस.पी. : अच्छा फिर जल्दी करो। चलो। बैठो सभी जीप में। बहादुर जवानों आज मेघला बच कर नहीं जाना चाहिये। पुलिस के इतिहास में अपनी वीरता का अध्याय जोड़ दो। आज तुम्हारे कर्तव्य की घड़ी है। तुम्हारी परीक्षा है। चलो।

(सभी का प्रस्थान)

(सेठ किस्तूरचन्द के मकान के बाहर पुलिस जीपों से उतरकर मोर्चा सम्भालती है।)

एस.पी. : (ध्वनि विस्तारक पर) डाकू मेघला ! तुम पुलिस के घेरे में हो। हथियार डाल दो और अपने साथियों के साथ अपने आपको पुलिस को समर्पण करदो।

(तलघर में नाच-गान और शराब के दौर चल रहे हैं। एस.पी. हवा में फायर करता है। नाचगान बन्द होता है। एस.पी. अपनी घोषणा पुनः दोहराता है)

मेघला : सेठ किस्तूरचन्द ! यह गद्दारी !

सेठ : (घबराकर) गद्दारी ? मैं····मैं····मैं गद्दारी करता तो यहाँ क्यों आता ?

मेघला : तो किसने की है यह गद्दारी ?

सेठ : (काँपता हुआ) मेरा हो सकता है। वह आजकल खिचा-खिचा रहता है।

मेघला : अच्छा तो उससे
करो।
(सब ..

भेरा : एस.पी. साहब, मेघला भाग रहा है ।

मेघला : चौधरी ! गद्दार ! ले इनाम ।(गोली चलाता है)मक्कार । पुलिस के कुत्ते । (भेरा के गोली पैर में लगती है । वह गिर पड़ता है। दोनों ओर से गोली चलती है । मेघला भेरा की तरफ से भागने की कोशिश करता है । भेरा उसकी टाँग पकड़ लेता है । मेघला मुड़ता है । एस.पी. की गोली मेघला के लगती है । वह आह करके गिरता है ।)

भेरा : मेघला मारा गया । मेघला मारा गया ।
(दूसरे डाकू शस्त्र छोड़कर हाथ उठाकर समर्पण करते हैं । एस.पी. और थानेदार भाग कर भेरा के पास आते हैं ।)

एस. पी. : शाबाश भेरा जी ! आज आपने बहुत बड़ा काम किया । आपके चोट कहाँ लगी है ?

भेरा : चोट की चिन्ता मत करो एस. पी. साहब ! मेघला से भी बड़कर डाकू है किस्तूर चन्द । उसे पकड़ो ।

एक पुलिस : (सेल्यूट करके) किस्तूर चन्द पकड़ लिया गया है, साहब ।

एस. पी. : बहुत अच्छा ! गद्दारों को सजा मिलेगी । कानून के हाथ लम्बे हैं । इससे कोई नहीं बच सकता ।

थानेदार : भेरा जी जैसे नागरिकों पर सबको गर्व है ।

एस. पी. : इस प्रकार जनता का सहयोग मिलता रहा तो डाकुओं का सफाया शीघ्र हो जायेगा ।

एक नागरिक : जनता-पुलिस-एकता—जिन्दाबाद !
(भेरा को उपचार के लिये उठाते हैं । नारे लगाते हुए प्रस्थान)

[पर्दा गिरता है]

●●●

बड़ा कौन ?

गणपतलाल शर्मा

* * *

[स्थान—विद्यालय। कक्षा में कुछ छात्र बैठे हुए हैं। गुरुजी का कक्षा में प्रवेश। सभी छात्र गुरुजी के सम्मान में खड़े होते हैं।]

सभी छात्र : प्रणाम गुरुजी !

गुरुजी : आशीर्वाद बच्चो ! खुश रहो ! बैठो।…………… अपनी-अपनी पुस्तकें निकालो !
(छात्र अपनी-अपनी पुस्तकें निकालते हैं)

गुरुजी : अच्छा बच्चो बताओ, राणाप्रताप कौन थे ? गोपाल !

गोपाल : मेवाड़ के महाराणा थे जो अपनी स्वतन्त्रता की रक्षा के लिए अकबर से लड़ते रहे। अनेकों कष्ट सहे।

गुरुजी : भामाशाह कौन थे ? महेश तुम बताओ !

महेश : राणा प्रताप के मंत्री थे।

गुरुजी : उनका नाम इतिहास में क्यों प्रसिद्ध है ?

राम : मैं बताऊँ गुरुजी ?

गुरुजी : हाँ बताओ।

राम : राणा प्रताप के पास जब अकबर का सामना करने के लिए सेना एकत्रित करने के लिये धन की कमी आ गई और वे जंगलों में रहकर घास की रोटियां खा रहे थे। ऐसे दिनों में उन्होंने मेवाड़ को छोड़कर जाने का निश्चय किया तो भामाशाह ने अपनी सारी सम्पत्ति देश की स्वतन्त्रता की रक्षा के लिए राणा को दे दी।

व्यासजी ने बताया था कि सोने में कलियुग रहता है। सोना तो रक्षाकोप में ही अच्छा है।

गुरुजी : अच्छा शान्त रहो ! नाव मे जल बढ़ने पर क्या करना चाहिए ?

कमला : दोनों हाथों से उलीच कर बाहर फेंकना चाहिए।

गुरुजी : और इसी प्रकार घर में दाम बढ़ने पर क्या करना चाहिये ?

मोहन : गुरुजी पानी को तो उलीच कर फेंकते हैं। पर रुपयो को उलीच कर फेंकने वाला तो मूर्ख ही है।

गुरुजी : दाम को दोनो हाथों से उलीचने का अर्थ है—खूब दान देना।

राम : हाँ गुरुजी यह तो सज्जन का काम है। इससे कइयो का भला होगा।

गुरुजी : ठीक है बेटा रामू। यदि घर मे पैसा आवश्यकता से अधिक बढ़ जाता है तो कई बुराइयाँ आ जायेगी। वह घर बुराइयो से डूब जायेगा।

राम : चोर-डाकू का भी तो भय रहता है गुरुजी।

गुरुजी : हाँ ठीक है। इसीलये पैसा बढ़ने पर जो दान देता है, वह सज्जन है। अच्छा ! यह तो तुलसीदास जी ने कहा। अब कबीर क्या कहते हैं ? सुनो !

चिड़ी चोच भर ले गई, नदी न घटियो नार।
दान दिये धन ना घटे, कह गये दास कबीर ॥

बताओ राम ! क्या समझे ?

राम : गुरुजी दान देने से धन कभी नही घटता। भला एक चिड़िया के एक बूंद पानी पी जाने से कभी नदी का पानी घटता है !

गुरुजी : ठीक है बेटा राम। बडे आदमी जो कुछ कहते हैं वह सोच-समझ कर कहते हैं।

राम : गुरुजी बड़े आदमी कौन होते हैं ? आप भी आशीर्वाद देते हैं तो कहते हैं—"बड़े आदमी बनो।" माँ भी कहती है—"बड़े आदमी ऐसा कह गये हैं, वैसा कह गये हैं।" पर बडे आदमी कैसे होते हैं, यह नही समझा गुरुजी।

गुरुजी : यह भी समझ जाओगे। अच्छा अब समय हो गया है। जाओ। हाँ आज शाम उत्सव की तैयारी के लिये स्कूल आना है।

(सबका प्रस्थान)

गुरुजी : बहुत अच्छा ! शाबाश ! अब दान के बारे में किसी कवि का कोई कथन याद है तो सुनाओ। (सभी छात्र चुप हैं)

गुरुजी : अच्छा आज हम दान के बारे में तुलसी और कबीर की उक्तियाँ पढ़ेंगे। बाईसवाँ पाठ निकालो।
(सभी छात्र पुस्तक खोलते हैं)

गुरुजी : देखो बच्चो ! तुलसीदास जी ने दान के बारे में कहा है :—
जो जल बाढ़े नाव में, घर में बाढ़े दाम,
दोनों हाथ उलीचिये, यही सज्जन का काम।
बताओ नाव में पानी भरने लग जाय तो क्या करोगे ?

एक छात्र : नाव में पानी भरेगा तो वह डूब जायेगी।

गुरुजी : हाँ, डूब जायेगी। परन्तु नाव में बैठे लोगों को क्या करना चाहिए ?

वही छात्र : तैरना आता है तो नाव से कूद जाना चाहिये।

गुरुजी : (दोहे को पुनः पढ़कर) तुलसीदास जी ने क्या तरीका बताया है ? गोपाल....।

गोपाल : दोनों हाथों से पानी उलीच कर बाहर फेंकना चाहिए।

गुरु : क्यों ?

गोपाल : पानी उलीचा नहीं तो नाव में पानी भरने से वह डूब जायेगी।

गुरु : बहुत अच्छा, बैठो और घर में दाम बढ़ जायें तो क्या करना चाहिए।

महेश : बैंक या पोस्ट ऑफिस में जमा करा देना चाहिये।

वीणा : गुरुजी, विनोद कहता है कि धन को गाड़ कर रखना चाहिए।

गुरुजी : जो धन को जमीन में गाड़ कर रखते हैं वे नादान हैं। वह धन न तो उनके ही काम में आता है, न दूसरों के। और मरने से पहले किसी को नहीं बताया तो वह धन जमीन में ही गड़ा रह जायेगा।

महेश . हाँ गुरुजी ! इसीलिये रुपया बैंक या पोस्ट ऑफिस में ही जमा कराना चाहिए। इससे ब्याज भी मिलता है।

गुरुजी : ठीक है। परन्तु मैंने पूछा था घर में अधिक दाम बढ़ने पर क्या करना चाहिए ?

कमला : गहने बनवा लेने चाहिए।

एक लड़का : इसे सभी से गहने पर मोह है। अरे कल कथा में सुना नहीं !

बनने का दम भरता है। अरे यह रामू तो क्या मेरी महानता के लिए तुलसीदास जी भी कह गये हैं :—

तुलसी अम्ब, सुअम्ब तरु फूलहिं फलहिं पर हेत।
वे इतने पाहन हनें, वे उतते फल देत॥

लेटर बक्स : किसी ने कह दिया और तुम बड़े हो गये। क्या कहने तुम्हारे बड़प्पन के? बच्चे के महान कहने से वह महान नहीं होता। हाँ दिल बहलाने को गालिब खयाल अच्छा है। तू भी अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बन कर दिल बहला ले।

दीपस्तम्भ : अरे दूसरों की प्रशंसा से तुमको जलन क्यों है? कोई किसी की प्रशंसा बिना बात नहीं करता। तेरे में ऐसे गुण भी तो हों कि कोई तारीफ करे। सुना आम! इस लेटर बक्स की वाणी में ईर्ष्या की बू आ रही है।

लेटर बक्स : और तेरे बोल से जैसे फूल झड़ते हैं? क्यों? अरे मूर्ख........

दीपस्तम्भ : चुप रहो! मूर्ख मैं नहीं तुम हो। मैं ज्ञान का प्रतीक हूँ।

लेटर बक्स : वाह रे ज्ञान के प्रतीक! अरे तेरे साये में आने वाला अन्धेरे में ही रहेगा। हाँ तेरे से दूर रहने वाला जरूर लाभ उठाता है। अपने तले अन्धेरा रखने वाला भी कोई महान होता है? एक मैं ही महान हूँ, जिसके पास सब बड़े प्रेम से आते हैं।

लेटर बक्स : (व्यंग्य से) हाँ! बड़े प्रेम से आते हैं। पत्थर ले कर! अरे तुम दोनों ऐसे ही हो। लोग पत्थर से ही स्वागत करेंगे।

आम का पेड़ : अबे ओ पेटू! हमें तो वैसा कहने के पहले अपनी औकात तो झांक ले! तेरी नियत तो अपना पेट भरने की रहती है। पर डाकिया तेरी एक नहीं चलने देता।

दीपस्तम्भ : और इस तरह अपना पेट भरने वालों से बड़ा अनर्थ होने का भय रहता है। इनकी कन्जूसी से लोग बड़े दुःखी रहते हैं।

आम का पेड़ : ठीक है। ऐसे कन्जूसों को दण्ड देने वाले भी मिलते हैं। इस पेटू लेटर बक्स को डाकिया ठीक करता है। कन्जूस जमाखोरों को डाकू।

लेटर बक्स : वाह रे मेरी औकात की याद दिलाने वाले! अरे तेरी औकात तो बच्चे-बन्दर सभी आंकते हैं। मैं पेटू नहीं हूँ। बड़े पेट वाला हूँ।

दूसरा दृश्य

(एक आम के पेड़ के पास एक लेटर बक्स और एक दीप स्तम्भ है। राम हाथ में एक पत्र लेकर आता है।)

राम : गुरुजी कहते हैं–बड़े आदमी बनो। माँ कहती है, बड़े आदमी कह गये हैं–घर का काम करो, ऐसा करना चाहिए, वैसा करना चाहिए। हूँ....पर बड़ा है कौन ? खैर यह पत्र माँ ने दिया है, इसे लेटर बक्स में डाल दूँ।....(पत्र डालता हुआ) भाई मेरे लिये तो यह लेटर बक्स बड़ा है। यह हमारे समाचार मेरे पिताजी के पास पहुँचा देगा। (पत्र डालने के बाद आम के पेड़ की ओर देखता है) धत् तेरे की। लेटर बक्स से तो यह आम का पेड़ अच्छा है। (पत्थर फैंकता है। आम गिरता है) है न यह आम का पेड़ बड़ा ? इसने यह मीठा-मीठा रसवाला आम खाने को दिया। भाई आम के पेड़ तुम बड़े हो। (आम खाता हुआ चलता है। साँप देखता है और चौंकता है) साँप—साँप—साँप ! अरे साँप !! अभी मुझको काट खाता। (भागता है खड्डा देखकर) अरे इधर तो खड्डा है। (दीप-स्तम्भ के चबूतरे पर चढ़ता है। डरता हुआ काँपता है) ओह ! ओह ! भाई दीपस्तम्भ तुम बड़े हो। तुमने ही मुझको साँप और खड्डे से बचाया। डर लग रहा है। घर कैसे जाऊँ ? यहीं बैठ जाता हूँ। कोई साथ आने पर जाऊँगा। (राम बैठ जाता है। बैठे-बैठे उसे झपकी आ जाती है। सपने मे पेड़, लेटर बक्स और दीप स्तम्भ बातचीत करते हैं।)

आम का पेड़ : हा...हा .. हा... हा....। मैं बड़ा हूँ। मैं महान हूँ। ऐ बिजली के खम्भे और लेटर बक्स ! सुनो ! मैं बड़ा हूँ।

लेटर बक्स : अबे बड़े की दुम। 'बड़े–बड़े' की यह बकवास बन्द कर। तू बड़ा नहीं। मैं बड़ा हूँ। मैं महान हूँ।

दीपस्तम्भ : (अट्टहास करता हुआ) हा....हा... हा....हा....। मैं बड़ा हूँ। मैं महान हूँ। सुना नहीं ? रामू ने तुम दोनों से मुझको बड़ा बताया है।

पेड़ : लो सुनो इस ढीठ की बात ! जो एक बच्चे की बात पर महान

बनने का दम भरता है। अरे यह रामू तो क्या मेरी महानता के लिए तुलसीदास जी भी कह गये हैं :—

तुलसी अम्ब, सुअम्ब तरु फूलहिं फलहिं पर हेत।
वे इतने पाहन हनें, वे उतते फल देत॥

लेटर बक्स : किसी ने कह दिया और तुम बड़े हो गये। क्या कहने तुम्हारे बड़प्पन के? बच्चे के महान कहने से वह महान नहीं होता। हाँ दिल बहलाने को गालिब खयाल अच्छा है। तू भी अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बन कर दिल बहला ले।

दीपस्तम्भ : अरे दूसरों की प्रशंसा से तुमको जलन क्यों है? कोई किसी की प्रशंसा बिना बात नहीं करता। तेरे में ऐसे गुण भी तो हों कि कोई तारीफ करे। सुना आम! इस लेटर बक्स की वाणी में ईर्ष्या की बू आ रही है।

लेटर बक्स : और तेरे बोल से जैसे फूल झड़ते हैं? क्यों? अरे मूर्ख......

दीपस्तम्भ : चुप रहो! मूर्ख मैं नहीं तुम हो। मैं ज्ञान का प्रतीक हूँ।

लेटर बक्स : वाह रे ज्ञान के प्रतीक! अरे तेरे साये में आने वाला अन्धेरे में ही रहेगा। हाँ तेरे से दूर रहने वाला जरूर लाभ उठाता है। अपने तले अन्धेरा रखने वाला भी कोई महान होता है? एक मैं ही महान हूँ, जिसके पास सब बड़े प्रेम से आते हैं।

लेटर बक्स : (व्यंग्य से) हाँ! बड़े प्रेम से आते हैं। पत्थर ले कर! अरे तुम दोनों ऐसे ही हो। लोग पत्थर से ही स्वागत करेंगे।

आम का पेड़ : अबे ओ पेटू! हमें तो वैसा कहने के पहले अपनी औकात तो झांक ले! तेरी नियत तो अपना पेट भरने की रहती है। पर डाकिया तेरी एक नहीं चलने देता।

दीपस्तम्भ : और इस तरह अपना पेट भरने वालों से बड़ा अनर्थ होने का भय रहता है। इनकी कन्जूसी से लोग बड़े दुखी रहते हैं।

आम का पेड़ : ठीक है! ऐसे कन्जूसों को दण्ड देने वाले भी मिलते हैं। इस पेटू लेटर बक्स को डाकिया ठीक करता है। कन्जूस जमाखोरों को डाकू।

लेटर बक्स : वाह रे मेरी औकात की याद दिलाने वाले! अरे तेरी औकात तो बच्चे-बन्दर सभी आंकते हैं। मैं पेटू नहीं हूँ। बड़े पेट वाला हूँ।

दूसरा दृश्य

(एक आम के पेड़ के पास एक लेटर बक्स और एक दीप स्तम्भ है। राम हाथ में एक पत्र लेकर आता है।)

राम : गुरुजी कहते हैं—बड़े आदमी बनो। माँ कहती है, बड़े आदमी कह गये हैं—घर का काम करो, ऐसा करना चाहिए, वैसा करना चाहिए। हूँ....पर बड़ा है कौन ? खैर यह पत्र माँ ने दिया है, इसे लेटर बक्स में डाल दूँ।....(पत्र डालता हुआ) भाई मेरे लिये तो यह लेटर बक्स बड़ा है। यह हमारे समाचार मेरे पिताजी के पास पहुँचा देगा। (पत्र डालने के बाद आम के पेड़ की ओर देखता है) धत् तेरे की। लेटर बक्स से तो यह आम का पेड़ अच्छा है। (पत्थर फेंकता है। आम गिरता है) है न यह आम का पेड़ बड़ा ? इसने यह मीठा-मीठा रसवाला आम खाने को दिया। भाई आम के पेड़ तुम बड़े हो। (आम खाता हुआ चलता है। साँप देखता है और चौंकता है) साँप—साँप—साँप ! अरे साँप !! अभी मुझको काट खाता। (भागता है खड्डा देखकर) अरे इधर तो खड्डा है। (दीप-स्तम्भ के चबूतरे पर चढ़ता है। डरता हुआ काँपता है) ओह ! ओह ! भाई दीपस्तम्भ तुम बड़े हो। तुमने ही मुझको साँप और खड्डे से बचाया। डर लग रहा है। घर कैसे जाऊँ ? यहीं बैठ जाता हूँ। कोई साथ आने पर जाऊँगा। (राम बैठ जाता है। बैठे-बैठे उसे झपकी आ जाती है। सपने में पेड़, लेटर बक्स और दीप स्तम्भ बातचीत करते हैं।)

आम का पेड़ : हा...हा .. हा....हा....। मैं बड़ा हूँ। मैं महान हूँ। ऐ बिजली के खम्भे और लेटर बक्स ! सुनो ! मैं बड़ा हूँ।

लेटर बक्स : अबे बड़े की दुम। 'बड़े-बड़े' की यह बकवास बन्द कर। तू बड़ा नहीं। मैं बड़ा हूँ। मैं महान हूँ।

दीपस्तम्भ : (अट्टहास करता हुआ) हा....हा... हा....हा....। मैं बड़ा हूँ। मैं महान हूँ। सुना नहीं ? रामू ने तुम दोनों से मुझको बड़ा बताया है।

पेड़ : लो सुनो इस ढीठ की बात ! जो एक बच्चे की बात पर महान

बनने का दम भरता है। अरे यह रामू तो क्या मेरी महानता के लिए तुलसीदास जी भी कह गये हैं :—

तुलसी अम्ब, सुअम्ब तरु फूलहिं फलहिं पर हेत।
वे इतने पाहन हनैं, वे उतते फल देत॥

लेटर बक्स : किसी ने कह दिया और तुम बड़े हो गये। क्या कहने तुम्हारे बड़प्पन के ? बच्चे के महान कहने से वह महान नही होता। हाँ दिल बहलाने को गालिब ख़याल अच्छा है। तू भी अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बन कर दिल बहला ले।

दीपस्तम्भ : अरे दूसरों की प्रशसा से तुमको जलन क्यों है ? कोई किसी की प्रशंसा बिना बात नही करता। तेरे मे ऐसे गुण भी तो हों कि कोई तारीफ करे। सुना आम ! इस लेटर बक्स की वाणी में ईर्ष्या की बू आ रही है।

लेटर बक्स : और तेरे बोल से जैसे फूल झड़ते हैं ? क्यों ? अरे मूर्ख........

दीपस्तम्भ : चुप रहो ! मूर्ख मैं नहीं तुम हो। मैं ज्ञान का प्रतीक हूँ।

लेटर बक्स : वाह रे ज्ञान के प्रतीक ! अरे तेरे साये मे आने वाला अन्धेरे में ही रहेगा। हाँ तेरे से दूर रहने वाला जरूर लाभ उठाता है। अपने तले अन्धेरा रखने वाला भी कोई महान होता है ? एक मैं ही महान हूँ, जिसके पास सब बड़े प्रेम से आते हैं।

लेटर बक्स : (व्यंग्य से) हाँ ! बड़े प्रेम से आते है। पत्थर ले कर ! अरे तुम दोनों ऐसे ही हो। लोग पत्थर से ही स्वागत करेंगे।

आम का पेड़ : अबे ओ पेटू ! हमें तो वैसा कहने के पहले अपनी औकात तो झांक ले ! तेरी नियत तो अपना पेट भरने की रहती है। पर डाकिया तेरी एक नहीं चलने देता।

दीपस्तम्भ : और इस तरह अपना पेट भरने वालो से बड़ा अनर्थ होने का भय रहता है। इनकी कन्जूसी से लोग बड़े दुःखी रहते हैं।

आम का पेड़ : ठीक है। ऐसे कन्जूसों को दण्ड देने वाले भी मिलते हैं। इस पेटू लेटर बक्स को डाकिया ठीक करता है। कन्जूस जमाखोरों को डाकू।

लेटर बक्स : वाह रे मेरी औकात की याद दिलाने वाले ! अरे तेरी औकात तो बच्चे-बन्दर सभी झांकते हैं। मैं पेटू नहीं हूँ। बड़े पेट वाला हूँ।

सबकी बातों को पचाने वाला हूँ। तेरे समान बातों को हवा देने वाला नहीं हूँ।

आम का पेड़ : ओ पेटू ! तू वास्तव में पेटू है। ठूँठ है। बड़ा वह होता है जो नम्र होता है। तुम में नम्रता बिल्कुल नहीं है। मैं गुणीजनों का रूप हूँ। शास्त्रों में भी मेरी प्रशंसा की गई है कि फल वाले वृक्ष और गुणीजन नम्र होते हैं। परन्तु मूर्ख और सूखे ठूंठ नहीं नमते। सो तुम और दीपस्तम्भ मूर्ख और ठूंठ हो।

लेटर बक्स : वाह रे नम्रता के रूप ! सज्जनता के अवतार !! अरे चोर भी कभी महान् हुए हैं। जमीन का भाग चुराकर सज्जन बनता है। 'मुँह मे राम बगल में छुरी' की कहावत विद्वानों ने तुझे देख कर ही बनाई है। ऐसा लगता है तू जमीन से खाद और पानी चुराता है, मैं किसी से कुछ नहीं लेता। अमानत में खयानत नहीं करता।

दीपस्तम्भ : और मैं अन्धेरे के खतरे से बचाता हूँ। मेरे कारण ही लोग अन्धेरे में तुम्हारे पास आ सकते हैं ? मुझ पर आश्रित होकर बड़ी बात मत बोलो। तुम दोनों मेरी बराबरी नहीं कर सकते। हा-हा-हा""""मैं बड़ा हूँ। मैं महान हूँ।

लेटर बक्स : तेल और बिजली पर आश्रित रहने वाला भी दूसरों को अपने आश्रित समझता है। केवल रात को जगने वाला भी महान् बनता है। छिः, मैं बड़ा हूं। मैं रात-दिन सबकी सेवा करता हूँ। मैं बड़ा हूँ। हा-हा-हा-हा मैं महान् हूँ।

आम का पेड़ : सब ठूँठ और मूर्ख हैं। मैं नम्र हूँ। मैं परोपकारी हूँ। मैं पक्षियों का आश्रयदाता हूँ। प्राणी-मात्र की सेवा करता हूँ। मैं महान् हूँ। हा-हा-हा-हा""" मैं महान् हूँ।
(राम चौंक कर जागता है। और चीखता है)

राम : अरे-अरे, यह क्या है ? यह कैसा झगड़ा है ? कैसा सपना है ? कौन बड़ा है ? कौन महान् है ? कुछ समझ में नहीं आता। सब अपनी-अपनी खिचड़ी पका रहे हैं। अरे कोई है ? मुझे डर लग रहा है।

[गुरुजी का छात्रों के साथ प्रवेश]

गुरुजी : अरे यह रामू की आवाज है। हम आ रहे हैं बेटा राम !

डरो मत!! (पास आ कर) क्या बात है राम? इतने परेशान और डरे हुए क्यों हो?

एक छात्र : रामू आज अभी उत्सव की तैयारी के लिए स्कूल क्यों नहीं आये? हम तुम्हें बुलाने आ रहे थे।

दूसरा छात्र : हम तो तुम्हारी आवाज सुनकर डर गए थे। क्या हुआ रामू?

गुरुजी : बस-बस चुप रहो, इसे भी तो कुछ बोलने दो। हाँ बोलो राम क्या हुआ?

राम : गुरुजी मैं स्कूल आ रहा था तो माँ ने पत्र डालने के लिये दिया। यहाँ आया तो साँप निकला। मुझको डर लगा। मैं इस चबूतरे पर चढ़ गया। डर के मारे आँखें बन्द की तो नींद-सी आ गई। सपने मे यह पेड़, लेटर बक्स और दीपस्तम्भ झगड़ने लगे। तीनों अपने आपको महान और बड़ा कहते हुए अट्टहास करते थे गुरुजी! इतने में मैं जाग गया और चिल्लाया। अब आप आ गये।

गुरुजी : ओह तेरे दिमाग में 'बड़ा कौन' वाली बात अभी तक चक्कर लगा रही है। अच्छा पहले बता साँप किधर गया?

राम : वह तो उधर चला गया गुरुजी। परन्तु बड़ा कौन ... ...

गुरुजी : हाँ-हाँ धीरज रखो मैं बताता हूँ।

सभी : हाँ गुरुजी।

गुरुजी : देखो बच्चो! इस लेटर बक्स की तरह कोई अभिमान करे तो वह बड़ा नहीं है। इस आम के पेड़ की तरह परोपकार का ढिंढोरा पीटे तो वह भी बड़ा नहीं है। इस दीपस्तम्भ की तरह ज्ञान की शेखी बघारे, वह भी नहीं। परन्तु इन तीनों के गुण जिनमें हों, वह बड़ा है।

गोपाल : कैसे? यह कैसे गुरुजी? इनके जैसा कोई बड़ा नहीं और इनके गुण जैसा बड़ा है? यह तो कोई पल्ले नहीं पड़ा गुरुजी।

गुरुजी : हाँ, हाँ सुनो! देखो यह आम का पेड़ फल खुद नहीं खाता लुटाता है। पत्थर फेंकने वालों को फल देता है। फल लगने पर झुक जाता है। इसी तरह जो मनुष्य धन का यथाशक्ति निःस्वार्थ भाव से दान करे, बुराई के बदले भलाई करे तो वह महान् है। परन्तु दान तो दे कम और ढिंढोरा सारे समाज में पीटे तो वह बड़ा नहीं है।

राम : लेटर बक्स की बात गुरुजी! यह कैसे बड़ा है?

गुरुजी : लेटर बक्स की तरह जो आदमी शान्त और दिन-रात सेवा करने वाला हो, सबकी बात पेट में रखने वाला हो, अमानत में खयानत नहीं करता हो, वह बड़ा है। परन्तु बात सुन कर इधर-उधर करने वाला, दूसरों की गुप्त बात को इधर-उधर कर सुनाने वाला बड़ा नहीं।

राम : दीपस्तम्भ की बात भी थोड़ी स्पष्ट कर दीजिये गुरुजी।

गुरुजी : दीपस्तम्भ को देखो चाहे गर्मी हो, चाहे सर्दी। चाहे वर्षा हो चाहे ओले गिरें। यह शान्त भाव से अपना प्रकाश बिखेर कर लोगों को अन्धेरे के खतरे से बचाता है। इसी प्रकार जो मनुष्य बिना तर्क और विवाद के अपना ज्ञान फैलाते हैं, अज्ञान मिटाते हैं वे बड़े हैं। परन्तु ज्ञान का घमण्ड करने वाला बड़ा नहीं। विद्या विवाद के लिये नहीं है, ज्ञान के लिये है।

राम : हाँ गुरुजी! बात तो ठीक है। मैं चौपाल पर देखता हूँ तो लोग बात-बात पर लड़ते हैं, बहस करते हैं। बात बढ़ती है तो कहते हैं यह अज्ञान की बात है।

गुरुजी : हाँ! तो बच्चो, बड़ा और महान वह है जो आम के पेड़ की तरह दानी, परोपकारी और नम्र है। लेटर बक्स की तरह बड़े पेट वाला और ईमानदार है। इस दीपस्तम्भ की तरह निःस्वार्थ भाव से ज्ञान व प्रसार करने वाला है। अभिमान करने वाला और बकवास करने वाला बड़ा नही। बड़ा अपने मुँह से अपनी प्रशंसा नही करता।

बड़ो बड़ाई ना करे, बड़ो न बोले बोल।
रहिमन हीरा कब कहे लाख हमारो मोल॥

सभी : हाँ गुरुजी अब समझ में आ गया।

गुरुजी : अच्छा काफी समय हो गया, अब घर चलो।

[सबका प्रस्थान]

●●●

तार

दीनदयाल गोयल

• • •

पात्र-परिचय :

रामपाल	:	गाँव का एक अपढ़ किसान
सोनपाल	:	रामपाल का बड़ा भाई
महेन्द्र	:	ग्राम सेवक
श्याम	:	रामपाल का लड़का

इसके अतिरिक्त रामपाल के बूढ़े माता-पिता व उसकी बहिन तथा गाँव के एक दो व्यक्ति तथा गाँव मे डाक लाने वाला डाकिया।

(हमारे देश में अशिक्षा है। गाँवों में तार का आना अब भी अशुभ माना जाता है। वे समझते है कि तार में हमेशा अशुभ समाचार ही होते हैं। इसके कारण कभी कभी वे उपहास के पात्र बन जाते हैं।

प्रस्तुत एकांकी में दर्शाया गया है कि एक गाँव मे एक अपढ़ परिवार के घर में नौकरी की खोज मे गए केवल एक-मात्र शिक्षित लड़के का तार आता है। परिवार वाले अशुभ समाचार मानकर रोने लग जाते हैं: घर में कुहराम मच जाता है लेकिन बाद में जब ग्रामसेवक आकर, तार पढ़कर उनको प्रसन्न होने की बात सुनाता है कि उनके लड़के की नौकरी लग गई है तो सभी के चेहरों पर प्रसन्नता की लहर दौड़ जाती है, परन्तु बिना कारण रोने पर उपहास के पात्र भी बन जाते हैं।)

(स्थान—गाँव का एक मकान। मकान कच्चा है, बाहर छप्पर डला हुआ है तथा उसमें एक बड़ी खाट पड़ी हुई है दरवाजा भिड़ा हुआ है)

[डाकिया का प्रवेश]

गुरुजी : लेटर बक्स की तरह जो आदमी शान्त और दिन-रात सेवा करने वाला हो, सबकी बात पेट में रखने वाला हो, अमानत में खयानत नहीं करता हो, वह बड़ा है। परन्तु बात सुन कर इधर-उधर करने वाला, दूसरों की गुप्त बात को इधर-उधर कर सुलगाने वाला बड़ा नहीं।

राम : दीपस्तम्भ की बात भी थोड़ी स्पष्ट कर दीजिये गुरुजी।

गुरुजी : दीपस्तम्भ को देखो चाहे गर्मी हो, चाहे सर्दी। चाहे वर्षा हो चाहे ओले गिरें। यह शान्त भाव से अपना प्रकाश बिखेर कर लोगों को अन्धेरे के खतरे से बचाता है। इसी प्रकार जो मनुष्य बिना तर्क और विवाद के अपना ज्ञान फैलाते हैं, अज्ञान मिटाते हैं वे बड़े हैं। परन्तु ज्ञान का घमण्ड करने वाला बड़ा नहीं। विद्या विवाद के लिये नहीं है, ज्ञान के लिये है।

राम : हाँ गुरुजी ! बात तो ठीक है। मैं चौपाल पर देखता हूँ तो लोग बात-बात पर लड़ते हैं, बहस करते हैं। बात बढ़ती है तो कहते हैं यह अज्ञान की बात है।

गुरुजी : हाँ ! तो बच्चो, बड़ा और महान वह है जो आम के पेड़ की तरह दानी, परोपकारी और नम्र है। लेटर बक्स की तरह बड़े पेट वाला और ईमानदार है। इस दीपस्तम्भ की तरह निःस्वार्थ भाव से ज्ञान व प्रसार करने वाला है। अभिमान करने वाला और बकवास करने वाला बड़ा नहीं। बड़ा अपने मुँह से अपनी प्रशंसा नहीं करता।

बड़ो बड़ाई ना करे, बड़ो न बोले बोल।
रहिमन हीरा कब कहे लाख हमारो मोल॥

सभी : हाँ गुरुजी अब समझ में आ गया।

गुरुजी : अच्छा काफी समय हो गया, अब घर चलो।

[सबका प्रस्थान]

●●●

तार

दीनदयाल गोयल

* * *

पात्र-परिचय :

रामपाल	:	गाँव का एक अपढ़ किसान
सोनपाल	:	रामपाल का बड़ा भाई
महेन्द्र	:	ग्राम सेवक
श्याम	:	रामपाल का लड़का

इसके अतिरिक्त रामपाल के बूढ़े माता-पिता व उसकी बहिन तथा गाँव के एक दो व्यक्ति तथा गाँव में डाक लाने वाला डाकिया।

(हमारे देश में अशिक्षा है। गाँवों में तार का आना अब भी अशुभ माना जाता है। वे समझते हैं कि तार में हमेशा अशुभ समाचार ही होते हैं। इसके कारण कभी कभी वे उपहास के पात्र बन जाते हैं।

प्रस्तुत एकांकी में दर्शाया गया है कि एक गाँव में एक अपढ़ परिवार के घर में नौकरी की खोज में गए केवल एक-मात्र शिक्षित लड़के का तार आता है। परिवार वाले अशुभ समाचार मानकर रोने लग जाते हैं: घर में कुहराम मच जाता है लेकिन बाद में जब ग्रामसेवक आकर, तार पढ़कर उनको प्रसन्न होने की बात सुनाता है कि उनके लड़के की नौकरी लग गई है तो सभी के चेहरों पर प्रसन्नता की लहर दौड़ जाती है, परन्तु बिना कारण रोने पर उपहास के पात्र भी बन जाते हैं।)

(स्थान—गाँव का एक मकान। मकान कच्चा है, बाहर छप्पर डला हुआ है तथा उसमें एक बड़ी खाट पड़ी हुई है दरवाजा भिड़ा हुआ है)

[डाकिया का प्रवेश]

से रोने लगती है। इतने में रामपाल की बहिन भी आ जाती है तथा मोहल्ले की दो-चार औरतें भी आकर रोने लगती हैं)

(रामपाल के बड़े भाई का प्रवेश)

सोनपाल : अरे रामपाल.........यह रोवाराट कैसे हो रई है ? का बात है ?

रामपाल : (आँसू पोंछते हुए तथा सिसकी लेते हुए) अरे भइया का बताऊँ श्यामू कूँ गए चार दिना भी नाँय बीते और आज वाकौ वहाँ ते तार आयौ है.....का बताऊँ भइया पतौ नहीं काई मोटर-ताँगे की भरभेट में तो नाँय आ गयौ ? ...हाय भगवान ई तैनें का करी ?

सोनपाल : (रोते हुए) हाँ भइया—रामपाल तार से तो यही मालूम पड़ता है। हे भगवान ई तैनें का करी। दोनों भइयान के बीच में एक ही तो छोरा हौ (जोर से रोते हुए) हाय भगवान ई तैनें का गजब ढायौ है ?

(सभी और जोर से रोने लगते हैं)

सोनपाल : (रोते हुए) अरे रामपाल—या तार कूँ पढ़वा तो लै।

रामपाल : (रोमनी आवाज में) अरे भइया का पढ़वाऊँ। यामें बुरी बात के अलावा और का है सकै है। तार में आवै ही कहा है ?

सोनपाल : (उसी आवाज में) फिर भी भइया मालूम तो पड़ जायगी।

रामपाल : अरे भइया मालूम पड़ी पड़ाई है (जोर से रोकर) अब मेरौ छोरा मोय नाँय मिलने कौ ....अरे श्यामू (श्यामू को आवाज दे देकर रोने लगता है सभी घर वाले और जोर जोर से रोने लगते हैं।)

(ग्राम सेवक का प्रवेश)

ग्रामसेवक : (ऊँची आवाज में) अजी चौधरी जी......चौधरी जी।

सोनपाल : (रोमनी आवाज में) का है भइया !

ग्रामसेवक : यह रोना-धोना कैसे हो रहा है ?

सोनपाल : अरे रामपाल—बता दे भइया।

रामपाल : (रोते हुए) मैं कैसे बताऊँ... तुम ई बताय देउ।

ग्रामसेवक : अरे भाई कोई भी कह दो—जल्दी बताओ—आखिर तुम सब क्यों रो रहे हो ?

रामपाल : (आँसू पोंछते हुए) अरे भइया ' श्यामू हौ न, जानै तुम्हारे संग बी० ए० पास करी हौ—वाकू चार दिना है गए, नौकरी की

खोज कूँ जयपुर गयो हो, सो आज वहाँ तें वाको तार आयो है। गजब है गयो भइया (रोने लगता है)

ग्रामसेवक : तो इसमें रोने की क्या बात है ? तार में क्या लिखा है ?

रामपाल : अरे भइया तार में बुरी बात के अलावा और का है सकै है। यही मारें सब जने रो रहे हैं।

ग्रामसेवक : (उत्सुकता से) तो क्या तुमने तार पढ़वाया नहीं है।

रामपाल : नहीं।

ग्रामसेवक : अरे चौधरी जी ! तुम पागल बन रहे हो। लाओ तार मुझे दो और यह रोना बन्द करो। पहले तार तो पढ़ लें आखिर उसमें लिखा क्या है ?

(रामपाल तार लाकर ग्रामसेवक को देता है ग्रामसेवक तार फाड़ कर पढ़ता है और पढ़कर प्रसन्न हो जाता है। सभी उसकी ओर उत्सुकता से देखने लगते हैं)

ग्रामसेवक : (हँसते हुए) अरे चौधरी जी तुम रो रहे हो, इसमें तो हँसने की बात है बहुत ही प्रसन्नता और खुशी की बात है।

रामपाल : (एक साथ) क्या ?

सोनपाल : क्या ?

ग्रामसेवक : यही खुशी की बात है कि तुम्हारा श्यामू 250.00 रु माहवार का नौकर हो गया है। उसको एक बहुत अच्छी नौकरी मिल गई है।

रामपाल : (आँसू पोंछकर मुस्काने का यत्न करता है) अच्छा ये बात है। ई तो बड़ी खुशी की बात है। हम तो ई समझ रहे कि तार में जरूर कोई मरवे-गिरवे की खबर होयगी।

ग्रामसेवक : नहीं चौधरी जी ! तार में यह जरूरी नहीं कि सभी बुरी खबरें हो। सभी जरूरी बातें तार द्वारा भेजी जाती है। आजकल व्यापार में, खरीद-फरोख्त में, दफ्तरों में तारों का रिवाज बहुत हो गया है। हर जरूरी काम के लिए तार दिया जाता है। देखो श्याम ने अपनी अच्छी खबर सुनाने के लिए तुम्हें तार दिया

है और तुम रो रहे हो। अरे यह तो मिठाई खाने खिलाने का अवसर है।

रामपाल : (हँसते हुए) अरे भइया तेरे मुँह में घी शक्कर। अरे श्यामू की माँ! सुन तेरो श्यामू 250.00 रु. माहवार को नौकर है गयो है। जा जल्दी जा और भीतर मलरिया मे ते कछु लड्डू तो निकाल ला।

ग्रामसेवक : चौधरी जी! यह पुरानो रिवाज थो जबकि केवल मरने आदि की खबर पर ही तार दिया करते थे और अधिकांश लोग बिना पढ़े-लिखे होते थे। अब तो बहुत लोग पढ़े लिखे हो गये है। शिक्षा का प्रसार दिन पर दिन बढ़ता ही जा रहा है। गाँव-गाँव मे स्कूल खोले जा रहे है।

रामपाल : हाँ भइया ठीक कह रहे हो। मगर हम पढ़े-लिखे होते तो ऐसे काय कूँ रोते। पर अब का कियो जाय जब चिड़ियाँ चुग गई खेत!

ग्रामसेवक : अरे भाई अभी तो खेत बाकी है। सरकार ने प्रौढ़ शिक्षा का भी आयोजन रखा है। दिन भर लोग खेतो पर काम करते हैं और रात को प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों पर पढ़ते हैं।

(इतने मे श्यामू की माँ लड्डू लेकर आती है सभी के लिए लड्डू बाँटती है और एक प्लेट मे ग्रामसेवक जी के आगे भी रख देती है। ग्रामसेवक व सभी अन्य लड्डू खाते जाते हैं और बातें करते जाते हैं।

ग्रामसेवक : देखो भाई अब तो सरकार अनिवार्य शिक्षा करने जा रही है। हर बच्चे को शिक्षा दी जायगी। कोई भी बिना पढ़ा-लिखा नहीं रहेगा। सब पढ़-लिखकर भारत के उत्थान मे लग जायेंगे।

रामपाल : अरी श्यामू की माँ! सुन रही है न? देख अब पढ़िबे की बाई ते मनैं मत करो कर। सब छोरा छोरीन नैं पढ़बे कूँ भेजो कर।

श्यामू की माँ : (घूँघट मे मैं ही) हाँ अब तो सब छोरान नैं पढ़िबे कूँ भेजो करूँगी। पर छोरीन नैं तो नाँय भेजूँगी।

रामपाल : हाँ ई बात तेरी साँची। छोरी पढ़-लिख के कहा करगी।

ग्रामसेवक : नहीं चौधरी जी यह तुम्हारा ख्याल गलत है। लड़कियों को पढ़
लड़कों से भी ज्यादा आवश्यक है। ये भावी सन्तान की मात
बनेंगी यदि ये अच्छी होंगी तो भावी संतान भी अच्छी होगी। इ
लड़कियों को पढ़ाना लड़कों से भी ज्यादा आवश्यक है।

रामपाल : ठीक ! बिल्कुल ठीक ! ग्रामसेवक जी अब हम छोरी-छोरा क
ते भी पढ़िबे की मनै नहीं करेंगे और अब मेरी समझ में ऐ
आवै कि हम भी प्रौढ़ शिक्षा में पढ़िबे कूँ जाओ करिंगे और दे
श्यामू की माँ (हँसकर) मेरी समझ में ऐसो आवै कि तू भी पढ़ि
चलो कर।

[पर्दा गिरता है]

प्रहसन

[एक सामयिक प्रहसन]

रेज़गारी का रोजगार

त्रिलोक गोयल

* * *

[सब्जी मण्डी का दरबार लगा है। सभी सब्जियें शाही पोशाकों में अपने-अपने रुतबे और ओहदे के मुताबिक बैठी है।]

नकीब : (नेपथ्य से तीखे स्वर में) बा मुलाहिजा, बा मुलाहिजा होशियार! निगाहें रूबरू, शहनशाहे सब्जी मण्डी, रौनक बाजार, गरीबपरवर, बैंगनशाह तशरीफ ला रहे ·· है ··· ·· ··· ।

[बैंगनशाह का शाही चोगे में रौब से आना, सभी दरबारियों का झुक कर फर्शी सलाम करना व बादशाह के तख्त पर बैठने के पश्चात बैठना]

करेले खां : (खड़े होकर) परवरदिगार खुशी की बात है कि आपकी शोहरत सुनकर रक्काशा ककड़ी बाई दरबारे आम में अपना नाच दिखाना चाहती है। इजाजत हो तो खिदमत में पेश करूँ।

बैंगनशाह : जरूर! जरूर!! कलाकार किसी भी मुल्क के लिये फख्र है। शाही फर्ज और कामकाज के साथ-साथ थोड़ी दिलचस्पी, थोड़ा जश्न भी निहायत जरूरी है। इससे दिल ताजगी से भर जाता है। (ताली बजाना)

[रक्काशा ककड़ी बाई का तड़क-भड़क की वेशभूषा में आना, साथ में लौकी की सितार और तरबूजे के तबले लिये साजिन्दे आते हैं]

ककड़ी बाई : (झुक कर) तस्लीम हुजूरवन्द! (सलाम के साथ ही गाना व नाचना शुरू कर देती है)

दरबारी : वाह वा ! वाह वा !!

बैंगनशाह : खूब ! ककड़ी बाई खूब !! जितना तुम्हें नाच का रियाज है उतना ही तुम्हारे कंठ को कमाल हासिल है । बदन के लोच की तारीफ करने को तो अल्फाज भी थोड़े पड़ते हैं । लो ये तुम्हारी बख्शीश (गले से मोतियों का हार देता है) ।

ककड़ी बाई . (हार लेकर) हुजूर की जर्रानवाजी है, वरना नाचीज किस काबिल है । (आदावर्ज कर प्रस्थान)

करेले खाँ : शहनशाहों के शहनशाह ! आज एक अहम मसला दरबार में पेश है । भिण्डी, टिण्डी, आलू, कचालू, मटर, टमाटर रियाया के सभी इज्जतदार लोगों ने धनिये धनिये मल के खिलाफ नालिश की है कि उसकी बदनियती और बदमाशी की वजह से जीना मुश्किल हो गया है ।

बैंगनशाह सारा खल्क जानता है कि हमारा इन्साफ दूध का दूध और पानी का पानी करता है । उस नामाकूल को पकड़ कर फौरन हमारे इजलास में हाजिर किया जाये ।
(करेला खाँ ताली बजाता है—जमीकंद और शकरकंद सिपाहियों की वेशभूषा में धनिये धनियेमल को बन्दी बना कर लाते हैं)
क्यों बे पनकी दाल के खाने वाले सुने, रोटियाँ बारी करते क्यों है ? तेरे खिलाफ लोगों की बहुत शिकायतें हैं ।

धनियामल (पगड़ी उतार कर गिड़गिड़ा कर) हुजूर के कान किसी भले-बुरे ने गलत भर दिये हैं, मैं दो टकों का गरीब ख़ाय भला क्या खाकर मर उठाऊँगा ।

बैंगनशाह . (करेले खाँ से) वजीरेआजम इसका जुर्म ?

करेले खाँ : पनाहेआलम ! इसने सारी सब्जी मण्डी की रेजगारी इकट्ठी कर ली है, बिना छुट्टे पैसों के लोगों का काम चलना मुश्किल हो गया है ।

धनियामल माई बाप ! सच कहने के लिए माफी चाहता हूँ । करेले खाँ जो कड़वे तो हैं ही नीम चढ़े भी हैं । दो दिन पहले की ही बात है इन्होंने गाजर मगौड़ा समय मुझसे धनिये की छुट धनिये पुदीने में माँगी थी, मैंने इन्कार कर दिया बस इसी से ये नाराज हैं ।

बैंगनशाह : (कड़क कर) चुप बदजबान ! इतने बड़े वजीर पर ऐसा इल्जाम? तू अपनी सफाई पेश कर क्या तूने सचमुच रेजगारी इकट्ठी की?

धनियामल : प ···इ ······इकट्ठी की तो नहीं, हो जाती है, भला इसमें मेरा क्या कसूर, लोग धनिया खरीदते ही पाँच-दस पाई का हैं, मैं कोई आलू, अरवी का व्यापारी तो हूँ नहीं जो लोग किलो दो किलो खरीदें और नोट आयें यहाँ तो परचूनी है! सरकार परचूनी!!

बैंगनशाह : अरे तू परचूनी हो चाहे अरचूनी पर रोजगारी इकट्ठी करने से लोग सौदा सुलफा कैसे खरीदेंगे? बच्चे हाथ खर्ची कहाँ से पायेंगे? औरतें खैरात कैसे बाँटेंगी? मतलब गृहस्थी की गाड़ी कदम-कदम पर रुकेगी।

करमकल्ला : (खड़े होकर) पनाहेआलम! कल का ही किस्सा है मैंने पाँच-दस पैसे का धनिया ही नहीं लिया नीबू अदरख भी ली, कुल मिला कर चालीस पैसे हुए—इसके गल्ले में ढेर सारी रेजगारी थी पर इस बदजात ने मुझे छुट्टे पैसे न देकर लिफाफे पोस्टकार्ड पकड़ा दिये। मालूम है फिर क्या हुआ?

बैंगनशाह : क्या हुआ?

करमकल्ला : हुआ ये आलीजहाँ घर पहुँचने ही बीबी गोभी लड़ पड़ी, गुस्सा होकर बोली "आजकल इतने प्रेम पत्र किसे लिखे जा रहे हैं?" (सब हँसते हैं) (पागलचन्द बीच में ही खड़ा होकर बोलता है)

पागलचन्द : और मेरे साथ तो इससे भी बुरी बीती। पिछले मंगल के दिन मेरे यहाँ कुछ मेहमान आ गये थे। मैंने सोचा कि सब्जियों में डालने को कुछ अदरख, धनिया, मिर्च भी ले लिया जाये, सौदा तुलाकर मैंने थैले में डाल लिया पर जब जेब संभाली तो छुट्टे पैसे नहीं थे। मैंने इसे नोट पकड़ाया··· ···

करेले लाँ : फिर क्या हुआ—

पागलचन्द : फिर? फिर ऐसा तूफान मचा कि आसमान सर पर उठ गया। इसने न केवल मेरी बेइज्जती करके सौदा वापिस रखवा लिया बल्कि इसकी औरत हरी मिर्च? उफ! क्या गजब की तेज सर्राट है, उस कलमुँही ने इतनी गालियाँ दी! इतनी गालियाँ दी, कि मेरी सात पीढ़ियों को नर्क में ढकेल दिया।

करमकल्ला : और घर पर भाभी मूली दवी ने क्या कहा?

पालकचन्द   इस मूली ने एक मूली ही नहीं दी, बाकी कहने में तो उसने कोई कसर रखी नहीं, क्योंकि मेहमानों को सागों में स्वाद आया नहीं, जब वे खुश नहीं हुये तो तुम्हारी भाभी भला क्यों खुश होती। जानते हो मेहमान कौन थे ?

बैंगनशाह   : कौन थे ?

पालकचन्द   : सारी दुनिया एक तरफ जोरू का भाई एक तरफ, ये हमारे खास सालारजंग, मूली देवी के भाई मटरूमल।

बैंगनशाह   : क्यों वे गद्दार ! तेरी वजह से घर-घर में मच रहा है हाहाकार ! तूने लोगों का अमन-चैन छीन लिया है।

टिन्डे खाँ   खता माफ हो हुजूर ! इसने ही नहीं इसके सारे कुनबे ने ही यह पाठ पढ़ रखा है कि जैसे भी हो रेजगी इकट्ठी करो। वो इसकी दादी ? बुढ़िया अदरख ! इतनी तीती है कि कल इस छोटे से मामले को लेकर घंटे भर चिक-चिक की।

आलूमल   : चिक-चिक की ? अजी, पुलिस के पहुँचते-पहुँचते भी बेकसूर कचरों का कचूमर निकल गया, अबोध टमाटरों का खून हो गया और बेचारी फलियों के कपड़े फट गये।

बैंगनशाह   : सिपहीसालार साहब, आपका इस मुतल्लिक क्या फरमाना है ?

मियाँ प्याजुद्दीन : (फौजी सलाम ठोक कर) मुझे तो न पूछें तो ही ठीक है पनाहे-आलम ! कहने को तो नीबू और पोदीना इसके लड़के हैं पर लड़ने में इसके बाप हैं। फौजदारी करना तो उनके बाँयें हाथ का खेल है।

बैंगनशाह   : (धनिये मल से) सुन लिये सेठ धनियामल तुमने अपने कारनामें। अब तुम्हें इस बारे में क्या कैफियत देनी है ?

धनियामल   : (निराश स्वर में) अब मैं क्या कहूँ सरकार। ये सब मेरे पीछे हाथ धोकर पड़े हैं, मेरी दौलत से कुढ़ते हैं, फिर यदि इनकी बातों को सही भी मान लिया जाये तो भी रेजगारी इकट्ठी करना कोई जुर्म नहीं है।

बैंगनशाह   : (क्रोध से) चुप रह शैतान के बच्चे ! (धनियेमल की घबराहट के कारण धोती की लांग खुल जाती है, वह डर कर थर-थर काँपता है) तू मावदौलत को कानून पढ़ाने लगा है ? क्या जुर्म है

और क्या जुर्म नहीं है, इसे हम अच्छी तरह जानते हैं। (वजीर से) पर वजीरेआजम हम अभी तक यह नहीं समझ पाये कि आखिर इतनी रेजगारी का ये मरदूद करता क्या है। इसमें इसको फायदा क्या है?

खरेलेवाली : फायदे कई हैं हुजूर! एक तो रेजगारी की कमी के कारण मजबूरन ग्राहकों को एक ही दूकान से चाहे सडा हो चाहे मँहगा, रुपये के अ-स-पास सौदा लेना पड़ता है नहीं तो खुल्ले पैसे नहीं मिलते।

आलूमल : दूसरा ये रेजगारी को बेच देता है।

बैंगनशाह : रेजगारी को बेच देता है? आलूमलजी क्या रेजगारी भी कोई गुड़-शक्कर या चने-मूँगड़े हैं जिसका रोजगार होता है?

आलूमल : (हँसकर) होता है खुदावंद होता है! शरीफ दुकानदारों को धन्धा चलाने के लिये रेजगारी की जरूरत पड़ती है उन्हें, रुपये के निब्बे पैसे, अस्सी पैसे के हिसाब से ये नामाकूल बेच देता है।

बैंगनशाह : अब आया मामला समझ में! तब तो यह जालिम रोज पाँच-पचास की रेजगारी बेचकर दो तीन रुपये तो कोकट में ही कमा लेता होगा?

परवल देव : मैं एक राज की बात और बताऊँ सरकार! ये शरीफ गुण्डा कभी-कभी तो कानून तक की परवाह नहीं करता। रेजगारी को गला देता है।

बैंगनशाह : (आश्चर्य से) गला देता है?

परवलदेव : हाँ हुजूर! जितने पैसे का सिक्का गलता है उससे ज्यादह की धातु बिक जाती है।

बैंगनशाह : चालाकी की भी हद होती है! अपने भले के लिए दूसरों को परेशान करें इससे ज्यादह नीचता और क्या होगी! जो अनाज इकट्ठा करके लोगों को भूखा मरने के लिये बेबस करते हैं, यह गुनाह भी उसी तरीके का है। (जोर से) सिपहसालार।

मिर्चा प्याजुद्दीन : (तड़ाक से सलामी देकर) जी सरकार!

बैंगनशाह : इस खुद गर्ज, बेईमान इन्सान को हथकड़ी बेड़ी डालकर कटघरे में डाल दिया जाये। इस पेट भरने वाले जलील कुत्ते को आजादी की पच्चीसवीं सालगिरह के दिन लाल किले के फर्श पर आधा गाड़ा जाये और इसके इकट्ठे किये हुये सारे सिक्के रियाया में बाँटकर

यह हुक्म दिया जाये कि उन्हें फेंक फेंक कर इसे इतना मारें, इतना मारें कि इसकी हड्डी-पसली चूर-चूर हो जाये।

धनियामल : (घुटनों के बल बैठकर) रहम ! हुजूर रहम।

मियाँ प्याजुद्दीन : (व्यंग्य से) रहम ? सरकार इस गद्दार के घर से तलाशी में तहखाने में पचास बोरियाँ सिक्के बरामद हुये हैं। उसकी मार से तो इसका मैदा बन जायेगा मैदा।

बेंगनशाह : मैदा ही नहीं पचास बोरियों में तो यह दफन हो जायेगा। हमारी दिली मंशा भी यही है कि जो सिक्के इसे जान से प्यारे हैं वे ही सिक्के इसकी जान ले लें। लोग जोर-जोर से सिक्के मारते हुए कहें "ये ले अठन्नी ! खा इस चवन्नी को !!" तब आयेगा आजादी के जश्न का मजा।

करेले खाँ : ऐसी सख्त सजा देने से ही लोगों को नसीहत मिलेगी। आइन्दा कोई शख्स इस तरह सरकारी अर्थ-व्यवस्था बिगाड़ने की हिमाकत नहीं कर सकेगा।

बेंगनशाह : इसे माकूल सबक देना जरूरी है।

करेले खाँ : जरूरी तो इसके कबीले के लोगों को सजा देना भी है, वे भी तो इसके गुनाहों में शरीक थे।

बेंगनशाह : थे ! पर इसके इशारे पर ? असली शरारत की जड़ ये ही है। फिर भी क्योंकि उन्होंने भी इसकी बेईमानी से फायदा उठाया है इसलिये नीबू, अदरख, मिर्च, पोदीना इन सबकी ऐसी जायकेदार चटनी बनाई जाये कि न जीने में रहे न मरने में।

मियाँ प्याजुद्दीन : समाज को नुकसान पहुँचाने वालों की यही दशा होती है। (जोर से नारा लगाता है। इन्साफ और इन्सानियत के पैगम्बर बेंगनशाह ....

सब दरबारी : (चिल्लाकर) जिन्दाबाद !

मियाँ प्याजुद्दीन : जमाखोर लोग ... .

सब दरबारी : मुर्दाबाद !!

मियाँ प्याजुद्दीन : हमारा वतन.... ....

सब दरबारी : अमर हो !!!

(धनियामल बेहोश होकर गिर पड़ता है)

[पटाक्षेप]

●●●

अधूरी गज़ल

कुन्दन सिंह सजल

* * *

पात्र परिचय :

युगल किशोर : एक कवि।
शकुन्तला : युगल की पत्नी।
श्याम : युगल का पुत्र।
सीता : युगल की पुत्री।

(कवि युगल अपने कमरे में बैठे, कापी खोले, कलम हाथ में लिए एक गजल का मिसरा सोच रहे हैं।)

युगल : (सोचकर) आ गया . आ गया, कितना बढ़िया शेर दिमाग में आया है— (गुनगुनाता है)

उनका आना गोया पैगाम है कयामत का—
उनका जाना जैसे तूफान का उतरना है।

शकुन : (आकर) अजी, सुनते हो। घर में अनाज बिलकुल नहीं है। मैं रोज आपको फरियाद करती हूँ। आज जब अनाज चक्की से पिस कर आयेगा तब चूल्हा जलेगा, कान खोल कर सुन लीजिये।

युगल : आ गई न शृंगार रस में वीभत्स रस पैदा करने। अरी मेहरबान मैं एक गजल लिख रहा हूँ, तुम थोड़ी देर बाद आना। देखो, एक शेर सुनो, कितना बढ़िया बन पड़ा है, शायद तुमको भी पसन्द आये—

उनका आना गोया पैगाम है, कयामत का—
उनका जाना जैसे तूफान का उतरना है।

शकुन : भाड में जाए ऐसी शायरी। आपको कुछ और भी सूझता है या मुझ पर ही शेर कहना सूझता है ? क्या मैं कयामत हूँ ? अगर कयामत ही हूँ तो मुझे लिवा क्यों लाए थे इस घर में।

युगल : अरे, तुम तो बेवजह नाराज होती हो। भई, मैंने तुम्हारे लिए यह शेर थोड़े ही कहा है। यह तो, मैं जो गजल लिख रहा हूँ उसका एक शेर है।

शकुन : घर में तो मुझे बच्चे खाते हैं और आपके पास आती हूँ तो आप जली-कटी सुना कर मुझे जलाते हैं। आखिर आपका इरादा क्या है ? यदि भूखों ही मारना है तो मुझे फाँसी लगा कर ही क्यों नहीं मार देते, बच्चों को जहर खिला कर क्यों नहीं सुला देते ?

युगल : शकुन, तुम तो बेबात पर नाराज हो रही हो। जरा इस कुर्सी पर बैठो (खाली कुर्सी की ओर इशारा करता है) और देखो, मेरी यह गजल जो आज रात मैं मुशायरे में पढ़ने वाला हूँ, सुनो।

शकुन : लेकिन आपकी गजल से पेट थोड़े ही भरेगा। पेट तो खाना खाने से भरेगा और घर में जब तक अनाज नहीं है तो खाना बनेगा कैसे ? इसलिए कविश्री, घर के लिए गजल नहीं अनाज जरूरी है, समझे !

युगल : शकुन, गांधीजी ने कहा था मनुष्य को उपवास करना चाहिये। उपवास से अन्तरात्मा की आवाज भगवान तक पहुँचती है। आज उपवास करके भगवान तक ही आवाज पहुँचाई जाये क्या विचार है ?

शकुन : अजी, गांधीजी के शागिर्द, लेकिन बच्चों की यह आधी दर्जन पल-टन, जो मेरे पीछे पड़ी रोटी-रोटी पुकार रही है, उसको क्या खिलाऊँ ? जरा यह तो बताओ। अभी मैंने बड़े लड़के श्याम को बनिये की दूकान से अनाज लाने को भेजा था। बनिया बोला 'पहले का उधार चुका कर हिसाब साफ करो तब आगे उधार दूँगा।' दूधवाला भी कल शाम को कह गया था कि जब तक मुझे दूध के पिछले पैसे नहीं मिल जायेंगे आपको दूध नहीं दूँगा।

युगल : श्रीमती जी, अब आप अपना यह बकाया बहीखाता समेट कर जाइये। मुझे यह गजल तैयार करने दीजिये, नहीं तो रात को होने वाले मुशायरे में मैं क्या पढ़ूँगा।

शकुन : गजल....गजल....गजल, भाड़ में जाये आपकी यह गजल। घर में न अनाज है, न दाल है, न सब्जी है और आपको गजल लिखने की सूझ रही है। न जाने किस मनहूस साइत में आपसे भाँवरे लीं थी कि रोटियों के भी लाले पड़ रहे हैं। (सुबकती है)

युगल : (अनसुनी करके गुनगुनाता है) उनका जाना गोया पैगाम है....

शकुन : अच्छा, मैं तो जाती हूँ, मगर कहे जाती हूँ कि खाने का इन्तजाम आप अपना कर लेना। (जाती है)

युगल : गई, सचमुच जैसे तूफान उतर गया। आती है तो फरमाइशों की लम्बी-चौड़ी फहरिश्त लेकर। नाहक मेरा मूड खराब कर देती है (गजल का अगला शेर सोचने लगता है इतने में बड़ा लड़का श्याम आ जाता है)

श्याम : पापाजी, पापाजी !

युगल : तेरी मम्मी गई तो अब तू आया है। बोल क्या बात है? अरे तुम सब मेरे पीछे क्यों पड़े हो? क्या भगवान के लिए मुझे कुछ देर अकेला नहीं छोड़ सकते, जिससे मैं यह गजल पूरी कर लूँ।

श्याम : आप पर तो गजल का भूत सवार हो रहा है और उधर मेरा स्कूल से रेस्टीकेशन होने का सामान हो रहा है। हैडमास्टर साहब ने कहा है कि कल यदि मैं स्कूल यूनिफार्म में स्कूल नहीं जाऊँगा तो मुझे स्कूल से निकाल दिया जावेगा। देखिये मेरा नेकर और कमीज (दिखाकर) दोनों फट गये हैं। जगह-जगह पैबन्द लगे हैं। आप इसी समय चलकर, दूकान से कपड़ा लेकर, दर्जी से मेरी स्कूल ड्रेस तैयार करवाइये।

युगल : देखो बेटा, एक दो दिन में रेडियो स्टेशन से जैसे ही मेरे प्रोग्राम का पारिश्रमिक आएगा, मैं तुम्हारे लिए स्कूल ड्रेस सिलवा दूँगा। एक दो दिन तो तुम वैसे ही काम चलाओ-समझे!

श्याम : नहीं पापा, बिना ड्रेस मुझे कल स्कूल में घुसने भी नहीं दिया जावेगा। आज दो माह हो गए मेरे लिए स्कूल ड्रेस नहीं बनी है आप दो माह से कहते आ रहे हैं 'पारिश्रमिक के पैसे आने दो, पारिश्रमिक के पैसे आने दो' आप इतना अच्छा लिखते ही कहाँ हैं कि आकाशवाणी आपकी रचनाएँ प्रसारित करे।

युगल : अरे, साहबजादे, सुनली तेरी तकरीर। मुझे मेरी गजल पूरी करने

दे। दफा हो जा यहाँ से। मेरे साहित्य को समझने वाला तू बड़ा विद्वान आया है ?

श्याम : हाँ पापा, मैंने सब सुन रखा है। आप बिना निमन्त्रण शहर के कवि सम्मेलनों व मुशायरों में शिरकत करते हैं और हर बार हूट हो जाते हैं।

युगल : तू जाता है, या पीटकर निकालूँ (क्रोध से) आया है मुझे हूट करने वाला। अरे मेरे मुकाबिले में तो इस शहर में कोई कवि या शायर नहीं है। तू समझता क्या है ?

श्याम : मैं तो समझता हूँ किन्तु आप भी समझ लो कि कल मेरी स्कूल ड्रेस बन जानी चाहिये। (जाता है)

युगल : गया, नालायक। कैंची जीभ चलाता था। मेरी सारी पोल इसे मालूम है लेकिन कविता लिखने का चस्का भी ऐसा है कि एक बार रंग चढ़ने के बाद, राजनीति के व्यसन की भाँति पीछा नहीं छोड़ता। (फिर अपनी गजल का शेर पढ़ कर, आगे का शेर सोचता है। इतने में बड़ी लड़की लीना आती है)

लीना : (आकर) पापाजी, पापाजी! सुनते हो, आज स्कूल रजिस्टर से मेरा नाम काट दिया गया क्योंकि मैंने अभी तक स्कूल फीस जमा नही करवाई थी।

युगल : अच्छा हुआ। तुझे पढ़ कर क्या डॉक्टर बनना था। घर पर रह कर अपनी मम्मी के काम में हाथ बँटा।

लीना : घर में जब अनाज ही नहीं तो मम्मी का क्या हाथ बटाऊँ। घर में तो मम्मी अकेली ही बेकार हैं। अब मैं भी घर में रह कर बेकारों की संख्या में क्यों इजाफा करूँ। आप लेट पेमेंट सहित मुझे स्कूल फीस दे दीजिये, मैं पढ़ना नहीं छोड़ूँगी।

युगल : देख बेटी, इस समय तो मैं एक गजल पूरी करना चाहता हूँ। अभी तो तू जा, फिर बात करेंगे। समझी न, बड़ी सयानी है मेरी बिटिया रानी।

लीना : और पापा मेरी फिराक व पजामा भी फटकर तार-तार हो रहे हैं। यह एक जोड़ी कपड़े ही तो है मेरे पास। मुझे और कपड़े सिलवा दो पापा।

युगल : तुमको कहा न, बेटी, तुझे कपड़े भी सिलवा दूँगा, फीस भी दे

दूँगा मगर अभी तो तू जा यहाँ से। देख आज रात को शहर में हिन्दुस्तान स्तर का मुशायरा होने वाला है। मैं उसी में पढ़ने के लिए एक गजल लिख रहा हूँ। जैसे ही यह गजल पूरी होगी, मैं तुमसे बातें करूँगा।

लीना : पापा, किन्तु उसमें तो हिन्दुस्तान के बड़े-बड़े शायरों को निमंत्रण दिया गया है। क्या आपको भी निमंत्रण मिला है? आपको मुशायरों व कवि सम्मेलनों में निमंत्रित तो किया नहीं जाता है, आप हमें झूँठ-मूँठ बहका देते हैं कि वहाँ कविता पाठ के इतने रुपये मिलेंगे, वहाँ गजल पढ़ने के इतने रुपये मिलेंगे और जब आप वापस आते हैं तो कह देते हैं 'संयोजक ही दिवालिया निकला' या 'संस्था में पैसों की कमी थी'। सभी संयोजक व संस्थाएँ आपके लिए ही दिवालिया क्यों हैं, समझ मे नहीं आता।

युगल : तू नहीं समझेगी, बेटी, जा अपना स्कूल का काम कर। ज्यादा बातें न बना।

लीना : कुछ याद करके। अरे हाँ पापाजी, मेरी सहेली ने यह पैम्पलेट दिया है (जेब से एक कागज निकालकर) इसमे लिखा है कि 'शहर में आज होने वाला मुशायरा किसी कारणवश आयोजित नहीं किया जा सकेगा। सभी आमंत्रित शायरों को सूचित किया जा चुका है। आम जनता सूचित रहे।'

युगल : (लीना के हाथ से कागज लेकर) क्या कहा मुशायरा आयोजित नहीं किया जा रहा है। लीना तूने यह खबर सुनाई है। दिनभर से इसी के लिए परेशान हो रहा था और गजल भी पूरी नहीं हुई।
(शकुन, श्याम व सभी बच्चे एक साथ प्रवेश करते हैं और युगल की भाव भंगिमा व मायूस चेहरा देखते हैं)

शकुन : शायर साहब, लिखिए ना गजल, मुशायरे में जाना है।

श्याम : पापा, अपनी गजल के शेर तो सुनाइये, शायद अधूरी गजल मैं ही पूरी कर दूँ।

(शकुन व सभी बच्चे हँसते हैं)

[पटाक्षेप]

○○○

दूँगा मगर अभी तो तू जा यहाँ से। देख आज रात को शहर में हिन्दुस्तान स्तर का मुशायरा होने वाला है। मैं उसी में पढ़ने के लिए एक गजल लिख रहा हूँ। जैसे ही यह गजल पूरी होगी, मैं तुमसे बातें करूँगा।

लोना : पापा, किन्तु उसमे तो हिन्दुस्तान के बड़े-बड़े शायरों को निमंत्रण दिया गया है। क्या आपको भी निमंत्रण मिला है? आपको मुशायरों व कवि सम्मेलनों मे निमंत्रित तो किया नहीं जाता है, आप हमें झूँठ-मूँठ बहका देते हैं कि वहाँ कविता पाठ के इतने रुपये मिलेंगे, वहाँ गजल पढ़ने के इतने रुपये मिलेंगे और जब आप वापस आते हैं तो कह देते हैं 'संयोजक ही दिवालिया निकला' या 'संस्था में पैसों की कमी थी'। सभी संयोजक व संस्थाएँ आपके लिए ही दिवालिया क्यों हैं, समझ में नहीं आता।

मुगल : तू नहीं समझेगी, बेटी, जा अपना स्कूल का काम कर। ज्यादा बातें न बना।

लोना : कुछ याद करके। अरे हाँ पापाजी, मेरी सहेली ने यह पैम्फलेट दिया है (जेब से एक कागज निकालकर) इसमे लिखा है कि 'शहर में आज होने वाला मुशायरा किसी कारणवश आयोजित नही किया जा सकेगा। सभी आमंत्रित शायरों को सूचित किया जा चुका है। आम जनता सूचित रहे।'

मुगल : (लोना के हाथ से कागज लेकर) क्या कहा मुशायरा आयोजित नहीं किया जा रहा है। लोना तूने यह खबर सुनाई है। दिनभर से इसी के लिए परेशान हो रहा था और गजल भी पूरी नहीं हुई।

(शकुन, श्याम व सभी बच्चे एक साथ प्रवेश करते हैं और मुगल की भाव भंगिमा व मायूस चेहरा देखते हैं)

शकुन : शायर साहब, लिखिए ना गजल, मुशायरे में जाना है।

श्याम : पापा, अपनी गजल के शेर तो सुनाइये, शायद अधूरी गजल मैं ही पूरी कर दूँ।

(शकुन व सभी बच्चे हँसते हैं)

[पटाक्षेप] ०००

है । दफा हो जा यहाँ से । मेरे साहित्य को समझने वाला तू बड़ा विद्वान बनता है ?

श्याम : हाँ पापा, मैं सब सुन चुका हूँ । आप बिना निमन्त्रण शहर के कवि सम्मेलनों व मुशायरों में शिरकत करते हैं और हर बार हूट हो जाते हैं ।

युगल : तू जाता है या धक्के देकर निकालूँ (क्रोध में) आया है मुझे हूट करने वाला । अरे मेरे मुकाबिले में तो इस शहर में कोई कवि या शायर नहीं है । तू समझता क्या है ?

श्याम : मैं तो समझता हूँ किन्तु आप भी समझ लो कि अब मेरी स्कूल फीस भर जानी चाहिये । (जाता है)

युगल : गया, नालायक । मैं भी जानता था । मेरी सारी पोल इसे मालूम है लेकिन कविता लिखने का चस्का भी ऐसा है कि एक बार लग जाने के बाद, राजनीति के व्यसन की भांति पीछा नहीं छोड़ता । (फिर अपनी गजल का शेर पढ़ कर, आगे का शेर सोचता है । इतने में बड़ी लड़की सीना आती है)

सीना : (आकर) पापाजी, पापाजी! सुनते हो, आज स्कूल रजिस्टर से मेरा नाम काट दिया गया क्योंकि मैंने अभी तक स्कूल फीस जमा नहीं करवाई थी ।

युगल : अच्छा हुआ । तुझे पढ़ कर क्या डॉक्टर बनना था । घर पर रह कर अपनी मम्मी के काम में हाथ बँटा ।

सीना : घर में अब अनाज ही नहीं तो मम्मी का क्या हाथ बटाऊँ । घर में तो मम्मी अकेली ही बेकार हैं । अब मैं भी घर में रह कर बेकारों की संख्या में क्यों इजाफा करूँ । आप लेट पेमेंट सहित मुझे स्कूल फीस दे दीजिये, मैं पढ़ना नहीं छोड़ूँगी ।

युगल : देख बेटी, इस समय तो मैं एक गजल पूरी करना चाहता हूँ । अभी तो तू जा, फिर बात करेंगे । समझी न, बड़ी सयानी है मेरी बिटिया रानी ।

सीना : और पापा मेरी फिराक व पजामा भी फटकर तार-तार हो गये हैं । यह एक जोड़ी कपड़े ही तो हैं मेरे पास । मुझे और कपड़े सिलवा दो पापा ।

युगल : तुमको कहा न, बेटी, तुझे कपड़े भी सिलवा दूँगा, फीस भी दे

दूँगा मगर अभी तो तू जा यहाँ से। देख आज रात को शहर में हिन्दुस्तान स्तर का मुशायरा होने वाला है। मैं उसी मे पढ़ने के लिए एक गजल लिख रहा हूँ। जैसे ही यह गजल पूरी होगी, मैं तुमसे बातें करूँगा।

लीना : पापा, किन्तु उसमें तो हिन्दुस्तान के बड़े-बड़े शायरों को निमंत्रण दिया गया है। क्या आपको भी निमंत्रण मिला है? आपको मुशायरों व कवि सम्मेलनों में निमंत्रित तो किया नहीं जाता है, आप हमें झूँठ-मूँठ बहका देते हैं कि वहाँ कविता पाठ के इतने रुपये मिलेंगे, वहाँ गजल पढ़ने के इतने रुपये मिलेंगे और जब आप वापस आते हैं तो कह देते हैं 'संयोजक ही दिवालिया निकला' या 'संस्था में पैसों की कमी थी'। सभी संयोजक व संस्थाएँ आपके लिए ही दिवालिया क्यों हैं, समझ मे नहीं आता!

युगल : तू नहीं समझेगी, बेटी, जा अपना स्कूल का काम कर। ज्यादा बातें न बना।

लीना : कुछ याद करके। अरे हाँ पापाजी, मेरी सहेली ने यह पैम्पलेट दिया है (जेब से एक कागज निकालकर) इसमें लिखा है कि 'शहर में आज होने वाला मुशायरा किसी कारणवश आयोजित नहीं किया जा सकेगा। सभी आमंत्रित शायरों को सूचित किया जा चुका है। आम जनता सूचित रहे।'

युगल : (लीना के हाथ से कागज लेकर) क्या कहा मुशायरा आयोजित नहीं किया जा रहा है। लीना तूने यह खबर सुनाई है। दिनभर से इसी के लिए परेशान हो रहा था और गजल भी पूरी नही हुई।

(शकुन, श्याम व सभी बच्चे एक साथ प्रवेश करते हैं और युगल की भाव भगिमा व मायूस चेहरा देखते हैं)

शकुन : शायर साहब, लिखिए ना गजल, मुशायरे में जाना है।

श्याम : पापा, अपनी गजल के शेर तो सुनाइये, शायद अधूरी गजल मैं ही पूरी कर दूँ।

(शकुन व सभी बच्चे हँसते हैं)

[पटाक्षेप]

○○○

पड़ौसी या मुसीबत ?

सत्यप्रभा गोस्वामी

पात्र परिचय :

महेन्द्र	:	एक वरिष्ठ लिपिक
सुरेन्द्र	:	एक अन्य वरिष्ठ लिपिक (महेन्द्र का पड़ोसी)
धनिया	:	महेन्द्र का नौकर
शीला	:	महेन्द्र की पत्नी (स्कूल में अध्यापिका)
सुनीता	:	महेन्द्र की पुत्रवधू
रेखा	:	महेन्द्र की पुत्री
अन्य पात्र	:	शशि की माँ, मीनू की माँ आदि
स्थान	:	महेन्द्र के घर बाथरूम
समय	:	प्रातः ७ बजे

(शीला स्नान करती हुई आवाज देती है)

शीला : रामी ! ओ रामी !

रामरखी : रामरखी (बाहर के कमरे में) क्या है मालकन ?

शीला : जल्दी में मेरे पहिनने के लिए कपड़े और तौलिया तो पकड़ा जा। जल्दी के मारे लाने ही भूल गई।

रामरखी : अभी लाई मालकिन

(जल्दी में कपड़े और तौलिया लेकर आती है)

शीला : जब तक मैं नाश्ता कर स्कूल जाने के लिए तैयार होऊँ, तब तक तू फटाफट मेरी बसंती रंग की साड़ी और उसके साथ के ब्लाउज में प्रेस कर दे। आज बसंत पंचमी है ना इसलिए।

रामरखी : मालकन, परेस तो कल विमला बहिन जी के घर चली गई अब मैं आपके कपड़ो मे परेस कैसे करू ?

शीला : 'प्रेस' विमला के घर कैसे चली गई ? कल शाम को तो मैंने उसे आलमारी में रखी थी ।

रामरखी : मालकन, कल रात को ६ बजे उनका लड़का आया और मुझसे पाँच मिनिट मे वापिस देने का कहकर परेस ले गया ।

शीला : मगर मुझसे पूछे बिना तो तुम कभी किसी को कोई चीज नहीं देती फिर कल कैसे दे दी ?

रामरखी : मैंने तो कहा था कि मैं मालकन से पूछे बिना कोई चीज नही देती तो कहने लगा कि अभी पाँच मिनिट मे लाकर तुझे ही वापस दे जाऊँगा । इतनी सी देर के लिये मालकन से पूछने की क्या जरूरत है ?

शीला : मुझे तो तूने मुसीबत में फँसा ही दिया । मुझे अब कोई दूसरी साड़ी पहिननी पड़ेगी । तू जाकर अपना काम कर ।

(रामरखी जाती है, शीला कमरे मे आकर आवाज देती है)

शीला : सुनीता ओ सुनीता ।

सुनीता : आई माताजी (रसोई घर से तेजी से निकल कर आती है)

शीला : देखो बहू, मैं तो अब स्कूल जाने वाली हूँ । मेरे स्कूल जाने के बाद तुम जरा होशियारी से काम लेना । अभी महीने के आखिरी दिन हैं इसलिये अगर कोई पड़ोसी कुछ सामान उधार माँगने आये तो चतुराई से मना कर देना । अक्सर जरूरत मद लोग तुम्हारे पास ही यह सोचकर आटा, घी आदि माँगने आते हैं कि तुम तो शरम से किसी को मना ही नही कर सकतीं और झट दे देती हो ।

सुनीता : माताजी मैं और सबको तो कोई न कोई बहाना बनाकर अक्सर टाल देती हूँ पर शशी बहिन की माँ पर मेरा कोई बस नहीं चलता । न जाने उनमे क्या जादू है जो मुझे फंदे मे फँसा ही लेता है ।

शीला : यह शशी की माँ बड़ी चालाक है । अपने घर की कोई छोटी बड़ी चीज ऐसी नहीं जो उनके घर न पहुँची हो और यही समझकर बिना माँगवाये वापिस आ गई हो । और पड़ो ने मोहल्ले की दूसरी औरतो को और दिखला दिया है कि 'शीला के घर सब चीजे है ।

जरूरत पड़ने पर दुःख न उठाना यहाँ से माँग लाना। लेकिन बहू

तू अब उसकी किसी बात में न आना।

सुनीता : अच्छा माताजी (प्रस्थान करती है)

शीला : (जोर से) 'रेखा' ओ रेखा !

(रेखा दौड़कर आती है)

रेखा : क्या है मम्मी ?

शीला : जा बाबूजी की घड़ी (रिस्ट वाच) में जल्दी से देखकर आ कि कितने बज गये हैं। आज तो समय का कुछ पता ही नहीं चल रहा।

(रेखा जाती है व शीला लौट आती है)

रेखा : 'मम्मी' बाबूजी की घड़ी तो मुझे कहीं भी नहीं मिली, मैंने सब जगहों पर उसे ढूँढ ली।

शीला : घड़ी मिली नहीं तो कहाँ गई। कहीं पटक न आये हों। जा उनसे खुद से पूछकर आ कि घड़ी कहाँ है। मुझे बेकार ही में देर हो रही है।

(रेखा जाकर सोते हुये महेन्द्र को झँझोड़ती है)

रेखा : बाबूजी, ओ बाबूजी ! अब उठो भी देखो कितना दिन चढ़ आया है।

(महेन्द्र आँखें खोलते हुए)

महेन्द्र : क्या बात है रेखा ? आज सुबह-सुबह बाबूजी कैसे याद आ रहे हैं।

रेखा : बाबूजी तो मुझे हमेशा ही याद आते रहते हैं लेकिन अभी तो मैं आपकी घड़ी माँगने आई हूँ. मम्मी टाइम देखने के लिए घड़ी मँगा रही है।

(महेन्द्र एकदम से उठकर बैठ जाता है)

महेन्द्र : घड़ी, मेरी घड़ी ......?

रेखा : हाँ आपकी घड़ी, जल्दी से मुझको बता दीजिए कि घड़ी कहाँ रखी है।

महेन्द्र : अगर वह कहीं रखी होती तो मैं फौरन बतला न देता। असली बात तो यह है कि वह अब मेरे पास न होकर किसी दूसरे के पास चली गई है।

रेखा : दूसरे के पास चली गई ? कौन है वह दूसरा जिसे आप अपनी

महेन्द्र : बतलाता हूँ, बतलाता हूँ। पर मेरी घड़ी के लिये तुम क्यों इतनी परेशान हो। बात यह हुई कि कल मोहन (मित्र) मेरे पास आया और बोला कि उसका लड़का इस साल बी० ए० फाइनल की परीक्षा दे रहा है व उसके पास घड़ी न होने से उसे पेपर्स देने मे बहुत कठिनाई होगी। इसलिये मैं उसे कुछ दिनों के लिये अपनी घड़ी दे दूँगा। बेचारा बड़ी आशा से मेरे पास आया था तो मैं उसे कैसे निराश कर देता। आखिर इन्सान के काम इन्सान ही तो आता है।

रेखा : पर बाबू जी आपको यह भी तो मालूम था कि अपने घर में भी फिलहाल उस घड़ी की सख्त जरूरत है। अपनी दूसरी दोनो घड़ी खराब पड़ी हैं।

महेन्द्र : मालूम तो था ही पर 'मरता क्या न करता'। उसने कुछ ऐसे लहजे में बात करी थी कि मुझसे उसे इन्कार करते न बन सका। अब चाहे तुम लोग नाराज होते रहो। दुनियाँ में सबको तो खुश रखा नही जा सकता।

(एकाएक दरवाजे के जोर-जोर से खटखटाने तथा महेन्द्र जी, महेन्द्र जी आवाज आती है)

(चौंककर) अरे यह तो सामने वाले सुरेन्द्र जी की आवाज मालूम होती है। कोई बहुत ही जरूरी काम होगा तभी तो बेचारे सवेरे-सवेरे आ पहुँचे हैं)

(जल्दी से उठकर दरवाजा खोलता है तथा सुरेन्द्र अन्दर प्रवेश करता है)

सुरेन्द्र : मालूम होता है आप अभी तक सो रहे थे व मैंने आकर आपको जगा दिया। आपकी तबियत तो ठीक है न !

महेन्द्र : बिल्कुल ठीक है भाई। तबियत बेचारी को क्या हो सकता है। आप अपना हाल बताइये।

सुरेन्द्र : हाल-चाल बिल्कुल ठीक है पर इस समय तो मैं आपके पास एक जरूरी काम से आया हूँ और आपको बेवक्त की परेशानी के लिये क्षमा-प्रार्थी हूँ।

महेन्द्र : अरे भाई हम तुम समान ही हैं। कौन किसको और किसलिये

क्षमा करें यह समझ में नहीं आता। आप तो यह बतलाइये कि मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूँ।

(रेखा से दो कप चाय व नाश्ता लाने के लिये कहता है)

सुरेन्द्र : मुझे आपसे सही बात करने में बड़ी झिझक हो रही है और मैं अपने को आपके सामने बहुत छोटा महसूस कर रहा हूँ। अगर हम भी वक्त रहते आपकी तरह चतुराई व समझदारी से काम लेते तो आज इस तरह आपके सामने शर्मिन्दा न होना पड़ता।

(महेन्द्र अपनी प्रशंसा सुनकर मन ही मन प्रसन्न होता है)

महेन्द्र : इस तरह की बातें करके तो आप मुझे ही शर्मिन्दा कर रहे हैं। आपको मुझसे इस प्रकार तकल्लुफ नहीं करना चाहिये। मैं तो आपको बिल्कुल अपना ही समझता हूँ। आखिर पड़ौसी भी तो सगे भाई की तरह ही होता है जो सुख-दुःख में काम आता है।

सुरेन्द्र : यही सोचकर और आशा लेकर मैं दौड़ा-दौड़ा आपके पास ही आया हूँ और मुझे पक्का विश्वास था कि आप मेरी सहायता जरूर करेंगे।

महेन्द्र : अवश्य ही। भला इसमें झूँठ ही क्या है?

सुरेन्द्र : बात यह है भाईसाहब कि आज शाम की ट्रेन से 'फादर इन्ला और मदर इन्ला' देहली से तशरीफ ला रहे हैं। घर में उनके आराम से रहने लायक जरूरी चीजें नहीं है। आज मुझे इसी बात का सख्त अफसोस हो रहा है कि जब वे मेरी सच्ची हालत से वाकिफ हो जायेंगे तो उन्हें बड़ा दुःख होगा। और साथ ही यदि मैं उन्हें दो-चार दिन भी आराम से न रख सका तो जनम भर इस बात का पछतावा रह जायगा। इसीलिये मैं आपके पास दौड़ा-दौड़ा आया हूँ। अगर आप इस समय मेरी सहायता न करेंगे तो ... .

(बोलते बोलते गला भर आता है)

महेन्द्र : इस तरह दुःखी न हो सुरेन्द्र! मेरा घर तुम्हारा भी घर है। जब तक तुम्हारे सास व ससुर यहाँ रहें, तुम मेरे घर आकर रहो मतो और हम तुम्हारे घर में चले जायेंगे। यहाँ वे पूरा आराम महसूस कर सकेंगे।

: मैं इतना स्वार्थी नहीं हूँ कि आपको इतना कष्ट दूँ। बस मैं तो सिर्फ आपसे यही माँगने आया हूँ कि बस दो पलग, व डाइनिंग सेट आप हमारे घर इन दिनो के लिये भिजवा दें और ५० रु. दे दें जिससे कि मैं खाने-पीने का जरूरी सामान खरीद लाऊँ।

: आज २८ तारीख है और महीने के आखिरी दिनो में इतने रुपये पास होना असंभव है। खैर मैं आपको बैंक से निकालकर दो बजे तक इतने रुपये अवश्य दे दूँगा और सामान तो भिजवा दूँगा ही।
(रेखा चाय और नाश्ता लेकर आती है)

: रेखा अपनी मम्मी से कहना कि सुरेन्द्र अभी यहीं खाना खायेंगे इसलिये खाना जरा इज्जतदार बनवायें और दोपहर में इनके घर कुछ जरूरी सामान धनिया के साथ भिजवाना है इसलिये वह आज स्कूल न जाये तो ठीक रहेगा। आज इनके सास-ससुर देहली से आ रहे हैं और वे मेरे भी तो सास ससुर के समान हैं। उनका स्वागत-सत्कार तो ठाट-बाट के साथ ही होना चाहिये। आखिर कोई रोज-रोज थोड़े ही आता है। (शीला जो बाहर जाने के लिए दरवाजे के पास आकर खड़ी हो गई थी, इन दोनों की बातें सुनकर अन्दर चली जाती है और अपनी तकदीर को कोसने लगती है)

[पर्दा गिरता है]

आज की कक्षा

कु० रमा जैन

* * *

नवी साइन्स बॉयलाजी की कक्षा । ३०–३५ सीट लगी हुई हैं । लड़के कुल मिलाकर १५ उपस्थित है । क्योंकि कल ही 'नया जमाना' फिल्म लगी है। इसलिये शेष उसको देखने गये हैं । बोर्ड पर एक रेखाचित्र (sketch) अंकित किया हुआ है । जिसमें एक लड़की नाचने की मुद्रा में खड़ी है । अचानक बरामदे में अध्यापक आते हुये दीखते हैं जिनकी आयु २१–२२ वर्ष के करीब है। उन्होंने एकदम चुस्त लाईनिंग बेलबाटम, तथा चैक की शर्ट पहन रखी है। बाल एकदम रूखे हैं । दोनों हाथ लापरवाही से जेब में डाल रखे हैं । इसी मुद्रा में कक्षा में प्रवेश करते हैं :—

अध्यापक : सिट डाउन प्लीज, सिट डाउन ।
(जबकि कोई लड़का खड़ा ही नहीं होता है ।)
(उधर संजय और सुबोध में बहस चल रही है)

संजय : तो लगा बेट इसी बात पर ।

सुबोध : अरे रहने भी दे यार; बेकार में हार जायेगा ।

संजय : अरे यार; हार भी जाऊँगा तो क्या ?
तेरे को आने वाली दो फिल्में और दिखा दूँगा और देख मैं जीत जाऊँगा तो तेरे को दो फिल्में दिखानी पड़ेंगी ।

सुबोध : अर्रे तू है तो जिद का पक्का । तेरे को कितनी बार कह दिया कि 'नया जमाना' फिल्म का हीरो जितेन्द्र और हिरोइन मुमताज है । लेकिन तू माने तब न ।

संजय : ओ हो; अरे भाई मैंने तो कल ही शाम को अनेक से टिकट खरीद कर यह फिल्म देखी थी। उसका हीरो तो राजेश खन्ना, हिरोइन शर्मिला टैगोर है।

सुबोध : (मेज पर मुक्का मारते हुए) नहीं; हीरो जितेन्द्र और हिरोइन मुमताज है।

संजय : नहीं हीरो राजेश ·········(वाक्य पूरा नहीं हो पाता है कि इससे पहले ही ·········)

अध्यापक : अरे यह क्या शोर मचा रखा है ?

संजय : ओह ! सर आप आ गये !

सुबोध : (अध्यापक को देखते हुए) कुछ नहीं सर, कुछ नहीं। हम तो कल के पढ़े हुए लेसन की पुनरावृत्ति कर रहे हैं।

अध्यापक : ओ हो। गुड, वेरी गुड। (और अध्यापक बोर्ड पर बनाये हुए चित्र को देखने लगते हैं।)

(संजय और सुबोध वापिस बहस करने लग जाते हैं)

सुबोध : चल यार सर के पास चलें। वो ही इस बात का फैसला करेंगे।

संजय : अरे हाँ। कल हॉल में मेरे आगे वाली सीट पर ही तो सर बैठे थे। उनको जरूर याद होगा।

(दोनों खड़े होते हैं)

सुबोध : सर एक बात पूछूँ ?

अध्यापक : अरे। हाँ हाँ जरूर पूछो।

संजय : सर आप ही कहते हैं कि रात वाली बातों को दुबारा जरूर दोहराना चाहिए।

सुबोध : हाँ सर, आप हमारा एक निर्णय कर दीजिये।

अध्यापक : अरे भई बोलो तो सही।

सुबोध : क्यों सर 'नया जमाना' फिल्म का हीरो जितेन्द्र व हीरोइन मुमताज है न ?

संजय : नहीं सर। इस फिल्म का हीरो तो राजेश खन्ना व हिरोइन शर्मिला टैगोर है।

आज की कक्षा

कु० रमा जैन

* * *

नवी साइन्स बॉयलाजी की कक्षा । ३०–३५ सीट लगी हुई हैं । लड़के कुल मिलाकर १५ उपस्थित है । क्योंकि कल ही 'नया जमाना' फिल्म लगी है । इसलिये शेष उसको देखने गये हैं । बोर्ड पर एक रेखाचित्र (sketch) अंकित किया हुआ है । जिसमें एक लड़की नाचने की मुद्रा में खड़ी है । अचानक बरामदे मे अध्यापक आते हुये दीखते हैं जिनकी आयु २१–२२ वर्ष के करीब है। उन्होने एकदम चुस्त लाईनिंग वेलबाटम, तथा चैक की शर्ट पहन रखी है। बाल एकदम रूखे हैं । दोनों हाथ लापरवाही से जेब में डाल रखे हैं । इसी मुद्रा में कक्षा में प्रवेश करते हैं :—

अध्यापक : सिट डाउन प्लीज़, सिट डाउन ।
(जबकि कोई लड़का खड़ा ही नही होता है ।)
(उधर सजय और सुबोध में बहस चल रही है)

संजय : तो लगा बेट इसी बात पर ।

सुबोध : अरे रहने भी दे यार; बेकार में हार जायेगा ।

संजय : अरे यार; हार भी जाऊँगा तो क्या ?
तेरे को आने वाली दो फिल्में और दिखा दूँगा और देख मैं जीत जाऊँगा तो तेरे को दो फिल्में दिखानी पड़ेंगी ।

सुबोध : भई तू है तो जिद का पक्का । तेरे को कितनी बार कह दिया कि 'नया जमाना' फिल्म का हीरो जितेन्द्र और हिरोइन मुमताज है ।
लेकिन तू माने तब न ।

(एक साथ पाँच हाथ उठते हैं। जिनमे तीन लडकियों के तथा दो लडको के होते हैं।)

अध्यापक : अच्छा सजीव तुम बताओ कि पानी किसका यौगिक है ? (संजीव खडा होता है।)

संजीव : सर आपने तो कल कुछ और ही बताया था लेकिन मेरे डेडी तो कहते हैं कि योगी वो होता है जो गेरुए वस्त्र धारण करता है। तथा जो अपने शरीर पर भस्म मलता है (पूरी कक्षा हँस पड़ती है।)

अध्यापक : (क्रोध से) शट अप। नाउनसेन्स ! गेट आऊट ऑफ द क्लास।

(सजीव वहीं खडा रहता है।)

अध्यापक : (और भी क्रोध मे) आई से, यू गेट आऊट ऑफ द क्लास।

संजीव : लेकिन सर, मेरी गलती क्या है ?

अध्यापक : रास्कल कहीं का ! मैंने योगी नहीं, यौगिक पूछा था (और बोर्ड पर यौगिक लिख देते है)

संजीव : ओह् पार्डन सर। एक्सक्यूज मी।

अध्यापक : सिट डाउन। बच्चो, मैंने योगी नही यौगिक पूछा है। अच्छा सीमा तुम बताओ ? (सीमा खड़ी होती है।)

सीमा : सर पानी समुद्र और सूर्य का यौगिक है क्योंकि सूर्य द्वारा जल वाष्प बनता है (अभी वो पूरा भी नही बोल पाती है कि.......)

अध्यापक . सिट डाउन सीमा ! तुम गलत बोल रही हो (और सीमा बैठ जाती है।)

अध्यापक : देखो बच्चो पानी समुद्र और सूर्य का यौगिक नहीं है। बल्कि यह हाइड्रोजन और ऑक्सीजन का यौगिक है। हाइड्रोजन और ऑक्सीजन दो-एक के अनुपात मे मिला देने पर दोनो रासायनिक क्रिया करके जल बना देते हैं।

सीमा : ओह् ! पार्डन सर।

(इसी समय पीरियड लग जाता है और अध्यापक टॉपिक
किये बिना ही कक्षा से बाहर निकल जाते हैं। अध्यापक के क
से बाहर निकलते ही लड़के बुरी तरह शोर मचाने लग जाते
संजीव खड़ा होता है और जोर से चिल्लाता है।)

संजीव : पानी सूय और समुद्र का यौगिक है।

(सब लड़के भी उसकी आवाज में आवाज मिलाकर चिल्लाते
और संजीव इस वाक्य को बोर्ड पर उठाकर लिख देता है।)

(लड़कियों को यह बात सहन नहीं होती। वे भी सब सीमा
आवाज में आवाज मिला कर चिल्लाती हैं।)

सब लड़कियाँ : योगी अपने शरीर पर भस्म मलता है।

(तथा सीमा भी बोर्ड पर जाकर इसी वाक्य को लिख देती है
बेचारा संजीव और उसके साथी खिसिया कर रह जाते हैं। सी
और उसकी सहेलियाँ ठहाका मारकर कक्षा से बाहर जाने
लगती हैं कि दरवाजे पर दूसरे टीचर मिल जाते हैं। इनकी
वेश-भूषा ठीक वैसी ही है जैसी कि पिछले पीरियड वाले अध्याप
की होती है।)

अध्यापक : यू इडियट! व्हेयर आर यू गोईंग ?

(एक बार तो सभी छात्रायें सहम जाती हैं)

संगीता : पार्डन सर वेट प्लीज। वी आर जस्ट कमिंग।
(अध्यापक अवाक् देखते रह जाते हैं। छात्रायें मुँह चिढ़ा कर
बाहर निकल जाती हैं।)

सुरेश : बिना किसी से पूछे, दरवाजे पर आकर बहाना बनाते हुए मानो
उसे कोई बुला रहा है। आया, अभी आया, क्या संजय, सुबोध,
सुनील और संजीव को भी लाऊँ? अच्छा ला रहा हूँ। (चारों
एकदम खड़े हो जाते हैं।)

पाँचों : सर वी आर जस्ट कमिंग (और स्वीकृति पाये बिना ही कक्षा से
बाहर निकल जाते हैं। अब कक्षा में चार विद्यार्थी शेष रहते हैं।)
(बाहर जाते हुए विद्यार्थी बात करते जाते हैं। यार जार्ज-

वाशिंगटन बैठा है अन्दर। नहीं यार, इब्राहिम लिंकन है. अरे यार घमचे हैं चमचे ! बन्धुओं को परीक्षा मे नहीं बैठने देंगे। देखते हैं कैसे नम्बर प्राप्त करेंगे। (बिचारे शेष छात्र भयातुर होकर उन छात्रों को संकेत मे कह देते हैं) अरे यारो ! नाराज मत होओ! तुम चले गये तो हम भी आ रहे हैं।)

(और वे छात्र एक चिट अध्यापक की टेबल पर रख कर पीछे वाली खिड़की से कूद कर एक-एक बाहर निकल जाते हैं।) अध्यापक जो कि बोर्ड पर ब्लॉग का डाईग्राम बनाने मे व्यस्त है, जब एकदम वे छात्रों की तरफ मुड़ते है तो उन्हें सिर्फ टेबिल, कुर्सियाँ ही दिखाई देती हैं। तथा उनकी नजर स्वयं की टेबल पर जाती है तो उस पर एक चिट पड़ी देखते है जिस पर लिखा होता है "सर ! 'नया जमाना' चल रहा है। मैं आपकी टिकट ले रहा हूँ। आप आने में जल्दी कीजिये।।' आज की दशा को देखकर अध्यापक अवाक् रह जाते हैं।)

CCO

समझौता

हेम प्रभा जोशी

* * *

पात्र परिचय

कैलाश	:	पति
पार्वती	:	पत्नी

और अन्य कुछ लोग

(समय दोपहर। मध्यमवर्गीय परिवार का साधारण सजा एक कमरा। एक ओर एक पलंग रखा है। दूसरी ओर एक मेज और दो कुर्सियां। एक कोने पर एक स्टूल रखा है, जिस पर एक टेबुल फैन चल रहा है। कैलाश कुर्सी पर बैठा कुछ लिख रहा है। उसके इर्द-गिर्द कुछ पत्र-पत्रिकायें व पन्ने बिखरे हुए हैं। तनिक विराम के पश्चात् नेपथ्य मे कोई दरवाजा थपथपाता है।)

कैलाश : (धीमे, परन्तु भुनभुनाते स्वर में) कौन कम्बख्त आ गया है, इस भरी दोपहरी में लिखने भी नहीं देते। (चिड़चिड़े तेज स्वर में) कौन है?

पार्वती : (झुंझलाते स्वर में) दरवाजा तो खोलो।

कैलाश : (आश्चर्य से धीमे स्वर मे) अरे यह तो श्रीमतीजी का ही स्वर लगता है। (झुंझलाकर) सिर दर्द। (तेज स्वर में) आता हूँ। (उठकर दरवाजे की ओर बढ़ता है। दरवाजा खोलता है।) (व्यंग्य से आओ)! आओ! मेरी शुभचिन्तक आओ।

(पार्वती का प्रवेश)

कैलाश : (झुंझलाकर) महीने भर में एक सेकण्ड सटरडे आता है; उस दिन भी मत लिखने देना।

पार्वती : (चिढ़ते हुए) ओफ ! इस घर में कदम रखना ही पाप है। सुबह से रात तक कोल्हू के बैल की तरह घर में काम करो। बच्चों को सम्भालो। स्कूल में विद्यार्थियों से माथा-पच्ची करो। इस बीच अपने नये-नये नाम सुनते रहो—सिरदर्द ! बुखार ! कम्बख्त !

कैलाश : अरे ये तो मेरे प्यार भरे शब्द हैं। मैं डार्लिंग वार्लिंग का दिखावा नहीं करता।

पार्वती : आ हा ! दिखावा नहीं करता""तो फिर तुम्हारी कहानियों व कविताओं के अधिकतर पात्र कैसे प्रेमसागर में डुबकी लगाकर प्यार भरे शब्द व वाक्य बोलते हैं ?

कैलाश : अरे वो तो कविताओं व कहानियों की बातें हैं। वहाँ सब-कुछ वही थोड़ा लिखा जाता है, जो मन और मस्तिष्क में होता है।

पार्वती : तभी तुम एक असफल लेखक हो।

कैलाश : कैसे ?

पार्वती : मन और मस्तिष्क से परे हट कर, यथार्थ से परे हट कर, जो लिखता है, वह असफल लेखक न होगा तो और क्या होगा ?

कैलाश : निकालो। निकालो अपने दिल का गुबार। मेरी कलम तो चलती रहेगी।

पार्वती : यदि ऐसा ही सोचते हो तो चलाओ कलम। खींचते रहो लकीरें। पर कान खोलकर सुन लो कि ऑफिस से आकर सीधे अपने कमरे में जाकर, हमारा पेट काट कर खरीदी पत्र-पत्रिकाओं को सरसरी नजर से देखकर और फिर दूसरों के वाक्यों व पैराग्राफों को चुरा कर एक नई रचना घड़ने से तुम लेखक नहीं बन सकते। कभी नहीं।

कैलाश : (गरजकर) तो तुम मुझे चोर समझती हो ?

पार्वती : हाँ, शब्दों के चोर। वाक्यों के चोर।

कैलाश : सचमुच मेरी तो तकदीर ही फूट गई, जिस दिन से तुम्हारा मुँह देखा।

पार्वती : मेरी तकदीर में कौन सी दरार नहीं पड़ी, जिस दिन से मैंने इस घर में कदम रक्खा है।""लोग तो हनीमून मनाने के लिए देश या विदेश के किसी रमणीय [illegible]

पार्वती : पहले जमाने के लोगों की बात छोड़ो।

कैलाश : क्यों ?

पार्वती : क्योंकि वे सादे युग के थे। हम फैशन युग के हैं। वे काम करके जीवन बिताने पर विश्वास करते थे। हम आलस्य में डूब कर जीवन बिताने पर विश्वास करते हैं। वे जीवन की सच्चाई पर विश्वास करते थे, हम जीवन के दिखावेपन पर विश्वास करते हैं।

कैलाश : अब मान गया कि वास्तव मे जब अक्ल बंट रही थी, तब तुम मेरे आगे नही तो मेरे पीछे अवश्य थी।

पार्वती : हां ! हां ! क्यों नहीं, कहां तो मेरी उपस्थिति ही नहीं मान रहे थे, अब अपने पीछे तो मानने लग गए। देखना वह समय भी दूर नहीं, जब तुम मुझे अपने से आगे मानने लगोगे। हर पुरुष, हर स्त्री को, अपने से आगे मानने लगेगा।

कैलाश : ख्वाबों की बातें मत करो। औरत कभी मर्द से आगे नहीं बढ़ सकती।

पार्वती : कैसे नहीं बढ़ सकती ? बढ़ी है और बढ़ेगी। अब लकीर के फकीरों के विचारों का जनाज़ा निकल चुका है।

कैलाश : (गरज कर) बड़ी बेशर्म हो तुम ! अपने देवता के विचारों का जनाज़ा ही निकलवा दिया तुमने तो।

पार्वती : बहुत जल्दी पहचाना तुमने अपने को। चलो पहचान तो लिया। रहा, देवता का प्रश्न। देवता है मन्दिरों में, कण-कण में। तुम हो जीवन-साथी। साथी का कर्त्तव्य है भटके साथी को समझाना।

कैलाश : और तुम मुझे समझा रही हो। क्यों ?

पार्वती : इसमें शक क्या है ?

कैलाश : मेरी मां ने कभी मेरे पिताजी को समझाने का साहस नही किया था। भला तुम मुझे कैसे समझा सकती हो ?

पार्वती : मालूम है उनके गलत विचार अब आउट ऑफ डेट हो गए हैं।

कैलाश : अच्छा ! वे आउट ऑफ डेट हो गए हैं तो उनके विचार भी आउट ऑफ डेट हो गए हैं।

पार्वती : वे क्या, तुम स्वयं पूरी तरह आउट ऑफ डेट न होकर, विचारों से आउट ऑफ डेट हो ही गए हो।

कैलाश : ओफ ! वास्तव में तुम सचमुच पत्थर हो। तुमसे तो टकराते ही माथा फूटता है।

पार्वती : तो टकराते क्यों हो ? मैंने प्रकट कर दिया है कि सड़े-गले विचारों की बदबू के बीच न जी कर आज के स्वस्थ विचारों की खुशबू के बीच जीओ।

कैलाश : अच्छा तो मेरे पढ़ाने-लिखाने का फल यह निकला कि तुम मुझे ही उपदेश देने लगी हो।

पार्वती : अपने को खुशकिस्मत समझो कि मैं तुम्हारी दृष्टि मे उपदेश देने योग्य तो हो गई हूँ।

कैलाश : वास्तव में घर रोटी ने तुम्हारे मस्तिष्क में फितूर पैदा कर दिये ! तुम तो अपने बाप के घर में रूखी रोटी खाती रहतीं तो अच्छा था।

पार्वती (चीख कर) हां, हां, मैं तो वहाँ भूखी ही रहती थी। यहाँ मौज कर रही हूँ। दिन भर गहनों से लदी बैठी रहती हूँ। मेवे-मिष्ठान्न खाती रहती हूँ।...... ......

कैलाश (धीरे से) भगवान के लिये अब चुप भी हो जाओ। पड़ोसी-पड़ोसी खिड़कियों में से झाँकने लग गये हैं।
(खिड़कियों पर खड़े लोग हँसने लगते हैं।)

पार्वती (धीरे से) झांकने दो।....तुम ड्रामा भी तो लिखते हो ?

कैलाश हां, हां, क्यों नहीं ?

पार्वती तो कह दो कि मैं अपने लिये ड्रामे का रिहर्सल कर रहा हूँ।
(खिड़कियों पर खड़े लोग और जोर से हँसते हैं)

[पर्दा गिरता है]

●●●

नाम	पता
प्रमोद चन्द जांगीड़,	रा. उ. मा. वि., बिसाऊ, झुंझुनूं;
इन्द्रसिंह सजल,	रा. मा. वि. गुरारा, वाया खण्डेला, सीकर,
कुमारी रमा जैन,	
गणपतलाल शर्मा,	रा. उ. मा. वि. नावा, नागौर;
गोवर्धनलाल पुरोहित,	रा. उ. मा. वि. मांडल, भीलवाड़ा;
चन्द्रमोहन 'हिमकर',	रा. मा. वि., हरसौर, नागौर;
त्रिलोक गोयल,	अग्रवाल उ. मा. वि., अजमेर;
दीनदयाल गोयल	केन्द्रीय विद्यालय, अलवर;
देव प्रकाश कौशिक	रा. मा. वि., कोठियां, भीलवाड़ा;
नरेन्द्र चतुर्वेदी,	ओम भवन, मंगलपुरा, झालावाड़;
बापूलाल चोरड़िया,	रा. उ. मा. वि., वल्लभ नगर, उदयपुर
मंगलदत्त व्यास,	रा. प्रा. वि., ब्रह्मपुरी बेदों का चौक, जोधपुर;
मोहन पुरोहित 'त्यागी',	रा. उ. प्रा. वि., उम्मेदपुरा, फलोदी, जोधपुर;
रमेश भारद्वाज,	रा. उ. मा. वि., श्रीनगर, अजमेर;
राधामोहन जोशी,	रा. उ. मा. वि., सोजत सिटी, पाली;
रामस्वरूप शर्मा,	रा. उ. मा. वि., पचेरीबड़ी
श्रीमती कमला भार्गव	रा. मा. वि., शाहजहाँपुरा, अलवर;
श्रीमती शीला गुप्ता,	श्रीराम विद्यालय, श्रीराम नगर, उद्योगपुरी, कोटा;
सत्यप्रभा गोस्वामी,	बीकानेर महिला मण्डल, मासानियों का चौक, बीकानेर;
सुरेन्द्र अंचल,	रा. उ. मा. वि., मोम, उदयपुर;
हेमप्रभा जोशी,	रा. प्रा. वि., जेल-वेल, बीकानेर।

कैलाश : ओफ ! वास्तव में तुम सचमुच पत्थर हो । तुमसे तो टकराने ही माथा फूटता है ।

पार्वती : तो टकराते क्यों हो ? मैंने प्रकट कर दिया है कि सड़े-गले विचारों की बदबू के बीच न जी कर आज के स्वस्थ विचारों की खुशबू के बीच जीओ ।

कैलाश : अच्छा तो मेरे पढ़ाने-लिखाने का फल यह निकला कि तुम मुझे ही उपदेश देने लगी हो ।

पार्वती : अपने को खुशकिस्मत समझो कि मैं तुम्हारी दृष्टि में उपदेश दें योग्य तो हो गई हूँ ।

कैलाश : वास्तव में तर रोटी ने तुम्हारे मस्तिष्क में फितूर पैदा कर दिये ! तुम तो अपने बाप के घर में रूखी रोटी खाती रहती तो अच्छा था ।

पार्वती : (चीख कर) हाँ, हाँ, मैं तो वहाँ भूखी ही रहती थी । यहाँ मौज कर रही हूँ । दिन भर गहनों में लदी बैठी रहती हूँ । मेवे-मिष्ठान्न खाती रहती हूँ ।...............

कैलाश : (धीरे से) भगवान के लिये अब चुप भी हो जाओ । पड़ोसी-पड़ोसी खिड़कियों में से झाँकने लग गये हैं ।
(खिड़कियों पर खड़े लोग हँसने लगते हैं ।)

पार्वती : (धीरे से) झाँकने दो ।....तुम ड्रामा भी तो लिखते हो ?

कैलाश : हाँ, हाँ, क्यों नहीं !

पार्वती : तो कह दो कि मैं अपने लिखे ड्रामे का रिहर्सल कर रहा हूँ ।
(खिड़कियों पर खड़े लोग और जोर से हँसते हैं)

प्रबोधक चन्द्र आंगोड़, — रा. उ. मा. वि., बिसाऊ, झुंझुनू;
कुन्दनसिंह सजल, — रा. मा. वि. गुरारा, वाया खण्डेला, सीकर;
कुमारी रमा जैन,
गणपतलाल शर्मा, — रा. उ. मा. वि. नावां, नागौर;
गोवर्धनलाल पुरोहित, — रा. उ. मा. वि. मांडल, भीलवाड़ा;
मनमोहन 'हिमकर', — रा. मा. वि., हरसौर, नागौर;
त्रिलोक गोयल, — अग्रवाल उ. मा. वि., अजमेर;
दीनदयाल गोयल — केन्द्रीय विद्यालय, अलवर;
देव प्रकाश कौशिक — रा. मा. वि., कोठियां, भीलवाड़ा;
नरेन्द्र चतुर्वेदी, — ओम भवन, मंगलपुरा, झालावाड़;
माधुलाल चोरडिया, — रा. उ. मा. वि., बल्लभ नगर, उदयपुर
मण्डलदत्त व्यास, — रा. प्रा. वि., ब्रह्मपुरी बेदों का चौक, जोधपुर;
मोहन पुरोहित 'त्यागी', — रा. उ. प्रा. वि., उम्मेदपुरा, फलोदी, जोधपुर;
रमेश भारद्वाज, — रा. उ. मा. वि., श्रीनगर, अजमेर;
राधामोहन जोशी, — रा. उ. मा. वि., सोजत सिटी, पाली;
रामस्वरूप शर्मा, — रा. उ. मा. वि., पचेरीबड़ी
श्रीमती कमला भार्गव — रा. मा. वि., शाहजहाँपुरा, अलवर;
श्रीमती शीला गुप्ता, — श्रीराम विद्यालय, श्रीराम नगर, उद्योगपुरी, कोटा;
सत्यप्रभा गोस्वामी, — बीकानेर महिला मण्डल, आसानियों का चौक, बीकानेर;
सुरेन्द्र अंचल, — रा. उ. मा. वि., भीम, उदयपुर;
हेमप्रभा जोशी, — रा. प्रा. वि., जेल-वेल, बीकानेर।